राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिलभारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ९३

राठौड वंश री विगत

एवं

राठौडां री वंशावली

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६८ ई०

वि० सं० २०२४ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८९

प्रधान सम्पादक का वक्तव्य

प्रस्तुत संग्रह में राठौड़-वंश से संबंधित 'राठौड़ वंश री विगत' के साथ 'राठौड़ां री वंशावली' का कुछ प्रारंभिक अंश दिया जा रहा है। श्री मुनि जिनविजयजी ने प्रथम को एक प्रति के आधार पर ही सन् १९५२ में मुद्रित करा दिया था और दूसरी को, तीन प्रतियों से मिलान करके, सन् १९५९ में मुद्रित करवाना प्रारंभ कर दिया था, परन्तु अभी तक इनका प्रकाशन नहीं हो पाया था। अच्छा तो यही होता कि श्री मुनिजी ही इसकी भूमिका लिखते, परन्तु बहुत प्रयत्न करने पर भी, उनकी अत्यधिक व्यस्तता के कारण, मुझे उनका बहुमूल्य समय इस कार्य के लिए नहीं मिल सका। साथ ही ग्रंथ के प्रकाशन कार्य को मैं और अधिक विलंबित नहीं करना चाहता था। इसलिए मैंने स्वयं ही इस ग्रंथ की भूमिका लिखना प्रारंभ किया।

भूमिका लिखते हुए, सर्वप्रथम मेरी दृष्टि राठौरों की उत्पत्ति पर गई। बचपन से ही सुन रखा था कि राठौरों के आदिपुरुष को उसके पिता की 'राठ' फाड़ कर निकाला गया था और इसीलिए उसका तथा उसके वंश का नाम राठौर पड़ा। यही कथा 'राठौड़ वंश री विगत' तथा 'राठौड़ां री वंशावली' में प्राप्त हुई और इसी का उल्लेख 'राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान' में संगृहीत अन्य वंशावलियों में है। मैंने सदा ही इस कथा को सर्वथा कपोलकल्पित समझा है, परन्तु इस ग्रंथ की भूमिका लिखते हुए जो छानबीन करनी पड़ी उसके परिणाम-स्वरूप कुछ ऐसे तथ्य सामने आये जिनसे इस कथा का आधार ऋग्वेदीय तो सिद्ध हुआ ही, परन्तु साथ ही इसका संबंध एक ऐसी राष्ट्र-परंपरा से जुड़ा प्रतीत हुआ जो ऋग्वेद से लेकर, किसी न किसी रूप में, अब तक वर्तमान कही जा सकती है। इसके अनुसार, संभवतः प्रारंभ में राठौर किसी जाति-विशेष का नाम न था, अपितु जो भी अपने को उक्त राष्ट्र-परंपरा से संबंधित मानते थे वे राठौर या राठोड़ कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे।

राजस्थानीय इतिहास की दृष्टि से ये दोनों ग्रंथ महत्त्व के हैं। मारवाड़ में राठौरों का प्रारंभ सीहाजी की तीर्थयात्रा से प्रारंभ होता है और प्रथम पुस्तक में सं० १७८२ तक का वृत्तान्त है एवं दूसरी पुस्तक में लगभग सौ वर्ष आगे का है। इस दृष्टि से दोनों का तुलनात्मक अध्ययन महत्त्वपूर्ण होता, परन्तु

उसके लिए दूसरे भाग के प्रकाशन की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, क्योंकि प्रस्तुत भाग में, यद्यपि प्रथम पुस्तक पूरी हो चुकी है, परन्तु दूसरी पुस्तक में अभी कन्नौज से सीहाजी के मारवाड़ आने का वृत्तान्त प्रारंभ ही हो पाया है। ऐसी स्थिति में दूसरे भाग की भूमिका में ही उक्त तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का निश्चय करके, प्रस्तुत भाग को प्रकाशित किया जा रहा है।

अन्त में श्रद्धेय श्री मुनि जिनविजयजी को मैं हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ। उन्हीं के परिश्रम का फल इस भाग में प्रस्तुत किया जा रहा है। पुस्तक के विलंबित प्रकाशन के लिए मुझे हार्दिक दुःख है।

वसन्त पञ्चमी, सं० २०२४ — फतहसिंह
जोधपुर

भूमिका

राठौर वंश की उत्पत्ति

राठौरों की नस्ल, वंश, गोत्र, धर्म आदि के विषय में भिन्न-भिन्न मत हैं। कर्नल टाड[1] ने, राठौरों का गौतम गोत्र देखकर उन्हें बौद्ध मतावलम्बी सिथियन वंश का माना है, परन्तु स्वर्गीय गौरीशंकर[2] हीराचन्द ओझा, राठौरों को शुद्ध आर्य मानते हुए कहते हैं कि "उनका मूल राज्य दक्षिण में था जहाँ से गुजरात, काठियावाड़, राजपूताना, मालवा, मध्यप्रदेश, गया, बदायूं आदि में उनके स्वतन्त्र या परतन्त्र राज्य स्थापित हुए।" राजस्थान प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान में संगृहीत १७८०० तथा ३४५४७ संख्या की वंशावलियों में भी उनकी उत्पत्ति दक्षिण के कोंकण में हुई मानी गई है और वहाँ से गढ़ कल्याणी, कर्णाट तथा कन्नौज में उनका जाना बतलाया गया है। राठोड़ां री वंशावली में भी राठौरों की कर्णाट तथा कनवज में राजधानियां[3] बतलायी गई हैं परन्तु उनकी उत्पत्ति[4] गढ़ कल्याणी से हुई मानी गई है। राठौड़ वंशरी विगत[5] के अनुसार राठौरों की उत्पत्ति चन्द्रकला नगरी के राजा से हुई थी। पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने[6] राष्ट्रकूटों को ही राठौर माना है और उन्हें उत्तर भारत से दक्षिण को जाने वाला बतलाया है, परन्तु श्री सी. वी. वैद्य[7] उनको दक्षिणी आर्य मानते हैं और इसी मत को डा० अलतेकर[8] ने स्वीकार किया है। बर्नेल[9] के अनुसार दक्षिण के रेड्डी और राष्ट्रकूट अथवा राठौर एक ही वंश के है और वे अनार्य (द्राविड) हैं। उत्तर भारत में ही सभी राठौर गौतम गोत्र के नहीं हैं; उदाहरण के लिए उत्तर-प्रदेश के अधिकांश राठौर कश्यप-गोत्रीय हैं और राजस्थान में भी वे टाड के अनुसार कश्यप ऋषि की दैत्यवंशीय पत्नी से

---

१. एनलस एन्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान (१९५७)।
२. राजपूताने का इतिहास, जिल्द ४ भाग १ (१९३८ पृ० ८४)
३. पृ० १६।
४. पृ० १२।
५. पृ० १।
६. राष्ट्रकूटों (राठोड़ों का इतिहास) (१९३४), पृ० ६, ७।
७. हिस्ट्री ऑफ मिडिवल इंडिया, भाग २, पृ० ३२३।
८. दी राष्ट्रकूटाज् एन्ड देयर टाइम्स (१९३४), पृ० १ से २९ तक।
९. साउथ इंडियन पेलियोग्राफी पृ० १०; इंपीरियल गजेटीयर १८; पृ० १९१।

उत्पन्न[१] माने गये हैं। दक्षिण भारत के एक शिलालेख[२] में भी 'रट्ट' वंश को दैत्यों का ही माना गया है। इसके विपरीत, दक्षिण के राष्ट्रकूटों को उनके शिलालेखों में चंद्रवंशी अथवा यदुवंशी माना गया है; अतः पं० ओझा के अनुसार "इन प्रमाणों के बल पर तो यही मानना पड़ेगा कि राठौड़ चंद्रवंशी हैं, परन्तु राजपूताना के वर्तमान राठौड़ अपने को सूर्यवंशी ही मानते हैं।"[३] परन्तु प्रभासपाटन से उपलब्ध १३८५ ई० के शिलालेख[४] के अनुसार 'राष्ट्रोड' वंश को सूर्य-चंद्र से पृथक् एक तीसरा ही वंश माना गया है। दक्षिण भारत में प्राप्त कई संस्कृत शिलालेखों[५] में राष्ट्र अथवा राष्ट्रकूटवंश का जन्मदाता 'रट्ट' यदुवंशी' था।

राष्ट्र और राठौर

राठौरों के संबंध में व्यक्त हुए इन सभी मतों में जो एक बात सर्वत्र स्वीकृत हुई है वह है उनका राठ, रट्ट, रट्ठ, रट्टि, रस्टि, लट्ट, लाट आदि शब्दों से संबंध। ये सभी शब्द निस्सदेह संस्कृत राष्ट्र के रूपांतर मात्र हैं और राठौरों के वंश को कभी-कभी स्पष्टतः राष्ट्रवंश[६] भी कहा जाता है। राठोडांरी वंशावली के अनुसार एक सूर्यवंशी राजा की 'राठ' फाड़कर जो शिशु सांमरादेवी ने निकाला उसी का नाम राष्टेसर हुआ और उसी से राठौरवंश की उत्पत्ति हुई:—

"तरै सांमरांदेवी राजारी देही कनै आई। राठो फाडि नै टाबर काढ़ि नै उरो लीनो।.........तिण वालकरो नांम राष्टेस्वर दीनो।......राष्टेस्वर राजारो केड राठोड कहोजसी। राठो फाडिनैकाषर्च तरै राठोड नांम दीधो, तिणथी राठोड कहांणा।......राष्टेस्वर राजाथी राठोड वंसरी थापना हुई।"

इसी ग्रंथ के पद्य भाग में (जो संभवतः गद्य भाग से प्राचीन है) इसी वंश

---

१. ऊ. उ. पृ० ७४।

२. रट्टनृपदितिजकुलसंघट्टद्विनघपट्ट (एपिग्राफिका इं० जि० ५, पृ. १६)

३. जोधपुर राज्य का इतिहास, पृ० ८३।

४. वंशौ प्रसिद्धौ हि यथा रवीन्द्वोः राष्ट्रोडवंशस्तु तथा तृतीयः।
(नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ४, पृ० ३४७)

५. मुक्तामणीनां गण इव यदुवंशो दुग्धसिन्धूयमाने......
तद्व राजा जगति सात्यकिवर्गभाज......रट्ट। तमनु च
सुतराटनाम्ना भुवि विदितोऽजनि राष्ट्रकूटवंशः।
(एपिग्राफिका इंडिका जि० ५, १९२-९३)
तु०क० वही जि० १२, पृ० २६४; जार्नल आव दि बॉंबे ब्रांच ऑव एशियाटिक सोसायटी, जि० १८, पृ० २५७।

६. श्रीमत् राष्ट्रवंशे नृपवरयशोराज्ञसिद्धार्थाभिधानः (राठोडांरी वंशावली, पृ० १७)

को 'राष्ट्र' वंश कहा गया है। अतः इसमें कोई संदेह नहीं कि संस्कृत राष्ट्र शब्द ही उक्त उद्धरण में 'राठ' बनकर राठौर-वंश के उद्भव का कारण बना।

एक जैन-परम्परा के अनुसार, राष्ट्र शब्द का प्राकृत रूप 'रहट' भी होता था जिसका अर्थ होता था 'इंद्र की रीढ की हड्डी और उसी के सम्बन्ध से युवनाश्वपुत्र[1] राठौर हुआ। यही युवनाश्व उच्चारण तथा लिपि के भेद से मारवाड़ी में जवनसत हो गया और राठौड़वंश री विगत के अनुसार इसी जवनसत की 'राठ' फाड़कर जो शिशु निकला वही प्रथम राठौर था और उसका नाम था मान्धाता[2]। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान में संगृहीत अन्य कई वंशावलियों[3] में इस मांधाता का जनक जुवनास निस्संदेह उसी युवनाश्व का रूपान्तर है। राठोड़ां री वंशावली[4] में यह नाम अतिविकृत होकर जलमेसर अथवा झलमलेसर मिलता है, परन्तु अधिकांश प्रतियों में जैन-परम्परा द्वारा स्वीकृत युवनाश्व नाम ही मिलता है।

यौवनाश्व मांधाता

उक्त युवनाश्व के पुत्र मांधाता की तुलना ऋग्वेद के यौवनाश्व मांधाता[5] से भी की जा सकती है। युवन् और अश्व शब्द ऋग्वेद में इन्द्र के लिए प्रायः प्रयुक्त होते हैं और राठौर मांधाता के जन्म तथा पालन से भी इंद्र का सम्बन्ध माना जाता है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद के एक इंद्र-सूक्त (४, १८, २) में कोई गर्भस्थित शिशु उक्त राठौर मांधाता की भांति ही 'तिरछे पार्श्व' (तिरश्चता पार्श्वात्) भाग से ही पैदा होना चाहता है और ऋ० वे० १०, १३४,७ में युवनाश्वपुत्र मांधाता अपिकक्षों (मेरुदण्ड के विभिन्न पर्वों) के पक्षभागों द्वारा सारा 'अभिसमारंभ' (चतुर्दिक् प्रसार कार्य) करने वाला बताया गया है। संभवतः 'अपिकक्ष' शब्द के लिये राष्ट्र शब्द भी प्रयुक्त होता था, इसीलिये ऊपर निर्दिष्ट जैनपरंपरा में राष्ट्र शब्द 'रहट' होकर 'इंद्र की रीढ़ की हड्डी' का बोधक हो गया और उसी से 'राठ' शब्द की परम्परा राठौर वंशावलियों में आ गई तथा राठौरों के वंश को संस्कृत में 'राष्ट्र' तथा प्राकृतादि में 'राठ, रट्ट

---

१. डा. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, 'जोधपुर राज्य का इतिहास' पृ० ८३।
२. राठोड़ वंश री विगत पृ० १।
३. ग्रंथांक सं० २०१३०, १७८००, ३४५४७, इत्यादि।
४. पृ० १२-१४।
५. ऋ० १०, १३४ का ऋषि।

आदि कहने लगे । राठौर-वंश से संबंधित 'द्विराज' प्रणाली की स्मृति भी सम्भवतः इन्द्र के 'द्विताराष्ट्र' (ऋ० ४, ४२, १) पर आधारित है ।

भागवत में पुराण[1] के नवम स्कंध में भी एक राजा युवनाश्व से मांधाता के जन्म की कथा आती है । युवनाश्व निसंतान अपनी सो पत्नियों के सहित दुःखी था; वह वन में चला गया जहाँ ऋषियों ने 'ऐन्द्री इष्टि' की । यज्ञगृह में प्रवेश करके, तृषित राजा ने यज्ञकलश का 'मंत्रजल' पी लिया । इसके फलस्वरूप युवनाश्व ने गर्भधारण किया और कालान्तर में उसकी दक्षिण कुक्षि फाड़ कर जो बच्चा निकाला गया वही चक्रवर्ती मांधाता हुआ । अब समस्या थी कि बच्चे को दूध कौन पिलाये । रुदन करते हुए मांधाता से इंद्र ने कहा, 'बेटा मांधाता रो मत' और उसके मुंह में अपनी उँगली देदी ।[2] इसकी तुलना राठोडवंश री विगत के निम्नलिखित वर्णन से भली भांति हो सकता है :—

"रखेसरां जलरो कुंभ भरने रखेसर इन्द्रनो आवान जपने, मंत्र भणने कयो, इण कुम्भ माहेलो जल राणीनु सवारे पावसां, तिणसु पुत्र होसी । पछे रात पड़ी जलरो कुम्भ चोक मांहे मेल्यो छे ।......राजा ने अर्ध रात्रे त्रस लागी, सो राजा उठ ने देखे तो सारा सूता छे । राजा ने जगावणरो पण सो राजा ने उठ ने जल कुम्भ माहे मंत्र राख्यो छे सो जल राजा उठ ने भोले पीवो ने सोय रयो । परभात हुवो तरे रखेसरां कयो जलरो कुम्भ ल्यावो ज्यु रांणी ने जल पावां । तरे जलरो कुंभ लाया, सो मांहे जल नहीं । तरे रखेसर कयो कुंभ मांहेलो जल किणे पीयो । तरे राजा कयो मो नु राते तिस लागी सो सारा सूता छे नु माने पाणी पीणा में आइयो । तरे रिखेसरां कयो राजा थारे आसा रहसी ने पुत्र होसी । सो राजा थे अठे ही रहो । तरे मास १० पुरण हुआ । तरे राजारो त्रांसिसु राठो फाड़ ने बालक काढीयो ने पाटो बांध्यो । रखेसरां जाणीयो इण बालक ने चुंगावे कुण । तरे रखेसरां, ओ बालक इन्द्ररा मंत्रसु हुवो छे, सो इंद्ररो अंस छे , इंद्र ने सुंपो । तरे रखेसरां इंद्ररो आह्वान कीधो, तरे इंद्र आय ऊभो रयो । तरे रिखेसर कयो, इंद्रजी यो बालक थांरा मंत्र सुं हुवो छे, सो थांरो अंस छे, सो मोटो करो । तरे बालक ने इंद्र ले गयो ने बालकरे मुंडा

---

१. ९, ६, २५-३२. ।

२. तु०क० "ओ बालक इन्द्ररा मंत्रसु हुवो छे, सो इंद्ररो अंस छे, इंद्र ने सुंपो ।...... सो इंद्ररा अंगूठा मांहे अमी थो, तिण सु इन्द्र बालकनु मोटो कियो ।"
(राठोडां री वंशावली पृ० १७)

मांहे इंद्र आपरो अंगूठो दीयो। सो इंद्ररा अंगूठा मांहे अमी थो, तिणसुं इंद्र बालकनुं मोटो कियो।"

वैदिक, पौराणिक तथा परवर्ती परम्परा

अतः वैदिक, पौराणिक तथा परवर्ती परम्परा में समान रूप से मांधाता युवनाश्व की कुक्षि अथवा राठ फाड़ कर जन्मता है और इस जन्म से इंद्र संबन्धित है। जिन ऋषियों की कृपा से यह होता है, उनका नाम पौराणिक परम्परा में नहीं मिलता, क्योंकि वहां यही उल्लेख है कि ऋषियों ने 'ऐन्द्री' यज्ञ किया, परन्तु परम्परा में ऋषि का नाम गौतम है और ऋग्वेद में जहां (४, १८, २) पार्श्व भाग से बच्चा निकलने का उल्लेख है उस सूक्त का ऋषि भी वामदेव गौतम है। परन्तु वैदिक परम्परा में स्वयं इंद्र को युवन् और अश्व कहा जाता है और एक व्याख्या के अनुसार माता के पार्श्वभाग से निकलने वाला स्वयं ऋषि अथवा इंद्र ही है।

वैदिक आख्यान का अर्थ

इस प्रकार वैदिक आख्यान एक पहेली बन जाता है जिसको समझने के लिए इस आख्यान में प्रयुक्त प्रतीकवाद का संक्षिप्त निरूपण आवश्यक है। वेद में इन्द्र आत्मा के एक स्वरूप-विशेष का नाम है। वह अपने 'पर' रूप में सूक्ष्म और अश्वित होने से 'अश्व' तथा 'अवर' रूप में स्थूल तथा श्वित होने से श्वन् कहलाता है; प्रथम रूप में वह अविकारी होने से 'पलित' (वृद्ध) है, तो द्वितीय रूप में उसे परिवर्तनशील तथा विकारी होने से 'युवन्' कहा जाता है। मनोमय से लेकर अन्नमय तक युवा (अवर) इंद्र की नानारूप शक्ति-वृष्टि होती है, अतः इस रूप में वह 'वृषन्' भी कहा जाता है। विज्ञानमयकोश में इस युवन्, वृषन् अथवा श्वन् कहे जाने वाले अवर इंद्र की गर्भावस्था है; अतः इसे युवनाश्व कहा जाता है, क्योंकि यह अश्व (पर) होते हुए भी 'युवन्' (अवर) को बीजरूप में छिपाये हुये है। अतः इस युवनाश्व को ही युवन् (अवर) इंद्र का गर्भधारणकर्ता कहा जाता है; वस्तुतः (अवर) इंद्र का गर्भ ही चक्षु, श्रोत्रादि सभी इंद्रियदेवों का गर्भ है और यही गर्भ है आत्मा की उस शक्ति का जिसे 'वामदेव गौतम' कहा गया है। गर्भस्थ इंद्र (अवर), वामदेव गौतम तथा सभी देवों का जन्म मनोमय कोश में हो जाता है और यहाँ जन्म लेते ही इंद्र सब देवों का राजा बन जाता है, परंतु प्राणमय कोश तथा अन्नमय कोश का 'द्विविध राज्य' करने के लिए इंद्र के एक 'अंश' को पुनः जन्म लेना पड़ता है और इस

रूप में वह मान्धाता (मनस्तत्त्व को धारण करने वाला), अथवा 'मन्तुम' कहलाता है। इस द्विविध राज्य में उसका 'अभिसमारंभ रीढ़' (अपिकक्ष) के दोनों पार्श्ववर्ती तन्तुजालों के माध्यम से होता है जिसका सुन्दर चित्रण ऋ० १०, १३४ में निम्नलिखित रूप में मिलता है :—

अव स्वेदा इवाभितो विष्वक् पतन्तु दिद्यवः ।
दूर्वाया इव तन्तवो व्यस्मदेतु दुर्मतिः ॥
दीर्घं ह्यंकुशं यथा शक्ति विभर्षि मन्तुमः ।
पूर्वेण मघवन् पदाऽजो वयां यथा यमः ॥
नकिदेवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि ।
पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभिसंरभामहे ॥

"देदीप्यमान (दिद्यवः) स्वेदबिन्दुओं की भाँति और दूब के तंतुओं के समान वे (ज्ञानतंतु) चतुर्दिक् फैलें, जिससे हमसे दुर्मति दूर हो। मनोमय (मन्तुम) आत्मा दीर्घ अंकुश के समान शक्ति का भरण (क्षेपण) करता है और अज यम (विज्ञानमय का पूर्व्य आत्मा) अपने पूर्व पद से उस शक्ति की शाखाओं के समान उसे संगृहीत कर लेता है। न हम हिंसन करते हैं न विमोहन; हम मेरुदंड (अपिकक्ष) के पर्वों के पार्श्व-भागों (पक्षेभिः) द्वारा अभिसमारंभ करते हैं।"

इससे स्पष्ट है कि प्राणमय तथा अन्नमय का यह द्विविध राष्ट्र ही है जिसे इंद्र 'मम द्विताराष्ट्र क्षत्रियस्य' (४, ५२) कहता है; मानवशरीर का मेरुदण्ड ही इस राष्ट्र का 'वंश' (बाँस का स्तम्भ) है तथा दूसरे अर्थ में इसी से 'मांधाता' (इंद्र का अंशावतार) जन्म लेकर उक्त राष्ट्र का चक्रवर्ती सम्राट् बनता है। इंद्र का यह अंश है और इंद्र ही इसे अपना अमृत पिलाकर बड़ा करता है जिससे वह युवनाश्व (इंद्र) को चुनौती देने वाले 'महियासुर'[1] (महिषासुर) नामक राष्ट्रशत्रु का नाश करता है। आध्यात्मिक दृष्टि से वेद में यही वृत्रवध द्वारा देव-राष्ट्र की रक्षा है।

राष्ट्र-रक्षा के इस आध्यात्मिक कार्यकलाप की मुख्यजननी आत्मारूपी इंद्र की शक्ति है जो वह 'माया' है जिसके द्वारा इंद्र अनेकरूप (पुरुरूप) होकर विचरता है।[2] इसी के प्रादुर्भाव से आत्मा अश्व से युवनाश्व, वृषा, श्वा आदि बनता है और इसी से वह मांधाता अथवा 'मन्तुम' होकर उक्त द्विता-राष्ट्र का आधिपत्य करता है। यही इंद्र की माता है जिसके गर्भ में श्वित (प्रवृद्ध)

---

१. राठोडांरी वंशावली, पृ० १६

२. रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय ।
इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शतादश ॥ ऋ० ६.४७.१८

होने पर वह मातरिश्वा (विज्ञानमय कोशस्थ) कहलाता है, और उससे पूर्व यही यमी है जिससे संयुक्त होकर वह स्वयं उसका जुड़वां भाई यम (सारे नानात्व की उपरामावस्था) हो जाता है। यही शक्ति अपने क्रिया-पक्ष में अग्नि-तत्त्व को, भावना-पक्ष में सोम-तत्त्व को और दोनों के संयुक्त रूप में सूर्य-तत्त्व को समाविष्ट किए हुए है; अतः इन तीनों तत्त्वों के संदर्भ में आत्मा-रूपी इन्द्र ही क्रमशः अग्नि, सोम तथा सूर्य कहा जाता है। यह शक्ति ही सत्य और ऋत के संदर्भ में जब इन्द्र (आत्मा) से संयुक्त मानी जाती है, तो वह (इन्द्र) क्रमशः मित्र तथा वरुण होता है—प्रथम रूप में वह प्रत्येक केन्द्र पर 'मित' (मा+क्त) होता है और दूसरे रूप में वह प्रत्येक केन्द्र से आवरण (वृधातस) करने वाला होता है; एक में वह ज्ञान एवं क्रिया (सूर्य और अग्नि) के संयोग से प्रकाशमय 'दिन' देता है, तो दूसरे में वह भावना एवं क्रिया (सोम और अग्नि) के संयोग से शांति एवं विश्राम की 'रात्रि' देता है। इस प्रकार आत्मा की शक्ति स्वयं नानारूप ग्रहण करके अपने शक्तिमान्, आत्मारूपी 'सत्' को अनेक देवों में रूपांतरित करती है:—

इंद्रमित्रं वरुणमग्निमहुरथो दिव्यः सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा बदंत्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः।
(ऋ० १, १६४.)

मानव-देहरूपी अयोध्या-नामक देवपुरी[१] में जो आठ चक्र माने गए हैं उनमें इंद्र (आत्मा) अपनी शक्ति के अग्नि-तत्त्व से युक्त होकर 'वासयिता' होने से अष्ट वसुओं का रूप धारण करता है। यही आठ वसु वस्तुतः शरीर रूपी राष्ट्र की सभी शक्तियों को अपने में केन्द्रीभूत किए हुए है और इन सब की 'संगमनी'[२] राष्ट्री आत्मा की वह महाशक्ति अदिति है जिससे जन्म लेने के कारण वैदिक देव आदित्य कहे जाते हैं। यही राष्ट्री राठोर-वंश की परम्परा में राठेसरी अथवा राष्ट्रेश्वरी देवी बन जाती हैं।

इस प्रसंग में, यह भी याद रखना समीचीन होगा कि वेदों में इंद्र का राष्ट्र से निकटतम सम्बन्ध हैं; राष्ट्र को धारण करते हुए ध्रुव रहने में इन्द्र से उपमा (ऋ० १०, १७३, २) दी जाती है, वह राष्ट्र को ध्रुव रख सकता है (ऋ० १०, १७१, १; १०, १७३, ५) और अभीवर्त हवि के द्वारा वह राष्ट्र को चारों ओर से सुरक्षित (१०, १७४, १) करता है। ऋग्वेद में इंद्र राष्ट्र का स्वामी

---

१. अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या (अ० वे०)
२. अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम् (ऋ० वे० १०, १२५, १)

है और अपने राष्ट्र के आधिपत्य में वरुण को साक्षी बना कर (१०, १२४, ५) क्षत्रिय के द्विता-राष्ट्र (द्विता राष्ट्रं क्षत्रियस्य ४, ४२, १) को चरितार्थ करता है। इंद्र महान् प्रजाओं (ऋ० १०, १३४, १; १०, १७१, १) का महान् सम्राट् है जिसे 'भद्रा जनित्री देवी' उत्पन्न करती है। यह देवी वही वाक्देवी है जिसे अन्यत्र (ऋ० ८, १००, १०; १०, १२५, ३) राष्ट्री कहा गया है और जो सभी को एकसूत्र में बाँधने वाली है।

अतः यह निष्कर्ष निकालना अनुचित न होगा कि जिस 'राष्ट्र' शब्द से ऋग्वेद में इंद्र सम्बन्ध रखता है उसी से किसी प्रकार राठोड़-वंश भी जुड़ा हुआ माना जाता था, और इंद्र के पार्श्व-भाग से जन्म लेने की बात कुछ विकृत रूप में राठोड़ की उत्पति-कथा में आकर मिल गई। वेद में राष्ट्र-शब्द की व्युत्पत्ति 'रा' धातु से हुई है जिसका अर्थ है 'देना'। अतः वैदिक राष्ट्र एक ऐसा समाज था जिसमें प्रत्येक अपनी-अपनी 'राति' (देन) देता था और जो राति नहीं देता था वह 'अराति' (दस्यु, चोर, आदि) मृत्युदंड का अधिकारी था। इस प्रकार के सामाजिक दर्शन को स्वीकार करने के कारण ही सम्भवतः प्राचीन भारत में राष्ट्र-नाम से विभिन्न प्रान्त माने गए। राष्ट्र-शब्द ही रट्ट अथवा राठ हो गया और आज भी राजस्थान के मारवाड़ प्रदेश में 'राठ' नामक एक क्षेत्र है जहां गायें 'राठी' नस्ल की कही जाती हैं। ग्रियर्सन के लिंग्विस्टिक सर्वे में पंजाब और राजस्थान के ऐसे पांच क्षेत्र हैं जिनकी बोलियों का नाम 'राठी'[1] है और वे परस्पर भिन्न हैं। उत्तर प्रदेश में कई प्राचीन गांवों के नाम अब भी 'राठ' हैं। महाभारत[2] में उल्लिखित 'आरट्ट' शब्द भी सम्भवतः किसी समय में वैदिक 'राष्ट्रों' का समूह रहा होगा, क्योंकि वहां स्पष्ट लिखा है कि आरट्ट-नाम में कई देशों (आरट्टनामतो देशाः) का समावेश होता था और वे सिन्धु से लेकर इरावती तक फैले हुए थे।

इसी प्रकार के राष्ट्रों का अस्तित्व समस्त देश में व्यापक रूप से पाया जाता है। राजस्थान के बीकानेर और आबू प्रदेश की राठी, अलवर जिले की राठ या राठी मेवाती, पंचमहल (गुजरात) की राठरी, रींवांकंथा की राठवी, बड़वानी (मध्य प्रदेश) की राठवी भीलाली, कोलांबा (बम्बई) तथा फिरोजपुर (पंजाब) की राठौरी, गढ़वाल और अलमोड़ा प्रदेश में प्रयुक्त राठी तथा राठवाली एवं हम्मीरपुर, जालौन में प्रयुक्त राठौरा, राठी या राठौरी आदि

---

१. ग्रियर्सन, जिल्द १ खण्ड १ पृ० ४८८
२. कर्ण पर्व, अ० ३७, ४३-५१

बोलियां[1] अब भी संकेत दे रही हैं कि किसी समय देश में राष्ट्र-नामक प्रशासनिक इकाई व्यापक रूप से फैली हुई थी। विभिन्न प्रदेशों की उक्त बोलियां नाम का साम्य रखते हुए भी आकार-प्रकार में परस्पर भिन्न हैं। इससे स्पष्ट है कि ये बोलियाँ किसी एक ही जाति अथवा नस्ल से सम्बन्धित होने के कारण इस नाम से नहीं पुकारी गईं, अपितु इसके नामकरण का आधार 'राष्ट्र' नामक प्रशासनिक इकाई थी। जैसा कि ऊपर कह चुके हैं, राष्ट्र-शब्द का ही रूपांतर लाट है; अतः लाट या लाटी अपभ्रंश; बरार की लाडी, सिंध की लाड़ी और बरार की लाड़ी बोली भी 'राष्ट्र'-प्रथा की सूचना[2] दे रही है। कोई आश्चर्य नहीं कि चीन के हैंगिअङ के उत्तर-पश्चिम में लगभग ५००० व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त लाति बोली[3] भी किसी प्रवासी भारतीय परिवार की भाषा होने से उक्त राष्ट्र-प्रथा से ही अपना नाम ग्रहण किये हो। तामिलनाड की सौराष्ट्री, काठियावाड़ की सोरठी बोली, महाराष्ट्री प्राकृत, महाराष्ट्री अपभ्रंश तथा सबसे अधिक आधुनिक मराठी का प्रसार भी उक्त राष्ट्र-प्रथा की घोषणा[4] कर रहा है। कुछ विद्वानों ने मराठी को पाली से विकसित हुआ माना है और कुछ लोग इसको मराठी क्षेत्र तक सीमित न मानकर पूरे राष्ट्र की राष्ट्रभाषा मानते है। अस्तु, यह तो निश्चित ही है कि महाराष्ट्री-नामकरण के पीछे उक्त 'राष्ट्र' शब्द ही है जो वैदिककाल से बराबर चला आ रहा है।

दक्षिण भारत के इतिहास से पता चलता है कि 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग उधर भी दूर-दूर तक और अतिप्राचीन काल से ही होता रहा है। आन्ध्र और तामिल प्रदेश में प्रचलित 'रेड्डी' शब्द जिन जातियों के लिए आज प्रयुक्त होता है वे परस्पर भिन्न हैं और संभवतः उनके नामकरण का आधार भी 'राष्ट्र' शब्द ही हो। इस आधार पर बर्नेल की भाँति 'रेड्डी' जाति को राठौरों की जाति का मानने की आवश्यकता नहीं रह जाती। गिरनार, धौली, शहबाजगढ़ी और मानसेरा में प्राप्त अशोक के अभिलेखों से जिन रिस्टिकों, रस्टिकों अथवा रट्ठकों का पता चलता है वे इसी प्रकार के 'राष्ट्र' से संबंधित होंगे जो भाषा-भेद से रिस्ट, तथा रट्ठ में रूपांतरित होगया[5] होगा। खारवेल के खंडगिरि

१. डा० भोलानाथ तिवारी, भाषा-विज्ञान-कोष, पृ० ५४५-५४६
२. वही; पृ० ५७५
३. वही; पृ० ५७४
४. वहीं, पृ० ५०५
५. तु० क० ओझा, 'जोधपुर राज्य का इतिहास' (१९३८), पृ० ८७; रेऊ, राष्ट्रकूटों (राठोड़ों) का इतिहास (१९३४), पृ० १-२; अल्तेकर, राष्ट्रकूटस एण्ड देयर टाइम्स, (१९३४) पृ० १९-२०; पिशेल, ग्रम्माटिक देर प्राकृत-स्प्राके, सेक्सन ३०४।

शिलालेख में जिन रठिकों का उल्लेख है वे भी इसी प्रकार के राष्ट्र अथवा 'रठ' से संबंधित[1] रहे होंगे और यही बात कर्णाटक प्रदेश में तृतीय शताब्दी (ईस्वी) के प्राप्त अभिलेख में उल्लिखित रठिकों के विषय में कहा जा सकती[2] है। डॉ० अल्तेकर[3] के मतानुसार, तृतीय शताब्दी से पूर्व भी कर्णाटक में राठियों का उल्लेख मिलता है; इससे स्पष्ट है कि उस समय वहाँ भी राष्ट्रों का अस्तित्व था। क० ऐ० ऐ० नीलकंठ शास्त्री[4] के मतानुसार तामिल प्रदेश में भी राष्ट्र नामक एक प्रशासनिक इकाई होती थी जो विषय नामक इकाई से बड़ी होती थी।

डॉ० का० प्र० जायसवाल ने राष्ट्र को जानपद के अर्थ में ग्रहण किया है (हिं० वो० पृ० २३६; २४५; २६०); उनका मत है कि ६०० ई० पू० से लेकर ६०० ई० तक जनपद, राष्ट्र और देश के पर्य्यायवाची शब्द थे। वस्तुतः राष्ट्र शब्द का एक ऐसा प्रयोग महाभारत में ही उपलब्ध हो जाता है। शान्ति-पर्व[5] (८५, ११-१२) में कहा गया है कि अष्ट मंत्रियों से जो मंत्र स्वीकृत हो जाय उसी को राजा राष्ट्र में भेजे और राष्ट्रीय को दिखलावे। इस राष्ट्र की तुलना ऋग्वेद के उस 'वृहद्राष्ट्र'[6] से की जा सकती है जिसके इन्द्र और वरुण दो 'महावसू' क्रमशः राष्ट्र के सम्राट् और स्वराट् कहे गये हैं। संभवतः महाभारतीय राष्ट्र के उक्त अष्ट-मंत्रियों को ही वैदिक साहित्य में अष्ट वसुओं की संज्ञा दी गई हो और सम्राट् तथा स्वराट् को अखिलराष्ट्रीय अधिकारी होने के कारण महावसू कहा जाता हो तथा वृहद्राष्ट्र के उन आठ खंडों के प्रतिनिधि अधिकारी होने के कारण उक्त आठ मंत्रियों में से प्रत्येक को केवल वसु की संज्ञा दी गई हो। वसुओं के अतिरिक्त, बहुत सम्भव है कि आदित्यों और मरुतों के नाम पर भी गणतंत्र हों। सूर्य, सोम एवं अग्नि के नाम पर भी विविध राज्यतंत्रों की स्थापना भी किसी समय थी जिसके फलस्वरूप ही इन देवों के आधार पर राजवंशों की परम्परा चली। उक्त सभी प्रकार के

---

१. अल्तेकर, राष्ट्रकूट्स एण्ड देयर टाइम्स, पृ० १९।
२. तु० क० वही पृ० ३०।
३. वही, पृ० ३२।
४. हिस्ट्री आव साउथ इंडिया (द्वि० सं०) पृ० १५९।
५. अष्टानां मन्त्रिणां मध्ये मन्त्रं राजोपधारयेत्।
ततः संप्रेपयेद्राष्ट्रे राष्ट्रीयाय च दर्शयेत्॥
६. ऋ० ७, ८४, २।

राज्यतंत्रों को समाविष्ट करने वाला जो महाराज्य था उसी का राजा सार्वभौम 'एकराट्' कहलाता था जो ऐन्द्रपद का अधिकारी माना जाता था।

उत्तरी भारत के आरट्ट (आराष्ट्र) की भाँति संभवतः दक्षिण में राष्ट्रों के समूह का बोध कभी 'महाराष्ट्र' अथवा राष्ट्रकूट शब्द से होता था और उनसे संबंधित प्रजाओं को संस्कृत में इन्हीं नामों से, तथा प्राकृत भाषाओं में क्रमशः महाराठी तथा रट्टे[1] या लट्टे[2] नाम से व्यक्त किया जाता था। गुजरात के लाट-क्षेत्र का नाम भी निस्संदेह उक्त लट्ट का रूपांतर है और सुराष्ट्र अथवा सौराष्ट्र नाम के समान इस बात का प्रमाण है कि भारतवर्ष के उस भाग में भी उक्त 'राष्ट्र' प्रथा का प्रचलन था। अतः कोई आश्चर्य नहीं कि अनेक राष्ट्रकूट और महाराष्ट्र राजाओं अथवा उनके वंशजों के उल्लेख अतिप्राचीन काल से ही आधुनिक गुजरात, महाराष्ट्र तथा कर्णाटक आदि क्षेत्रों में उपलब्ध हों और उनके संदर्भ में राठी, महाराठी, राठिक, राष्ट्रीय, राष्ट्रपति, राष्ट्रकूट आदि शब्द मिलें, परंतु, जैसा कि डा० अल्तेकर[3] ने कहा है, इन शब्दों का केवल राजनैतिक अथवा प्रशासनिक अभिप्राय ही था और इनसे किसी प्रकार की जाति अथवा नस्ल का बोध नहीं होता था। आंध्र[4] में पाये जाने वाले राष्ट्रकूटों के उल्लेख से वहाँ भी 'राष्ट्र' प्रथा का अस्तित्व स्वीकार किया जा सकता है, और वहाँ के आधुनिक रेड्डियों को भी उसी से संबंधित माना जा सकता है।

उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर यह स्वाभाविक निष्कर्ष निकलता है कि महाभारतकाल और अशोक के समय से लेकर मध्ययुग तक प्रदेशों, अधिकारियों, राजाओं, राजवंशों अथवा वर्गों के नाम से जो राष्ट्र-शब्द (अथवा उसका रूपांतर) जुड़ा हुआ मिलता है वह उसी राष्ट्र-प्रथा का ध्वंसावशेष है जो ऋग्वेद में इन्द्र के साथ संबंधित है। इसकी संपुष्टि इस बात से भी होती है कि उत्तरी भारत के शक्रतीर्थ के समान दक्षिण-भारत में भी इंद्रतीर्थ वर्तमान नागार्जुन-बाँध के आसपास था और इसी प्रकार इंद्र से संबंधित होने के कारण उस प्रदेश का नाम ऐन्द्र था जो बाद में आंध्र हो गया। दक्षिण के राष्ट्रकूटों और राजस्थान के राठौड़ों की वंशावलियों को देखने से पता चलता है कि वहाँ के राजाओं के नामों में इन्द्र अथवा मान्धाता, जो ऊपर वैदिक परम्परा के बताये गये हैं,

---

१. एपिग्राफिका इंडिका जि० ५, पृ० १६।
२. अल्तेकर, राष्ट्रकूट्स एण्ड देयर टाइम्स, पृ० ३२।
३. वही पृ० २४-२५।
४. वही, पृ० २५।

अत्यधिक लोकप्रिय रहे हैं। इसके साथ ही यह भी प्रमाणित होता है कि राठौड़ों, राष्ट्रकूटों, मरहठों अथवा रेड्डियों आदि की उत्पत्ति किसी व्यक्ति-विशेष की राठ, (रीढ) से न होकर वस्तुतः उस राष्ट्र-शब्द से हुई जो एक ओर तो राष्ट्र-नामक राजनीतिक इकाई का बोधक था और दूसरी ओर मानव-सामान्य की रीढ का द्योतक होने से पिण्डाण्ड के अंतर्गत उस आध्यात्मिक राष्ट्र का प्रतीक होगया; जिसका सम्राट् वैदिक साहित्य में आत्मा रूपी इंद्र माना गया। वैदिक परम्परा के अनुसार प्रजापति के तेज को ग्रहण करके ही इंद्र देवों का राजा बना और इस प्रकार इंद्र स्वयं प्रजापति या परमेश्वर का ही प्रतिनिधि माना गया। इसी अनुकरण पर प्राचीन भारत में पार्थिव राजा भी परमात्मा के प्रतिनिधि माने गये और इसी मान्यता का अद्यतन रूप राजस्थान के राजवंशों की परम्परा में अब तक सुरक्षित है जिसके अनुसार प्रत्येक वंश का राजा एकलिंग, व्रजनाथजी, गोविन्दजी आदि के प्रतिनिधि के स्वरूप में अपने को मानता है।

ऋग्वेद में प्रजापति के तेज से तेजस्वान् होकर इंद्र अनेक देवरूपी दीपों को दीप्ति प्रदान करता हुआ प्रतीत होता है। इसी के अनुकरण-स्वरूप अभी हाल तक दीपदान की वह प्रतीकात्मक प्रथा राजस्थान में सुरक्षित रही है जिसके अनुसार दीपावली के समय राज्य के सभी अधिकारी एकत्र होकर राजा की उस मशाल से अपनी मशाल जलाते थे जिसको राजा स्वयं अपने इष्टदेव की आरती से प्रज्वलित करता था। यह प्रथा राजस्थान के वर्तमान राजवंशों तक ही सीमित नहीं, अपितु उत्तरप्रदेश के कुछ पुराने उन राजपूत परिवारों में भी प्रचलित है जहां दीवाली के दिन सब से पहले 'बड़े घर' का मुखिया यज्ञ करके अपना दीपक जलाता है और उस दीपक से अन्य घरों के लोग अपने दीपक जला कर ले जाते हैं तथा फिर अपने घर की दीपमालिका सजाते हैं।

इस प्रसंग में यह भी उल्लेखनीय है कि ऋग्वेद में इंद्र को जन्म देने वाली अथवा सभी वसुओं, आदित्यों, मरुतों आदि को एकसूत्र में बांधकर नियंत्रित करने वाली भद्रादेवी, राष्ट्री, अदिति, आदि नाम से जिस महाशक्ति का उल्लेख मिलता है वही भारतवर्ष के आधुनिक राजवंशों (जो मुख्यतः राजस्थान में ही रह गये हैं) की कुलदेवियों के रूप में अब भी पाई जाती हैं। ऋग्वेद की राष्ट्री तो राठौड़-वंश की उत्पत्ति-कथाओं से संबंधित राष्ट्रश्येना, राष्ट्रेश्वरी अथवा लालना आदि नामों में देखी जा सकती है। दुर्गा, चामुण्डा आदि पौराणिक नामों के साथ-साथ करणीदेवी, दाढदेवी, शिलादेवी, अम्बादेवी आदि नाम भी प्रचलित हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि निगम, आगम तथा पुराण में

देवी वस्तुतः वह महाशक्ति है जिसके अंतर्गत अग्नि तथा सोम-नामक दो तत्त्व संयुक्त होकर सूर्य-नामक तृतीय तत्त्व को जन्म देते हैं; अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इस महाशक्ति को अपनी कुलदेवी मानने वाले राष्ट्रों में से विभिन्न राष्ट्र अपने को क्रमशः अग्नि, सोम और सूर्य के पुत्र कहने लगे और साथ ही यह तीनों प्रकार के लोग अपने को परमात्मा-नामक राजा के पुत्र मानने के कारण स्वयं को राजपुत्र भी कहने लगे। वस्तुतः यह राजपुत्र कोई नया शब्द नहीं है। क्योंकि संभवतः इन्हीं राजपुत्रों की आदिमाता होने के कारण ऋग्वेद की अदिति-नामक महाशक्ति को राजपुत्रा कहा गया है।

इस प्रकार यह देखने से स्पष्ट हो जाता है कि राठौड़ों ही की नहीं, अपितु सभी राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में जो दन्तकथाएं चली आ रही हैं उनके पीछे एक दार्शनिक प्रतीकवाद है जो आधुनिक जातिप्रथा से ऊपर उठ कर भारतीय संस्कृति की उस ऊंचाई तक पहुँचता है जो वागम्भृणी सूक्त के शब्दों में 'राष्ट्र की समष्टिगत शक्ति है' और जिसके पुनरुद्धार से भारत-राष्ट्र को पुनः संगठित किया जा सकता है। इसका अभिप्राय यह है कि सूर्य, चन्द्र आदि पर आधारित वंशों की कल्पना वस्तुतः किसी मानववंश की द्योतक नहीं है। इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि इन वंशों की सभी जातियां, सभी स्थानों पर एक गोत्र की नहीं है। उदाहरण के लिए राठौड़ों को ही ले सकते हैं। राठौड़ लोग गौतम और कश्यप-गोत्र के तो प्रायः मिलते हैं, परन्तु कहीं-कहीं भारद्वाज-गोत्र के भी सुने गए हैं। इन राठौड़ों का सम्बन्ध यदि दक्षिण के रेड्डियों अथवा उत्तरप्रदेश या राजस्थान् के राठियों से भी जोड़ा जाय, तब तो इन तीन गोत्रों से ही नहीं, अपितु राजपूत कही जाने वाली जातियों से भी बाहर जाना पड़ेगा।

अस्तु, जातिप्रथा के उत्पत्ति और विकास के विषय में मीमांसा करने के लिए यहां उपयुक्त स्थान नहीं है, परन्तु इतना कह देना अनुचित न होगा कि अब तक इस देश की जातिप्रथा के विषय में जो चर्चा हुई है उस पर इसी प्रकार से गहराई के साथ पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। इसके बिना न तो जातिप्रथा को ही समझा जा सकता है और न इसको मिटाने में ही सफलता मिल सकती है। जातिप्रथा पर लिखने वाले यह मान कर चले हैं कि भारत-राष्ट्र कभी एक नहीं था और न कभी इसमें राष्ट्रीयता थी और न संभवतः इस महाद्वीपकल्प देश में राष्ट्रीयता सम्भव ही है। इस भ्रामक धारणा को लेकर चलने से ही जातिप्रथा को मिटाने के लिए जो प्रयत्न हुए वे स्वयं नई जातियों को बना गए। अतः प्रथम तो राष्ट्रीयता-विषयक भ्रान्ति को निवारण करने के

लिए, हमें यह याद रखना है कि "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" की घोषणा वाल्मीकि-रामायण में ही हो चुकी थी और ऋग्वेद से लेकर पुराणों तक निरन्तर इस देश के सभी निवासी (चाहे वह किसी नस्ल, वर्ण, धर्म, भाषा के हों) भारतीय सन्तति कहे जाते थे। आशा है, इस प्रकार की वंशावलियों का गम्भीर अध्ययन हमें इस तथ्य तक पहुँचाने में सहायक होगा।

माघ शुक्ला एकादशी सं० २०२४. —फतहसिंह

जोधपुर

राठौड वंशरी विगत

प्रथम राठोड कहांणा तिणरी विगत । एक चन्द्रकला नगरी तिणरो राजा जवनसत । सो बडो धरमात्मा पिण राजारे पुत्र नहीं । राजा बूढ़ो हुवो । तरे राजा जवनसत राज छोड़ने तपोवन तपस्या करण वास्ते हालण लागो । तरे सुराजलोकां अरज कीनी, मैं अठे किण कने रहुं । पुत्र होय तो मांरी पालपोस करे, मैं रहने कासु करा । मैं राजरे साथे चालसां । तरे राजा राजलोक समेत तपस्यानु हालिया । तरे मारगमें हरद्वार आइ । तठे गौतम रखेसररो चेलो तपस्या करे छे । तिण राजा जवनसत पुछीयो, राजा थे राजलोक समेत कठे जावो छो । महाराज, तपोवन तपस्या करण जावां छां, ने राजलोकनु पुत्र होय तो घरे राखीजे, पुत्र बिना राजलोक किण कने रहे । तरे रखेसर बोलीयो, राजा थे तपोवन मती जावो । जो थे गरथ खरचसो तो पुत्ररो इलाज अठे ही करस्यां । तरे राजा कयो माहरे तो आहीज दरकार छे । पछे रखेसर राजा कनें हरद्वारजी मांहे जितरा रिखेसर सरब बताया । मनसा भोजन दीया । रखेसरां जलरो कुम्भ १ भरने रखेसर इन्द्ररो आवान जपने, मन्त्र भणने, कयो, इण कुम्भ माहेलो जल राणीनु सवारे पावसां, तिणसु पुत्र होसी । पछे रात पडी जलरो कुम्भ चोक मांहे मेल्यो छे ने रिखेसर ने राजारा खवास पासवान सगला चाकर सुता छे । राजाने अर्धरात्रे त्रस लागी सो राजा उठ ने देखे तो सारा सूता छे । राजाने जगावणरो पण छे सो राजा उठ ने जलकुंभ माहे मंत्र राख्यो छे सो जल राजा उठ ने भोले पीधो नें सोय रयो । परभात हुवो तरे रखेसरां कयो जलरो कुम्भ ल्यावो ज्यु राणीने जल पावां । तरे जलरो कुंभ लाया, सो मांहे जल नहीं । तरे रखेसर कयो कुंभ मांहेलो जल किणे पीयो । तरे राजा कयो मोनु राते तिस लागी सो सारा सूता छे ने मोनु पाणी पीणमें आइयो । तरे रिखेसरां कयो राजा थारे आसा रहसी ने पुत्र होसी । सो राजा थे अठे हीज रहो । तरे मास १० पुरण हुवा । तरे राजारो वांसेसु राठो फाड़ने बालक काढीयो ने पाटो बांध्यो । रखेसरां जाणीयो इण बालकने चुंगावे कुण । तरे रखेसरां

कयो, ओ बालक इंद्ररा मंत्रसु हुवो छे, सो इंद्ररो अंस छे, इंद्रने सुंपो। तरे रिखेसरां इंद्ररो आहवान कीधो तरे इंद्र आय ऊभो रयो। तरे रिखेसरां कयो, इंद्रजी यो बालक थांरा मंत्रसु हुवो छे, सो थांरो अंस छे, सो मोटो करो। तरे बालकने इंद्र ले गयो ने बालकरे मुंडा मांहे इंद्र आपरो अंगूठो दीयो। सो इंद्ररा अंगूठा मांहे अमी थो, तिणसु इंद्र बालकनु मोटो कीयो। राजारे मोरारो घाव साजो हुवो ने बालक मोटो हुवो। तरे इंद्र कनेसु लाय ने राजा जवनसतने सुंप्यो। राजा कुंवररो नाम मानधाता दीयो। राजा जवनसत पगे लाग ने घरे आया। राठो फाड ने बेटो हुवो तिणसु राठोड़ कहांणा। पछे राजा जवनसतरी देह छूटी तरे राजा मानधाता टीके बेठो, मेहपाठ नगर बसायो सो मेडतो कहीजे छे। मानधाता बडो राजा हुवो चकवे हुवो। तिणरा अदीठ चक्र बुहा छः खंडरो भुगता हुवो। तिणरो बेटो मचकुंद हुवो सो बडो राजा हुवो। तिण राजा मचकुंद देवतांरी भीड कराई। सरग मांहे जाय ने देवता उवारीयो ने राजा बाजी राखी। इंद्र बगेरे देवता सारांनु राजा मचकुंद भाई कीयो। राजा धरमातमा हुवो। इण तरे राठोड कहाणा।

हिमे राठोडांरी तेरे साख कहाणी तिणरी विगत।

अभेपुरा, राव अखेराज अभेपुर बसायो ,तिणसु अखेराजरा अभेपुरा कहांणा १। जेवंत राठोड,बागुलरा जेवंतरा केड़रा हुवा, तिके जेवंत कहाणा छे २। वागुला राठोड़, वागुलरा केड़रा वागुल कहीजे छे ३। करहा राठोड, करहेडो सेर बसायो तिणरा केड़रा करहा कहीजे छे ४। अहराव राठोड, अहोर सहर बसायो तिणरा केडरा अहराव कहांणा ५। जलखेडा, राजा जलवंत जलखेड नगर बसायो तिणरा केडरा जलखेडा कहीजे ६। कमधज नांवे तिको तेरे साखांरो तिलक तिणरा केडरा कमधज कहांणा ७। चंदेल, राजा चंदेल सहर बसायो तिणरा चंदेल कहीजे छे ८। सूर, राजा सूरपुर सहेर बसायो तिणरा केडरा तिके सूर कहीजे छे ९। धीर राठोड, धीरपुर सेहर बसायो तिके धीर कहीजे छे १०। कपालीया, राजा कपालदेव कपालपुर सहर बसायो तिणरा केड़रा कपालीया कहीजे छे ११। खेरादा, राजा खेर खेराबाद बसायो तिणरा केडरा खेरादा कहीजे छे १२। पारकरा, राजा अजेराय अजेपुर सहर बसायो तिणरा केडरा पारकरा कहीजे छे १३। तेरे साख इण तरे राठोड़ांरी कहाणी छे।

कवित—

अभेपुरा जेवंत सूर बागल नरेसर ।
अहरराव राठोड़ करत करहा दानेसुर ।
जलखेडीया कमधज सध चंदेल सोहु·········बारीया ।
बरे सुमत वोहत सूरमा अ·····लीखत पारक वीर कपालीया ।
खेरादा जेवंत घर धुंधमार धर संचरे ।
अे तेरे साख राठोरहर················ ॥ १ ॥

मारवाड़ मांहे राठोड़ आया तिणरी विगत ।

पीढी२५३ सीहाजी पेहली हुइ छे नें तठा पछे राठोड़ सीहाजी, कनोजरा वासी था सो श्रीद्वारकाजीरी जात बोली थी । सो जात्रारे बासते कनोजसु हालिया सो मारवाड़ देस मांहे गांव पाली कने उतरीया था । गांव खोड़ मांहे राजा महेश गेहलोत राज करे । पाली मांहे पलीबाल बिरामण बसे छे । सो किताराइक दिन पेलां राजा महेस पलीबालांरा सांसण खोस लीना था । सो बिरामणां मांहे जसोधर नामे बिरामण बड़ेरो थो, उण आलोच कीयो, आपां कोई राजवी सोधो । जिण समे एक धाभाई आय खबर दीनी, एक राठोड़ कनोजसु आयो छे । तद पुछीयो जसोधर कहे कठे ऊतरीयो छे । तरे जसोधर सारां भाइयांनि भेला कर ने कयो, पछेइ पुकारु जावो तो ओ तो सरदार छे नें ओ मोसर छे । तरे सारांही बीरामण भेला होय ने घोड़ा पेस ले नें सीहाजी कने गया ने आसीरबाद दीयो, घोड़ो पेस कियो । सीहेंजी बीरांमणानु आदर दीयो ने कयो, बिरामणां थे सारा भेला होय ने किण काम आया छो ? अब थारी हकीगत कहो । तरे जसोधर बांमण बोलियो, माहाराज मांरा सांसण राजा महेसदास गोहल खोस लीया छे तिणसु मे बोहत परेसान छां ने राज मोटा खत्री छो, गऊ ब्रांमणरा प्रतपालक छो, सो राज कने पुकारु आया छां । तरे सीहोजी दिलासा कीवी ने कयो, थांहरी भीड़ करसां । तरे सीहोजी पाली आय ऊतरीयो । पाली मांहे गुरांजी श्रीपुजजी श्रीजिणदत्तसूरजी रहता था । खरतर गछरा बड़ा तपसी था । लोकांमें बड़ी मानता थी । श्रीदेवीजीरो इष्ट थो । तिणां कनें सीहोजी पधारिया । गुरुजीने गुरां कर थापिया ने कयो, इण देस मांहे मांहरी जेत होसी तो मांहरापुत्र पोता मांहरी साखरा

होसी सो राजने गुरु कर मांनसी ने व्याहरो लाग, चवरीरो लागभाग, दीवो, जोड़ो १ खीरोदकरो, जाये परणीये गुरुजीने देसी । पाटवी होसी तिको देसी । पाटवी सांसण देसी । द्रव्यपूजा सिष्यादिकानु मांहरा पुत्र पोता राजनु धणी देसी । वचन कर, सीहोजी गुरांने संतोखीया । तरे गुरां श्रीदेवीजीरी आराधना कीवी, इन्द्रजीरो अजीत खडग मंगाय सीहोजीने बंधायो । गुरुजी कयो, थांहरे जेत होसी । तठा पछे खरतर गछरा बंसाबलीया ठेहरीया । पछे सीहोजी खोड ऊपरे असवार हुवा, गोहलांनु मारीया ने खोड लीनी ने बिरामण जसोधरनु ने आपरा काम-दार रजपूतनु जायगा सुंपने सीहोजी द्वारकाजीनु चढिया ने वीरमपुर, खोड, पाली, ऊपरे असवार राजथान कर ने हालीया । ने पाटण मांहे मूलराव सोलंखी आपरे थानक आय ने कुलदेवीरे धरणो बेठो थो ने माताजीसु अरज करे छे, लाखो फुलाणी मारो बाप मारीयो छे तिणरो वेर काढु । थे ऊपर हुकम करो । तरे श्रीदेवीजी मूलराजने परतख दरसण दीयो ने कयो, राठोड सीहो कनोजसु आवे छे सो श्रीद्वारकाजी जाय छे, उणरे हाथ लाखां फुलाणीरी मोत छे । तु उणने जाय मिल । इसी वात कुलदेवी मूलराय ने कही तरे मूलराय धरणांसु उठीयो । ने सीहोजी खोडरो काम करने चढीयो सो कित-रेक दिन पाटण जाय ऊतरीयो । तरे मूलरायने खबर हुईजे सीहोजी आया छे । सो मूलराय सीहाजीसु मिलणने तयार होय ने असवार हुवा ने तलाब ऊपर डेरा था, उठे आण मिलिया ने बात कीनी । तरे मूलराव नीसासो नांखीयो । तरे सीहोजी पूछीयो, मूलरावजी नीसासो क्यू नांखीयो? तरे मूलरावजी सारी हकीगत मांड ने कही, ने कयो माहरो वाप लाखा फुलांणी मारीयो छे ने हुं वेर ले सकुं नहीं । मारी राज मदत करो तो हुं वेर लेउं । तरे सीहोजी कयो, थारे लाखाजीसु कांसु सगाई छे । तरे मूलराव कहे मारो भाई राखावच छे उणरो लाखोजी मांमो छे । ने हुं चावडारो भाणेज छुं । मारी माय समांणी तरे लाखोजी आपरी वहन मारा वापने परणाइ थी । सो कितरायक दिन पछे लाखोजी सिन्धसु आय ने मारा वापने मारीयो, आपरी वहन सती कीनी ने मारो भाई राखावच लाखाजीरो भाणेज थो सो उणनु साथे लीनो, ने मोनु टीका दीधो, ने चावड़ांनु पाटण मांहसु काढ ने मोनु राज दीधो छे । सो अबे सारा रजपूत लोक मोने हसे छे ने कहे तोवते वेर लीयो जाय नहीं । अबे मारी राज मदत करसो तो हुं वेर लेसु । तरे सीहोजी कयो, थांरा भाई राखावचां खबर देवो, कहो आंपा बापरो वेर लेवां । तरे मूलराव

कयो, भलां, पिण राखायच लाखाजी कने छे। उठे नांनो मोटो हुवो है।उवांरो भाएेज छे। सो जाणू ं लाखांजीनु ं मारणरो मनसोवो कदे न दे। तरे सीहोजी कयो, बापरो बेटो सदावी होय छे ने मांमांरा भाएेज कदे होय नहीं। मैं श्रीद्वारकाजी जाय आवां छां। पाछा फिरता थांरी भीर करसां, थे तयारी राखजो। तरे मूलराव कयो, माहरी आप मदत करसो तो मारी बहेन राजने परणावसु ं। तरे सीहोजी कयो, लाखांने मारसां तो थारी बेहन परणीजणरो कीसो इचरज छे। लाखांने मारीयां दीससी, ओ मारो कोल छे। इण तरे कहने सीहोजी तो द्वारकाजीनु ं चालीया ने मूलराव आपरा भाइयांनु ं खबर दीनी, आपां लखांजीनु ं मारां, आपणा बापरो वेर लेवां, आपां सुपुत कहावां। तरे राखायच कहे, भली वात छे। लाखाजीनु भदरेसर गढ चिडा घाट कोट छडबडी असवारीसु ं लावु ं छु ं। थे सामांन साथे सावधान रहजो। आ बात राखायच ठेहराय गयो। पछे कितराइक दिनने राखायच हालीयो ने चडवडी असवारी लाखांजीनु ं भदरेसर गढ लायो। उण समे सीहोजी पिण जात्रा कर पाटण आय ऊतरीया था ने भदरेसरसु ं राखायच एक दिन, रात पोर एक गयां, लाखोजी दरबार बहारु मांहे गया। तरे राखायच घोडांरी पायगां मांहे जाय ने घोडा २ मोटा, एक तो नेंजा नांमे ने बीजो विजे नांमे थो, तिण माहेसु ं विजे नांमे घोडो लेने चढीयो।सो पाटए आय सारी हकीगत कही ने पछे चढीयो, सो घडी ४ पाछली रात थकां भदरेसर आय घोडांरी पायगा बांध राखायच ठिकाऐ जाय सुतो। ने लाखोजी पोह फाटीरा ऊठीयो। दांतण कर घोडांरी पायगा जाय घोडा पर हाथ फेरीयो। तरे घोडा विजे नामे थो उणरे गिरद राते लागी थी। तरे लखोजी कयो घोडो कुण खोलीयो। तरे सांहणी कयो राखायच फेरण ले गयो थो। तरे लाखोजी डेरा मांहसु ं आय ने राखायचने जगायो नें कयो, तोनु ं बाप याद आयो। तरे राखायच कयो, मांमाजीं दुरस्त फुरमावो छो। बातां होवे छै जितरे पाटण सारी तयारी थी ने राखायच खबर दे आयो थो सो महाराजसीहोजी सोलंखी मूलराव आया। लाखाजी दोला फिरीया। लाखा-जीसु ं रोलो कियो। तरे लाखाजीनु ं मार लिया। राखायच पिए सांमरे कांम ने बापरे वेर दोनां कांनी लडीयो ने काम आयो, उण वेढ मांहे इतरा काम आया तिणरो दुहो—

सोलंखी खट मध, सो पडे मांमा पचास।
चवीया गुणातालीस, चवड रहीया लाखा पास॥१॥

कवित—

तेरेसे एकम बरस,मास काती निरन्तर ।
पिता वेर छल मंड, सांम राखायच समहर ।
पडे सांमा से पांच, कमध सोलंखी सो खंत ।
चावडां गुणतालीस, रहे रिणवंध रिणवट ।
पतरे धमल मंगल लहे, सेल सिहां नामो सिरे ।
भदरेसर चिडीपाटको छपय चांदणेहाल राव लाखो मरे ॥१॥

लाखोजी तात जादम जाऊंचा भाटीयां सो मारीया । तरे मीहोजीनु बडो ब्रोल फाबीयो । भदरेसर गढरो लोक पाछो पाटण आयो । सो मूलराव सोढां बीचे ने सीम थी उणरे आपरे मांमा चावडो चीणराज नांम थो । उणरी बेटी सीहाजीनु परणाई । पछे पाटण परणीज ने सीहोजी हालीया सो भीनमाल कने आय डेरो कीयो । जठे चावडीनु सुपनो आयो, जे मारो पेट फाटो छे, आंतरा झाड झाड होय गई छे । सो उणहीज वेला सूपनारी हकीगत चावडी सीहोजीने कही । तरे सीहेजी सुण ने चावखां ३ चावडीने बाया । तिण फिकरसु चावडीने नीद नाई । रात पाछली थोडी सी थी, सो परभात हुवो । पछे सुपनारो विचार सीहोजी चावडीने कयो, थांरा पेटरा राठोड मारवाड मांहे इतरा होसी सो झाड झाड राठोड होसी । इण तरे कयो ने चावडीनु सीहेजी राजी कीधी । पछे उठासु कुच कीयो सो वीरमपुर आया । उणरो नाम महेवो छे । पछे मास ९ नवमे चावडीजीरे बेटो हुवो । नाम आस्थानजी दीयो, १ । तठा पछे सोनगजी हुवा, २ । पछे अजजी हुवा, ३ । पछे जांझणजी हुवा, ४ । भाणेज ४ चावडांरा हुवा ।

महेवे खेड़ था । तिणनु मार ने सारी धरती लीनी। राव सीहाजी रे बेटा ४ तिणरी विगत । ३ साखा छे, एक साख नहीं ।

१—आसथानजी पाटवी हुवा । मारवाड माहे महेवानु वीरमपुर कहीजे छे । उठासु ऊठीया सो पड़िहारां कनांसु मंडोवर लीनो········ ।

२—सोनगजी, सो इडर गढरा बीरामण पुकारु आया ने कयो मारी बेटीं भींल मांगे छे, जिणरी सहाय राज करो । सो उणांरी सहाय सोनगजी चढ़िया । सो उणांरी सहाय करी ।

३–अजजी, सो श्रीद्वारकाजी जात्रा जाता था सो उठे काबांनु मार संखोद्धाररो राज लीनो, सो बाढेल राठोड कहीजे छे ।
४–जांभणजी, तिणरी साख नहीं । अे ४ हुवा ।

१–आसथांनजी पाटवी हुआ तिणरे बेटा ८ हुआ तिणरी वीगत । १-धुहडजी पाटवी हुवा, तिके मंडोवर राज करे । ने पडियार थिरपाल बारोठीयो थो, उण गांव १ मंडोवररो मारीयो तिणरी वाहर धुहडजी चढीया सो उणरो गांव मारीयो, लूट कीधी । तरे रावजीरा चाकररे लूट मांहे करंडीयो हाथ लागो । सो करंडियो उठाय लीयो ने थिरपाल पडियाररा डूमने पकड ने करंडीयो उणरे माथे दीनो । कोस ५ आय ने खाणों–दाणों कीयो । पछे चढीयो सो उठासु करंडीयो उठायो । सो करंडीयो उठे नहीं । तितरे रावजीने खबर हुई । सो रावजी आया ने करंडीयारो ढकणो खोलियो । सो मांहे पडिहारांरी कुलदेवी श्रीनागणेचीजी मांहसु निसरिया ने एक बिरामण ऊभो थो सो तिणरे डील श्रीनागणेची माताजी आय ने धुहडजीने कयो, तु मानु कुलदेवी कर पूज, थांरी जेत होसी । तरे रावजी कयो, मारे कुलदेवी पंखणी छे । तरे नागणेचीजी कयो, मांहरे मूरत ऊपर मांड । तरे अरेध कर नागणेचीजीनु ल्यायो । उठे नगांणों गांव बसायो । नागणेचीजीरो देहरो करायो । मंडोवर कनारे छे । तिण समे देवडो डुंब बोलीयो, रावजी हुं पिण श्रीमाताजीरी लार आयो छुं । रावलो मोडणे लार छुं । रावजी कयो, तु माहरो डुम छे । श्रीदेवीजी डील आया था तिको सिवड प्रोहीत छे । उणने प्रोहीत थापीयो । श्रीनागणेची कुलदेवी, सिवड प्रोहित, देवडो डुम थापीया । बेटा ७, तिणरी वीगत–१ जोपसावजी, २ बहुपसावजी, ३ चांचणजी, ४ उहड, ५ खेमपसावजी, ६ जेतमालजी, ७ धांधलजी । तिणरे बेटा २ बुडो १, पाबु २ । तिके देवल चारणीरी गायां जीवडे खीची लीवी । तरे गांव खीचुंद कने बेढ हुई । तठे बुडोजी पाबुजी काम आया । पछे झरडे बेर लीनो ।

धुहडजीरे बेटा १० हुवा । तिणरा नाम–राव रायपालजी पाटवी १, मालोजी २, अतचकताजी ३, धाकबंगालजी ४, पीथडजी ५, वेगडजी ६, बीहडजी ७, कीरतपालजी ८, परबतजी ९, कटारमलजी १० ।

राव रायपालजीरे बेटा ११ हुवा- महेरेलणजी पाटवी १, कानडरायजी २,

कल्याणजी ३, लागो ४, खेमो ५, घांघजी ६, महेसजी ७, राणोजी ८, मोहण जी ९, तिणरा मोहणोत हुवा; सदो १०, सुजोजी ११, तिणरा केडरा सुडा।

राव मेहरेलणजीरो बेटो १ राव कानडजी। सु पाटवी हुवो, राज कीयां।

राव कनीरायजीरे बेटो १ राव जालणसी, पाटवी हुवो।

राय जालणसीरे बेटो १ राव छाडोजी, पाटवी हुवो।

राव छाडाजीरे बेटा ११ हुवा त्यांमे बेटा ७रो परवार छे, ४रांरो परवार नहीं। राव तीडोजी पाटवी। २ श्रीमलजी, ३ खोखर, तिणरा केडरा खांखर ४ बांनर, तिणरा केडरा वांनर, ५ लखमसी, ६ दुरपाल, ७ खीमसीजी, ८ कानडदेजी, ९ हांसोजी, १०जादव, ११ सांवल। अे ११ हुवा। राव तीडाजीरे बेटो १ हुवो ने तीडोजी राव ५ पाधोडीया तिणरी विगत—१ देवडो, २ बालीसो, ३ भाटी, ४ गोहल भीनमाल थो, ५ सोलंखी।

राव सलखोजी पाटवी हुवा।

सलखोजीरा बेटा ६ हुआ। राव वीरमजी पाटवी हुवा। एकण समे जोया कछसु घोड़ा दोडे लाया था। सु महेवे आय उतरीया। महेवा माहे राज मलीनाथजी करता था, सो मलीनाथजी जगमालजी चुकते वडीयो। जोयांनु मार ने घोड़ा उरा लेसां। तरे बीरमजीनु खवर हुई। तरे वीरमजी जोयांनु काढीया। तिण ऊपरे मलीनाथजी जगमालजी वीरमजीसु चुकते वडीयो। जोयानु तो इण काढीया छे। तरे बीरमजी धरती छांडी नें दला जोयारे गया। दले घणो आदर कीयो। वास ने गांव दीयो। हासलरी मढी थी तिण मांहसु वीरमजीनु हेसो कर दीयो। गांव दीया। पछे वीरमजी गांव पिण दबाया। मढीरो हासल सगलो उरो लीनो। तरे सारा जोयां भेला होय नें दले जोयाने कयो, राठोड घर माहे घालीयो छे, तिणा गांव लीना, हासल सगलो लीनो। तरे दले कयो, इण आपणो जीव बचायो छे, तिणासु यो करे सो सारा गुना माफ कीया। पिण वीरमजी दिन दिन धरती दबावतो जावे तो ही जोया गइ करे। पछे होलीरो दिन थो। दला जोयांरे ढोल वाजे छे। तरे वीरमजी कयो, ओ ढोल किणरो वाजे छे? तरे कयो, दला जोयारे वाजे छे। कयो, दलारो गांव कौस १२ छे। तरे वीरमजी कयो, बारे कोस ढोल सुणीजे छे। सो कांयरो ढोल छे? तरे कयो, फरासरो ढोल छे। तरे वीरमजी कयो, आपणे ही फरासरो ढोल करावो। तरे जोयांरी मसीत ऊपर फ़रास थो ऊ फ़रास जोयांरे पुजनीक छे। सो

फरास वाढनें वीरमजी ढोल करायो । तरे जोयां सारा दला कनें पुकारीया नें कयो, पुजनीक फरास वीरमजी वाढनें ढोल करायो । तरे दलो जोयो चढियो सो वीरमजीनें मारीया । सं. १४४० कातीवद ५ पडीया ।

२ मलीनाथजी सिद्ध पीर हुवा। वाल्ही रूपादे राणीरा उपदेससु सीधा ।
३ जेतमालरा केडरा जेतमालोत धवेचा महेचा साख खांप कहाणी ।
४ सुंडो तिणरा केडरा सुंडावत कहांणा ।
५ सोभतजी, ६ कानजी, अे छः बेटा हुवा ।

राव वीरमजीरे बेटा ८ हुवा । राव चूंडोजी पाटवी हुवा । पढियारांरा दोहिता इंदारे परणीया था । इंदे घासरा गाडांरो बांहनो करनें मंडोवररा सोवाने मारने इंदा चूंडाजीनें मंडोवर दीनो । पछे राव चूंडोजी संवत १४५१ डीडवांणो मारीयो । सं. १४५६ नागोर लीयो, खानजादा कनासुं लीनो । बडो राजा हुवो । पछे संवत १४६५ काम आयो ।

२ गोगादेजी तिण रा० वीरमदेजीरो वेर काढीयो । दला जोयानुं वेर माहे मारीयो । सं. १४५९ गोगादेजी पिण काम आया । जोयां मारीया । रांणकजी भाटी मारीयो । ३ देवराज तिणरा देवराजोत । ४ जेसंघ तिणरा …जेसंगोत । ५ बी…। ६ हमीर । ७ उरपतजी । ८ नरायण । ए आठे हुवा ।

राव चूंडाजीरा बेटा १६ ।

१ राव रिडमलजी पाटवी, सांखला वीरमरा दोहीता । पछे रांणो कुंभो भांणजो छे तिणरी धरती मांहे चांचो मेरो अमल होण देवे नहीं । तरे रिडमलजी चीतोड गया रांणा कुंभारो अमल कर दीयो, ने सारो आपरो जाबतो कीयो । तरे सीसोदीयां जांणीयो राठोड धरती उरी लेसी । तरे रांणो कुंभो रिडमलजीनुं चूक कर मारीयो सं. १४८६ ।

२ सेसमल, ३ सगतोजी, ४ रीणधीरजी, ५ पुनोजी पुनावत, ६ उरजन, ७ अडडंकमंल, ८ भीमोजी, ९ राजधरजी, १० रामदेवजी, ११ कानजी, १२ डूंगरसी, १३ सतो, तिणरा सतावत, १४ कोजुजी, १५ मांगलोजी, १६ चांचो, तिणरा केडरा चाचग साख छे । ए सोले बेटा हुवा, तिणमें बेटा १४ री तो साख छे, २ री साख नहीं ।

राव रिडमलजीरे बेटा ३१ हुवा,तिण मांहे बेटा २४री साख छे, बेटा ७ अऊत गया, नांना थका मुवा।

राव जोधाजी पाटवी हुवा। पढीहारांरा भाणेज,१४७२ रो जनम। धरती मांहे विखो हुवो तरे धरती मांहे विखे दोडिया। पछे राव रिडमलरा वेरसु चित्तोड ऊपर चढीया, सं० १४९४। पछे सीसोदियां सु वेर भागो, १५०९। वेर भागा पछे जोधपुर बसायो। सं० १५१५ रा जेठ सुद ११ गढ करायो। मोटो राजा हुवो। वरस ३० राज कीयो।

२ कांधल, तिणरा केडरा कांधलोत कहीजे। ३ करण, तिणरा केडरा करणोत,गांव चवां दीधी। ४ रूपसी तिणनु गांव चादी दीनी। ५ हापो, ६ पातो, तिणरा केडरा पातावत। ७ सांडो, तिणरा केडरा संडावत, रेनडी दीनी। ८ अडमाल,तिको पितर हुवो। ९ जगमाल,तिको मोटीयार थका मुवा। १० राव खेतसीजी,तिणरा केडरा खेतसीयोत। ११ लखो। १२ डूंगरसीनु गांव भादराजन दीनी। १३ चांपो,तिणरा केडरा चांपावात, गांव कापरडो दीनो। १४ अबेराज, गांव वगडी दीनी। तिणरा बेटेरी विगत—१ मेहराज तिणरा केडरा कुंपाव कहे छे। २ पंचायणरो जेतो तिणरा जेतावत। ३ राणो तिणरा केडरा राणावत। ४ रावलरो कलो तिणरा केडरा कलावत। ५ पंचायणजीरे फेर बेटो दुजो भदो, तिणरा केडरा भदावत छे। १५ माण तिणने गांव भावर दीनी। १६ मांडलो तिणरा केडरा मांडला। १७ गोयंद। १८ करमचंद। १९ ऊघो। २० नाथा। २१ भाखर तिणरा केडरा भाखसीयोत, गांव साहल दीनी। २२ जेमल। २३ सायर। २४ रूपा। २५ लीला। २६ बेरा तिणने दुधोड दीवी। तिणरे रामदास बेटो हुवो सो चोरासी ८४ आखडी राखतो। २६ रुगो २७ रामो। २८ नरायण। २९ संबलो। ३० जेतसी,३१ वलो तिणरे केडरा बाला कहीजे। ए ३१ बेटा तिणमें बेटा २४ री साख छे, ७ री साख नहीं।

राव जोधाजीरे बेटा १६ हुवा तिणरी विगत।

१ राव सुजोजी पाटवी हुवा। भांणजा मांगलीया पतावी रावतरा। वरस २५ राज कीयो। पछे राव वीको वीदो इकमाया भाई था तिणां वीकानेर वसाई। सं० १५४५ रा जेठ सुद ११ रोहणी नक्षत्र थो। ४-५ वरसंघ ने दुदो इकमाइया भाई था, तिणा सं० १५२५ मेडतो बसायो,

नें राज कीयो । ६ करमसी, तिणरा केडरा करमसोत, गांव खींवसर दीयो । ७ सातलरी ओलाद नहीं, तिणनु सातलमेर दीवी, सातलमेरीयो करण कहीजे छे । ८ वणवीरजी, सीरोही परणीजण गया था सो देवडां चूक कर मारीया । ९ रायपाल, तिणरा केडरा रायपालोत, गांव नहडसर दीवी । १० भारमल, तिण केडरा भारमलोत, गांव दुनाडो दीनो । ११ नीबो । १२ जोगो, तिण केडरा खंगारोत, जोधा गांव खारीयो दीनो । १३ अखेराज । १४ सीवराजनु गांव गुंदोच दीनी । १५ अभेराजजी । १६ नाथोजी ।

राव सुजाजीरा बेटा ७ राव वाघोजी पाटवी हुवा । २ ऊदाजी तिणरा केडरा ऊदावत । ३ सांगोजी । ४ नरोजी तिण केडरा नरावत । ५ पिरागजी । ६ नापोजीरे ओलाद नहीं । ७ सेखोजी काम आया राव गंगाजी ऊपर नागोरसु दोलतिया खानसु पातसानु लायो थो । रिणसी कने लडाई हुई जठे काम आया । ८ देवीदासजी । ९ प्रथम रायजी ।

राव बाघाजीरे बेटा ८ हुवा । १ राव गांगोजी पाटवी हुवा, भांणेज चहुवांणरां । नागोररा दोलती पातसानु भागो सं० १५९१ ।

२ वीरमजी सोजत । ३ जेतसी जी । ४ भीवोजी । ५ परतापसंघ । ६ सुरतांणजी । ७ प्रथीराजजी । ८ खेतसीजी ।

राव गांगाजीरे बेटा ६ हुवा । १ मालदेजी पाटवी हुवा । भांणेज देवडा जेराज लखावतरा । जनम संवत १५६९ पोह बद १ शुक्र । टीके बैठा संवत १५७० । बडो राजा हुवो । घणी धरती लीवी । इतरा परगना तिणरा कवित–

सहर सोजत ली माल मालदे लीयो मेडतो ।
अजमेर सीव सांभर सेमो बीकानेर वदनोर ।
मामाल लीयो दतमेल राव मलीरायदरो ।
लीयो भेढ भादराजण भेले नागोर ।
निहचे चढ निले खाटु लीयो जडावथी ।
तपतेज हुवे नांना तणे मीठी गुणील देसांतणे ॥ १ ॥
केड लइ लाडणु दुरग लीयो डोडीयालो ।

भीडर फतेपुर जाय आप बस कीयो ।
आंपाणे कमंध लई कासली रुकव ली लीयो रिवासो ।
चांप लइ चांटसु मुं व··· ··वीरभांण मेवासो ।
जडल··· ··पाण जानपुर लीयो गढ छोडे कुंभो गयो ।
मालदे लीयो मंदारपुर लीयो टुंक तोडो लीयो ।। २ ।।
जुड लीधी जालोर घण साचोर पजावे ।
भीममाल भाजीयो विरद मोटा बोलावे ।
बीकानेर विधुंस लीयो पोकरण फलोधी ।
कीया माल कोपीयो सीवकी समदां सुधी ।
फिर आंण लगे उमरन खर पारकर पाधो वरे ।
मालदे देस माला तणा बस कीधा चागाहरे ।।३।।

चित्रकोट चांपीयो माल वणवीर लीयो पुर ।
अनड दुरंग अषलो धुये लीयो करसीधुर ।
लोहबजे लोहगढ जेखल नाडुल जोजावर ।
रेहल ऊदेसिंघरांण रसूल ले ले कीया निगुर ।
घुण लीव रावकुंभा घरां हाथ माल जब बस हुवे ।
इक हुवो छत्र वीघाहरो भोम माल सोहो भोगवे ।।४।।

इतरा परगना लीना छे । संवत १५८८ कंवरपदे । वीरमदेजी कनासुं सोजत लीनी । सु० राइमल सोजत काम आया । पछे सं० १५९९ बीकानेर, राव कुंपो महराजोत राव जेतसीनुं मारने लीनी । मास दोय बीकानेर र्यो । पछे राव भीम दुदावत कनांसुं मेडतो लीयो । सं० १६०० राव वीरमदे सेखावत रायमलरी मारफत पातसा सेरसाने साहजादो सलेमसाने रावजी ऊपर लायो । सो वादसा खोटो तिण दगो कियो मोहरां उमरावांरा मोदीयाने वेची । वीरमदे चारण रावजी कने मेलीयो । धरतीरो आंटो छे, पिण राज मोटा छो, पाटवी छो, जिणसुं अवसांण दां छां । राव बोला, उमराव पातसाहरा खरची लीनी पटा लीना छे । सो पटा तो ढालांरी परदडीमें छे । सो ढालां पातसाहजी सिलेहटरी ढालांरी परदडीमें पटा घालने ढाल छांने मेली । सो उमरांवां कयो, ढालां उरी लो । आपानुं तो पातसाहसुं लडणो छे । तरे उमराव दरवार आया, तरे ढाल देखणरे मिस

लीनी । तरे परदडी मांहसु पटा लीना ने मोदीयांरी हाटांसु मोहरां सुरसाइ आइ । तरे रावजीरा दिलमें कुडो खतरो पडीयो । उमरावां अरज कीवी, मुफतरी ढालां आइ तरे लीनी छे । मोहरां बेइ मोदीयांने पुछीयो तरे मोदीयां कयो, सुंहगी आइ रु० १) नफो आयो तरे लीनी छे । सो अरज तो घणी ही करी पिण रावजीरा मनमें खतरो ऊपनो अरज मांनी नहीं । गांव सुमेल डेरा था उठासु रावजी मुडिया, ने राव तेजो जेतोजी कुंपोजी सोनगरा अखेराजजी वगेरे १५०० आदमी काम आया । पातसाहरा हाथी कने जाय पडीया । पातसा सूर पातसा जोधपुर आयो । जोधपुर गढ मांहे सूर पातसाह दिन ५२४ रयो, जोधपुर राज कीयो । पछे संवत १६०२ रावजी पाछा जोधपुर गया । पछे सं० १६११ मालकोट करायो । पछे मेडते जेमलजी ऊपरे रावजी चढीया । तरे जेमलजीरी भीड श्रीचतुरभुजजी लडीया । तरे रावजी निसरीया । पछे फेर रावजी जेमलजी ऊपरे चढीया सो मेडतो लीयो । संवत १६१३ जेमलजी नीसरीया । पछे जेमलजी पातसाही फोज लाया मेडतो लीनो । संवत १६१६ फागुण वद ६ जेमल वीरम देवोतरे अमल मेडते हुवो ने मालकोट मांहे मांगलीया वीरम महेस थो सो वारे नीसरीयो ने दीली आयो । फोज अकबर पातसाहरी आइ जेमलजी साथे । सो सं० १६१९ कातीवद १२ रावजी दीली मांहे काल कीयो । सती हुई तिणरी बिगत, ६ साउवांणी, १० खवास पात्रां, ४ डावडीयां, ३ छोकरीयां, सर्व २३ हुई ।

२ वेरसाहजी । ३ सतीदासजी । ४ मानसंघजी । ५ किसनदास । ६ कानजी ।

राव मालदेवजीरे वेटा १३ हुवा । १ रावजी चंदरसेणजी टीके बेठा तिण ऊपर पातसाही फोज निबाब हसनखां आयो । तरे चंदरसेणजी लडीया पछे गढ छुटो । संवत १६२१ मिगसर सुद ४ गढ छुटो । ऊपरली मसीत हसनखांन कराइ । धरती धरती मांहे तुरकाणो हुवो नें बिखो रयो वरस २० तांइ ।

२ राजा उदेसंघजी पाटवी । भाणेज भाला सभा राजावतरा । जनम संवत १५९४ । पातसा अकबररी चाकरी रया, तरे संवत १६३९

रा माहसुद १४ जोधपुररो टीको पातसा दीयो । पछे जोधपुर संवत १६४० भादवा सुद २ गढ दाखल हुवा । वरस १३ राज कीयो । सं.१६५१ आसाढ सुद १५ देवलोक हुवा लाहोरमें ।

३ रामजी । ४ रतनसी । ५ भोजोजी । ६ रायपालजी । ७ डुंगरजी । ८ भाणजी । ९ गोपालदासजी । १० विक्रमादेत । ११ तिलोकसी । १२ महेसजी । १३ लीखमीदासजी ।

रावजी उदेसंघजीरे बेटा १२ हुवा ।

१ राजाजी सूरसंघजी,भांणेज कछावाहा आसकरणजीरा । जनम सं. १६२८ बेसाख वद ३ ने, देवलोक संवत १६७६ रा भादवा वद ९ हुवा ।

२ किसनसंघजी, किसनगढ बसायो संवत् १६६८ रा ।

३ अखेराजजी, दलसाह वुदेलसु रोलो हुवो तद काम आया ।

४ भगवानदासजीरा गोवंददासजी गोवनगढ वसायो, ने खेर वेने वलाडे छे ।

५ भोपतजी, साहुल पवारसु रोलो हुवो तठे काम आया, रतलाम कांनी ।

६ नरहरदासजीरा मोडरे मेडतारो गांव । ७ सगतसंघजीरा खेरे रवे । ८ दलपतजीरा रतलाम छे । ९ जेतसीरा कठमोर । १० माधोसंघरा पीसांगण । ११ मोहणदासजीरा नागेलाव प्र० अजमेररे छे । रामसिंघजी वालके राम कियो । ए १२ ।

रावजी सुरसंघजीरा बेटा २ हुवा ।

१ राजा गजसंघजी पाटवी, भाणेज कछवाहा राव जगनाथोतरा । सो जनम संवत.........रो नें संवत.........टीके बेठा नें सं.१६९४......... जेठ सुद ३, आगरे पातसाहरे हजुर था तठे देह छोडी ।

.........टीके बेठा नें दीखणीयांसु लडाई कीनी तरे लाल नीसांण लीया नें आगे सफेद नीसांण थो । दिखणीयांरा लाल नीसांण लीया नें तरे लाल सपेद दुरंग नीसाण हुवा । संवत १६८० भादवा वद ८ मेडते अमल हुवो । वरस १८ राज कीयो ।

२ सबलसंघजी आहेडांरा भाणेज। पराती माहे जागीरी थी सो उठे काल कीयो।

राजाजी गजसंघजीरे बेटा २ हुवा, १ महाराजाजी जसवंतसंघजी छोटा था पिण पाटवी हुवा। भाणेज सीसोदीया गोकलदास भांणोतरा। जनम संवत १६८३ माहा वद ४ नें संवत १६९४ असाढ वद ३ टीके बेठा। साहजादा मुरादवकस ओरंगजेबसु उजेण मांहे लडाई कीनी। संवत १६९५ बेसाख सुद ९ सुकर। सं. १७०७ जसवंतसंघजीरो अमल पोकरण हुवो। संवत १७३५ पोह वद १० देसोर मांहे सोवे था सो काल कीयो।

जसवंतसंघजीरे बेटा ४ साख है, १ नहीं।

संवत १६···सावण सुद ६ काम आयो। हजूर महाराजा अजीत-संघजी भां जादमारा छे। संवत १७३५ चेत वद ५ जनम···मारवाड मांहे दिली सुबो तरे खीची मुकनदासजी रेहवाले महाराज रया नें सीरोही मांहे रे···था पहाडां मांहे रया·····पछे महाराजाने संवत १७४३ वेसाख वद ५ वारे काढिया, ने दुरगदासजी अकबर साहजादारा बेटाने लेने पातसाह ओरंगजेब कने दिखण गया। तरे दुरगदासजीनु पांच हजारी कीनी ने महाराजाने जालोर दीनी। संवत १७५५ जालोर महाराजारो अमल हुयो। मनसप कबुल कीयो ने राव उदेसंघ लखधीरोत चांपावत नें राजा उरजनसंघ परतापसंघोत जेतावत कंवर मोकमसंघ इंद्रसंघोतसु मीलिया ने महाराजाजी उपरे बुलाया तरे कंवर मोहकमसंघ मेडतासु संवत १७६२ पोहँच्यो सो जालोर गयो। तरे महाराजाजीनु खबर हुइ तरे जालोरसु नीसरिया। तरे मोकमसंघ जालोरसु कुच कीयो पाछो जाण लागो। तरे मारवाड़रो साथ भेलो होय ने मोकमसंघ कने पोहता। सो धुनाडा कने रोलो हुवो। मोकमसंघ नीसरीयो। हाथी महाराजारे साथे थो सो खोस लीनो। संवत १७६२ फागुण वद ५ पातसा ओरंगजेब मुवो तरे महाराजाजीरा डेरा सुराचंद था। तठे सुणीयो। तरे उठासु कुच कीयो दिन २ मांहे जोधपुर पधारिया। संवत १७६३ चेतवद ५ पधारीया ने जोधपुर सुबे जाफरखां थो तिणनु लूट लीनो ने गढ दाखल हुवा। सारी धरती मांहे अमल कीयो, चेन हुवो। देवलां झालरां वाजी, इंडा चाढीया। पछे पातसा बादरसा जोधपुर ऊपर संवत १७६४ फागुण मांहे आयो। डेरा

नदी लूंणी ऊपरे गांव बाले कीना । तरे महाराजाजी खांनखाना दीवांणरी बांहसु पातसाहरी मुलाखात कीवी । महाराजानु साथे लीना ने पातसाह दिखणनु चालीयो । तरे जोधपुर मांहे सोबो निबाब महराव खांन राख्यो थो । तरे महाराजा अजीतसंघजी ने राजा सवाई जेसंघ, दुरगदासजी साथे गांव वरडीयारा डेरासु पाछा मुडीया सो उदेपुर आया । दीवांणसु एको कर जोधपुर आया । संवत १७६४ आसाढमें महराव खानने जोधपुर मांहेसु काढियो ने जोधपुरसु कुच कीयो ने सांभर आया । तरे सेद हुसन खां नालनोररो चाल्यो सैंभर आयो । तठे लडाई हुई । निबाब हसनखांने मारीयो । संवत १७६५ काती वद ·· । राव भीव सबलसंघोत कुंपावत काम आयो । जेसंघजी पिण साथे था, सो सांभर उरी लीनी । महाराजा अजीतसंघजी ने सवाई जेसंघजीरा सांभर डीडबाणे सीरमें रयो । पछे जेसंघजीनु आंबेर बेसांणीया । पछे कुच कीयो । तरे मोकमसंघ कंवर कुचेरे थो तिण ऊपर पधारीया । संवत १७६५ पोह वद ५ कुचेरो मारीयो ने मोकमसंघजी राखियो । पछे नागोर ऊपर चलाया । तरे इदरसंघजीरी मा सेखावतजी कने आया, सु मकराणे डेरा । श्रीजी आणंद कर ने हाथी १ दीनो । तरे पछे कुच कीयो । जोधपुर पधारीया ।

सांभर लडता काम आया तिणरी विगत भीव सबलसंघो, कुंपावत, राव सुजो कनीदासोत खांप ऊदावत वास सोमा वस.........

....

संवत १७६६ श्रीजी अजमेर आय लागा तरे सोबे खानजादो थो सो सेहर मीयांने घेरीयो । तरे राड हुई, तरे आसामीयां काम आई तिणरी वीगत·······तरे मीयां विस·······लोफेरियों,पेसकसी कबुल कीनी । तरे हाथी १ ने रु० ४०,००० मीयारे माथे कीया । राजा राजसंघ मानसंघोत, किसनगढवालेरो कामदार भवानीदास मांहे थो सो माहेसु श्रीजीसु अरज कराई, हुं मांहे छु । मोसु मेरवांनगी फुरमावो । निबाव पेसकसी कबुल कीनी छे । अरज मांनी, श्रीजी कुच कीयो । पछे देवलीये पदारीया अजमेरसु । पछे परणीजीया । छोटी सीसोदणीजी परणीज ने जोधपुर पधारिया । बहादरसा पातसाह दीखणसु पाछो फिरीयो । अजमेररा डेरा । श्रीअजीम साहजादारी मारफत संवत १७६७ वेसाख माहे पातसाहरी मलाजमत कीनी ने महाराजरो

मनसब ठहरीयो। पछे सीख दीनी ने सांभर छुटी। पछे जोधपुर पदारीया। पातसाह लाहोरनुं हालीयो। पछे महाराजाजीनुं जेसंघजीनुं नांनगगुरुरी मुहम दीनी तरे सहरोरें पधारीया सम्वत १७६८। पछे नांनगगुरुरी मुंहमसर हुई तरे पाछा बाहुडीया। तरे श्रीगंगाजी कुरक्षेत्रजी फरसीया नें पाछा पधारीया। सम्वत १७६८ मांह मांहे जोधपुर दाखल हुवा। पछे पातसा मुवारी खबर हुई तरें जोधपुरसुं कुच करनें नागोर पधारीया। नागोरसुं पेसकी लेनें पछे बीकानेर दोली फोज दोडी सम्वत १७... । पछे इन्दरसंघजीनुं साथे लीना। पछे बांधणवाडे पदारीया। सुरजमल उदेभाणोत जोधानुं केद कर पछे नाहरसंघ अखेराजोत जेता जोधाने पगे लगायो। पछे किसनगढ पधारीया पेसकसी लीनी ने रूपनगरनुं राजसंघ ऊपर पधारीया। सं० १७६९ भादवा मांहे। तरे राजसंघजी आय पगे लागा। नालर मोटीने पेसकसी दीवी। पछे सांभर पधारीया, ने सांभर डीडवाणो लीयो। जेसंघजीरा सीर मांहे ने सांभरसुं फोज कीवी। भंडारी विजेराजजीनुं विदा कीया ने सवाई जेसंघरो उमराव सांमसंघ खंगारोत विदा कीयो। सो हिरंवांणे जाय घीसीखाननुं मारीयो। पछे नीबाब जुलफारखांरी मारफत पातसाह मोजदीनसुं रद बदल कराइ। रायजी रुघनाथजीनु दीली मेलीया। तरे गुजरात सोरठरो सोब्रो लाया तरे जोधपुरसुं कुच करने सालावस डेरा कीया तरे पातसाह मोजदीन मुवारी खबर आई। तरे पाछा जोधपुर दाखल हुवा। पछे फरकसा पातसाह निबाब सेदहसन अलिखांनुं बाइसी देने बिदा कीयो।

सं० १७७० पधारीया। मेडते साथ भेलो कीनो ने आगापाट्ट जाय डेरा कीया। उठासुं पाछा मुरडीया आया सो रांहण डेरा कीया। राव भगवानदास जोगीदासोत ने राइजी श्रीरुघनाथजीनुं बात करण मेल्हीया। तरे बांसु खांनाजंगी हुईरा समंचार हुवा। तरे महाराजाजी रांहणसुं पाछा पधारीया सो आंणने गढ सभ्जीयो ने हसनअलीखां नीबाब मेडता तांइ आयो। तरे मेल ठारियो। राव खीवसीजी जाय सला कीनी पातसाहजीनुं बाई देणी कीवी ने कवरजी श्रीअभेसंघजीनुं साथे दीना। निबाब हसनअलीखां अभेसंघजीनुं साथे लेने दीली गया। फरकसा पातसाह नें बाइ इन्दरकंवर परणाइ। सम्वत १७७१ परणाइ छे।

पछे गुजरातरो सोबो हुवो तरे श्रीजी माहाराज गुजरातनें पधारीया संवत १७७२ गुजरात पधारने द्वारकाजी पधारीया। तरे मारगमें हलोद

जसा झालासु लडीया। जसो हलोदसु नीसर गयो। तरे सेंहर लूट लीनो नें सेहरकोट पाडीयो। पछे नवेनगर जांम तमाइचीसु लडीया। तरे जाम तमायची आए मिलीयो। रुपीया तीन लाख पेसकसीरा दीना।

पछे संवत १७७४...नागोर फेर लीनो। भंडारी पेमसीजी नें मुंता जीवणदासजी लीनो। राव भीव रिणछोडदासोत खांप जोधा, राजा अमर-सिंघ कुसलसंघोत खांप ऊदावत, राव किसनसंघ प्रथीसंघोत खांप मेडतीया वास खालड, राव अखेसंघ सांमसंघोत खांप मेडतीया, राव सांवतसंघ गोकलदासोत वास जालवो खांप मेडतीया, राव हीदुसंघ गोकलदासोत वास वाजोली खांप मेडतीया, माधोदासोत वगेरे, राव जेतसंघ रुपसंघोत वास वीखरणीयो खांप मेडतीया, राव जुजारसिंघ अचलसंघोत वास ईडवे खांप मेडतीया, राव रतनसंघ समरथसंघ भाई ४ था, हरसंघोत वास वरु खांप मेडतीया, राव सांवतसंघ प्रतावसंघोत खांप कुंपावत, राव वाघो अणंदसंघोत खांप कुंपावत नीवी, राव कनीरांम रांमसिंघोत खांप कुंपावत वास बडलु, राव जेतसी सुरजमलजी भावसंघोत खांप करमसीयोत, राव उदेसंघ लिखमीदासोत करमसीयोत वास टांकले। ....।

परगनांरो साथ कामदार लाया तिणरी विगत। मुणोत सांवतसंघ वेरसंघोत परगनें जालोरसु नागोर फोज आई तिण पछे आया २। मुंता तोमरमल तेजमालोत परगनें फलोदीसु साथे छे नें दीना २ नोर गयो हतां पछे आया भेला हुवा। भंडारी गिरधरदास उदेसंघोत पसोझतरे साथ लेने रांहणरे डेरा आय भेला हुवा। भं० रतनचंदजी रूपचंदोत परगनें हरसोर तोसीणारा साथ मेडतीया जोधा कुंपावत लेनें आया रांहण भेला हुआ। रांह-णसु कुच कीयो डेरा गांव नीवाडी, पछे गांव नांराधणो इंदरसंघजीरो साथ भेलो कवर श्री अजवसंघजी था ने कामदार सुराणो सागरमल थो सो गांव नराधणेरा तलावमें प्रांरंभीया। मोणोत भंडारी पोमसीजी नें मुता जीवण-दासजी नें उमरावां सारा ही मिसलत कर नें मोरचा ७ कीया, तिणरी विगत। मोरचो १ जोधपुररा साथरो। मुंता जीवणदासजीरो। मोरचो १ रूपसींघ रीणछोडदासोतरो जोधांरे साथरो। मोरचो १ राव अमरसंघ कुसलसिंघोतरो ऊदावतांरो। मोरचो मेडतीयांरा साथरो भंडारी रतनचंद रूपचंदोत था सो ....

अजमेररा था सो भंडारी पोमसीजी साथ लीयां मोरचांरे गिरद फिरता था सो पोहर ३।। लडाइ हुइ । पछे इंद्रसिंघजीरो साथ रात घडी ४ जातांरा नीसरीयो । पछे नागोर गयो पाछासु दिन २ श्रीजीरी फोजरो कुच नरायणासु हुवो तरे नागोर जाय लागो । दिन १ मोरचा लागा पछे इंद्रसंघजी वात करने राव भीव रिणछोडदासोतरी राव अमरसंघ कुसलसंघोत वांह देने काढीया नागोरसु भार असबाब संभलाय ने निसरीया । संवत १७७३ रा श्रीजीरो अमल नागोर हुवो कोट दाखल भंडारी पोमसीजी हुवा । उण दिन मेह निपट घणो हुवो सो डेरा पांणीसु भरीज गया सो भंडारी हरराम.............. ....तिणरा बेटारो डेरो पाणीसु भरीज गयो तरे उपाडने मेडतीयो समरथसंघ हरसंघोत वास वोडावड कालवो तिणरे डेरे कने धुबे उंट बधता था तठे पाल खडो करण लागो । तरे समरथसंघ मने कीयो अठे डेरो मती करो, ऊंट बंधे छे । तरे भाटी गाल दीनी तिण ऊपर समरथसंघ उठ ने गयो । तरे आगे भाटी मेखठोके छे समरथसंघ झट-कारी दीनी सो माथो तुट पडीयो । भाटीयां साथ जोधपुर ने प..पइ भोयांरी फोजमें थो सो दोडीयो तरे मेडतीयांरो साथ भेलो भंडारी रतनचंदरो डेरो थो सो नीसांण वीचमें आण खडो कीयो नें भाटी कल्याणदास हररामजीरो भाइ थो सो भाटीयांरा साथमें दोडीया था । त्यांमे आगे थो तिणनु भंडारी रतनचंद कयो श्रीजीरो भुंडो करो छो ने इंद्रसंघजीरा वांछीया करो छो ने भाटी ने राठोड आंमा सांमा मर जासी ने थांहरे भतीजरो वेर लेणो हुवे तो मोनु मारो । तरे भाटी कल्याणदासजी कयो थे महाराजरा कामदार छो ने भंडारी रूपचंदजीरा बेटा छो सो मेडतीयां बदले थांनु कोइ मारां नही । इतरे धांधल गोयंदाजी आयनें कयो भंडारी रतनचंदजी विचवालो करे छे ने श्रीजीरो निसाण छे तरे भाटीयांनु लोथ मगाय दीवी । ऊदावत गोरधन-दास रीदेरांमोत वास ठाकरवासरा,जगराम खांप माधोदासोत मेडतीया वास टोडो भडीरो लोथ तंबुमें घालने लायो भाटीयांनु लेने धांधल गोयंददासजी पाछा वालीया । भाटीनु दाग दीयो । पछे भंडारी पोमसीजी कोटसु लस-कर आया नागोररा उमराव साराही आय मीलिया, देसमें अमल हुवो । राव दुरजनसंघ सवलसंघोत खांप जोधा, वास पाटोसी वालो इंद्रसंघजीरे वांसे दोडीया । पछे कवर मोहणसंघजीनु मारीया ने पछे आयो । राव भीवजी अमरसंघजी भंडारी पोमसीजी कयो मांहरी वांहसु नीसरीया था सो थे

वांसे जायने क्यु मारीया। तरे श्रीजीरो परवानो काढ ने देखायो तरे सगलाही अबोला होय रया। पछे राव अमरसंघजी सो घरे गया ने राव भीमजी तो उठे रया। संवत १७७३ रा राव दीवा रिणछोडदासोत काल कीयो नागोर मांहे। संवत १७७४ रा जेठ माहे श्रीजी साहिब श्रीद्वारकाजी पधारीया। श्री रिणछोडरायजीरो दरसण कीयो। पाछा पधारीया तरे गुजरातरो सोबो उतर गयो। संवत १७७४ पाछा जोधपुर गढ दाखल हुवा। पछे दीलीनु कुच कीयो। संवत१७७४ मिगसरमे। संवत १७७५ सावण वद ११ दिली दाखल हुवा। पातसाह फरकसारी मुलाजम कीवी। पछे दिखणसु सेद हुसनअलीखां आयो ने पातसाह फरकसाहने केद कीयो। संवत १७७५ फागुण सुद १०। पछे पातसाह फेर बेसांणीयां। रफीलदर तो मर गयो तरे रफीलदोला बेठाणीयो। पछे आगरे नकोसेर पातसा होय बेठो। तरे पातसाह दिलीसु कुच कीयो। तरे मारग माहे पातसाह मर गयो। तरे पातसा महमदसाह बेसांणीयो आगरे नकोसेरने केद कीयो। तरे माहाराजाजीनु सीख दीधी। सो माहाराजाजी संवत१७७६ पोह मांहे गढ दाखल हुआ, ने गुजरातरो ने अजमेररो सोबो पातसाह दीनो थो सो गुजरात भंडारी अनोपसिंघजीनु मेलीया अजमेर भंडारी विजेराजनु मेलीयो। पछे जोधपुरसु श्रीजी कुच कीयो सो मेडते संवत १७७७ कातिमें मेडते पधारीया, ने सांभर डीडवाणो उरा लीना। पछे मेडतासु श्रीजी कुच कीनो। संवत १७७७ जेठ माहे अजमेर दाखल हुवा। बीठली लीनी, पातसाही थांणो सो उतार दीनो। तिण ऊपरे पातसा महमदसाह बाइसी मेली निबाव मुदफरखां। तिण ऊपरे कवरजी श्रीअभेसंघजी ने रायजी श्रीरुगनाथजीने विदा कीया। सो गांव धोबोलाइ डेरा कीया। बाइसीरा डेरा मनोरपुर था। निबाब मुदफरखांन उठासु नाठो सो आंबेर जाय पेठो। तरे कवरजी श्रीअभेसंघजी संवत १७७८ आसोज मांहे नारलोल ने साहजापुर मारीयो। पछे पाछा सांभर आया। पछे अजमेर आया उठासु श्रीमाहाराजाजी कुच कीयो सो संवत १७७८ रा आसोज सुद १५ सांभर दाखल हुवा। पछे दिलीसु भंडारी खीवसीजी ने बेलो पातसाही नाहरखां आया। तरे नाहरखांन सखतीरा जाब कीया। तरे नाहरखांनने संवत १७७८ पोह मांहे मारीयो। तिण ऊपर पातसाह मंहमंदसाह बाइसी मेली। निवाब एरादत बंधखां ने हैदरकुलीखांनु जेसंघ आगे होय लाया। तरे श्रीजी सांभरसु कुच कीयो मनोरपुरसु कोस ४ च्यारां परे डेरा कीया।

उठांसु पाछा मुरडीया, सो अजमेर आया। वीटली सभी तिए ऊपरे भंडारी विजेराजजी ने राव अमरसंघजी कुसलसंघोत ऊदावत वगेरे हरभांए भगवानदासोत राठोड जगतसंघ तेजसंघोत वगेरे आसामी जद थी। राव देवकरए नरसंघोत जोधो रा० भीव सवलसंघोत खांप मेडतिया आसांमी जद थी। श्रीजी अजमेरसु कुच कीयो सो कोटडीयां पधारीया। पछे मेडते दाखल हुवा ने बाइसी अजमेररे किले लागी। सो लडाई हुई। पछे सला ठेहरी तरे वींटलीसु साथ बुलाय लीयो। बाइसी रीयां आय डेरा कीया तरे मसल ठहरी तरे कवरजी श्रीअभेसंवजीनु ने राइजी श्रीरुगनाथजीनु साथे दीना। तरे बाइसी पाछी गाइ। श्रीजी जोधपुर पधारीया। संवत १७७९ रा मीगसर मांहे। पछे संवत १७८० आसाढ सुद १३ श्री माहाराजाजी श्रीअजीतसंघजी देवलोक हुवा। इतरी सती हुई तिणरो कवित–

राजलोक खट दुए बीस पडदायत पीरी।
च्यार सहेली संग अगनसिनांन उलारी।
बारे गायए वाली बली नव उड़दा बेगए।
हाथल चेडी हुबे दोय जएी हजुरए।
पातरां पांच नजर उभै भल बाइ मीतभाइयो।
सिघवत पुरस अजन सतीयां सहत यु सत लोक सीधाइयो॥ १॥

विगत ६ राजलोक ५७ वाजे गायण, पासवांन वडारण उगरे, २ नाजर, देवल्यारा रावरी वहु अठे थी सो सती हुइ। राजलोक सोवरांएी छ, तारां नांव-१ चोवांण होहलुरीया चत्रभुजरी बेटी, २ भटीयांणी जेसलमेरीजी, ३ भटीयांणी देवरावरीजी, ४ सेखावतजी मनोरपुररी, ५ चावड़ी माएसारी प्रां० गुजरात, ६ तुवरजी लखासररी। बेटा १० आप देवलोक हुवा पछे था। १माहाराजाजी श्रीअभेसंघजी, पाटवी। २बगतसंघजी। ३अणंदसंघजी। ४रायसंघजी। ५ किसोरसंघजी। ६ परतापसंघजी। ७ रतनसंघजी। ८ रूपसंघजी। ९ सुलतानसंघजी। १० सोभागसंघजी। इतरी आसांमी चुक कर मारी। परधान था मुकनदासजी दिली रोकमे था। सो श्रीजीरो हुकम सवाय वात कीवी २ राव मुकनदासने रुघनाथसंघ, सुजाणसंघोत खांप चांपावतनु पटो पाली वगेरे गांव..........................रेखने रुघनाथजीरो पटो सिराणो गांव..........................रेख..........................संवत १७६५ मीती..........................गढमे चुक कर मारीया..........................। रांव

रांमजी, रा० रिदेरांमजी, रा० परतापसंघजी, रा० अभैरामजी, रा० रांम-संघजी वगेरे आसामी १० उदावतांरी ने कुपावत भीम सबलसंघोत वले बीजी ५ आसामी थी सो श्रीजीरी हजुर वेठां कटारी वुही सो रा······ परतापसंघ राजसंघोत खांप ऊदावत मुकनदासजीनु कटारी वाही ने रुघनाथजीने कटारी साथ बीजे वाही ने रजपुत दोय २ नाहर धनो ने गेलोत भीयो मुकनदासजीरा रजपुत था सो माहे धसनै संभीया तिण भीयेतो रा० परतापसंघजीने साजीया ने परतापघसंजी मुकनदासजी रुघनाथसंघजीने साजीया, नाहर धने रा० भीव सवलसंघोतरे लोह १ लगायो, ने फेर ऊदावत रांमसंघ गोपीनाथोतरे लोह लगायो, ने धनानु रा० रामसंघरा० दोलतसंघ सादुलोत सझायो ने भीवानु प्रोहत शिवरांम खांप पोहकरणो रायपुररो कामदार रिदेरांमजीरो तिण भीवानु साजीयो। सो परतापसंघजीरी छतरी पोल इमरतीरा मुंढा आगे हुई छे ।

रा० मुकनदासजीरा ने रुगनाथसींघरा बेटा·················छोडने दीवांणरे चाकर रया। पछे श्रीजी बुलाया। चिराराम दिलीरी मारफत आयो।

संवत १७८३ आसाढमे रा० दोलतसंघ मुकनदासोत, रा० किसनदास रुघनाथसंघोत, श्रीजीरे पगे लागा। तरे सिरपाव दीयो ने पटा दीना।

रा० करण ने जुझारसंघ खांप जोधा सूंजाणसंघोत गढ मांहे मारीया संवत १७६९ रा चुकमे। इतरा आसांमी था। तिणरी विगत रा० दोलतसंघ जुझारसंघोत, खांप चांदावत, रा०··········साहबखांन ने खांप चांदावत, रा० जेतसंघ सुरसंघोत। और आसांमी २ खांप विसनदासोत मेडतीया, रा० रांमसंघ परतापसंघोत खांप जेतावतनु मारीयो। मगरामे कलूरी मेडीमे रजसो मारीयो श्रीजीरा हुकमसु ।

संवत १७७३ रा उरजनसंघ परतापसंघोत खांप जेतावतनु मारीयो ने तोफा भेलो थो तिणनु इ मारीयो। मारणने गया था तिणरी विगत। रा० माहासंघ सगतसंघोत खांप चांपावत, रा० हरीसंघ जसवंतोत खांप चांपावत, राव रायसंघ सांवलदासोत, चवांण रतन वगेरे असवार चालीस था। मालवेमे रायने उरजनसंघनु मारने श्रीजीरो सोवो अेमदावाद थो तठे आय मंजरो कीयो।

संवत १७७० भादवामे कवर मोहक्कमसी इंद्रसिंघोतनु दिलीमे मारीयो। भाटी अमरो केसोदासोत पिरागदासोत भाटी नाहरखांन भाटी जगो,रा० अमरसंघ सुजाएसंघोत खांप धबेचा, रा०करएसंघ विजेसंघोत खांप महेचा वगेरे असवार ६० वरस १ तांई इए कांमरे पेगा खरची खाधी। पछे कांम पेस पोहतो।

झालो जसो मारीयो तिएरी विगत। संवत १७७९ रा............ हलोद मांहे मारीयो।

फिटक उरजो चुक कर मारीयो सोढा भागुने इंदा विजेने मुसले घरमे भागु सोढाने मारीया।

संवत१७७३ कवर मोहणसंघ इंदरसंघोतने मारीयो। रा० उरजनसंघ सवलसंघोत खांप जोधा वास पाटोधी सं १७७३ रा० जगरांम वगेरे आसांमी ४ जोधा मेडतीया था झलो जसो ... वास हलवद गुजरातमे छे तिणनु फिटक उरजे मारीयो। संवत १७७९।

संवत १७८१ पोह सुद ८ माहाराजाधिराज श्री अभेसंघजी जोधपुररे गढ दाखल हुवा। दीलीसु पधारीया। पछे मास१ माहे तजवीज करने राजाधिराज श्रीवखतसंघजीनु राय रुगनाथजीनु विदा कीयो। साथे फोज कछवांहांरी थी सो अएांदसंघजीरी साथे खेदो कीयो। अएांदसिंघजी सीरोहीरी धरतीमें गया। पछे राजाधिराज श्रीवखतसंघजी राइ रुगनाथजी पाछा आया जोधपुर। संवत १७८१ फागुण वद १४ राइजी श्रीरुघनाथजीने केद हुई राइका वागमे। पछे दीवाणश्री............कामदार पं०कानजी ने राजा सवाइ जेसंघजीरी तरफसु दीवाएा आपामल खत्री ने रेवाडीरो उमराव श्रीजीसु अरज कीनी श्री अएांदसिंघजीनु जालोर देवो। तरे अरज कबुल हुई। जालोर दीवी। पछे श्रीजी राजाधिराज श्रीवखतसंघजीनु विदा कीया। देसरा जावतानु साथे कामदार सा० साहमल मुता अमरदास फोज १ चांपावत सगतसंघ आइदानोत भंडारी माइदास देवराजोत, फोज १ अमरसंघ कुसलसंघोत खांप ऊदावत ने मुता अमरदास गोपालदास किलाणदासोत जेतारण सोजतरे कां.. राखीया। माहाराजाधिराज माहाराजा अभेसंघजी नागोर मांहेसु इंदरसंघजीनु काढणनु गया। संवत १७८२ इद्रसंघ–

जीनु काढीया, मोरचा दिन ३ रया। पछे नागोर अमल कीयो कोट दाखल श्रीजी हुवा। पछे रायसंघजी पेसावा भेला दोडीया पाछेसु राजाधिराज श्रीवखतसंघजी पधारीया। राइसंघजी निकल गया पछे श्रीजी नागोर अमल करने मेडते पधारीया। श्रीराजाधिराजजी, रा० अमरसंघजी रा०सगतसंघजी सो मेडते आय पगे लागा। पछे जेतावत अचलसंघ मांडसंघोत वास वगडी वालो मगरे थो सो रा० उदेभाण फतेसंघोत वास चंडावल वालो विसटालो करने अचलसंघने मेडते आणने पगे लगायो। पछे मास १ ने कुच हुवो मेडतारा मेहलांमे यावडीया रा० बहादरसंघ अणंदसंघोत शिवसंघ गोपीनाथोत खांप गोइदासोत......संवत १७८२ आसोज वद ९ रा० अचलसंघने मारीयो। पछे वगडी छोड जेतावत परा गया। मेडतासु फोज पं० बालकिसन हरकिसनोत साथ लेने चढीया। सो वगडी आया पछे श्रीजी पिण मेडतासु कुच कीयो। जेतावत रुघनाथसंघ बरोठीयो हुवो थो तिणनु पगे लगाय ने वगडी पटे दीनी। पछे श्रीजी जालोरनु कुच कीयो। जालोर पधारीया तरे अणंदसंघजी राइसंघजी सीरोही गया। जालोर छोडी, पछे सीरोहीसु फतेगढ आया। पछे श्रीजी जालोरसु रा० अमरसंघ कुसलसंघोतनें पटो दीनो। राइजी साथ लेने रायपुर पधारीया। रायपुर साथ घणा दिन रयो। फतेगढसु साथ कही ऊपर दोडीया। तिणरी खबर रायपुर आइ। तरे रा० अमरसंघजी रायजी चढीया। जाय पोहता। श्रीदरबाररी हुई। रा०हरनाथ हीदेरांमोतरे लोह लागा। बाजेई मगरारो साथ आदमी कई मुवा केथारे लोह लागा। श्री दरबाररा उमराव २ काम आया। रा० सुरतरांम गोरधनोत खांप ऊदावत, रा० महासंघ सगतसंघोत खांप चांपावत वास.........पछे रा० जसकरण परतापसंघोतनु मनाय ने चाकर राखीयो। पछे श्रीजीरी हजुर रा० अमरसंघजी राइजी सारो साथ पगे लागो। जेतारणरे थांणे भंडारी विजेचंद रुपचंदोतनु ने रा० हरीसंघ अभेरामोत खांप ऊदावतने राखीया। पछे श्रीजीरो कुच दीलीने हुवो। संवत १७८३ माहमे परबतसर श्रीजीनु सील तुठी।

राठोडांरी वंशावली

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ [1]राठोडांरी वंशावली लिष्यते ॥

॥ श्लोकः ॥

१. [1]अविरलमदजलनिवाहं भ्रमरकुलानेक-सेवत-कपोलं ।
वंछितफलदातारं कामेसं गणिपति वंदे ॥ १

२. सीतागारं भुजगसयनं पद्मनाभं सुरेसं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं सुभागं ।
लक्ष्मीकांतं[2] कमलनयनं योगभि ध्यांनगम्यं
वंदे विश्वं भवनभयहरं विष्णु वंदे[3] मुकंदं ॥ २

३. यत्पुन्यं तीर्थजात्रायां यत्पुन्यं साधुदर्शने ।
यत्पुन्यं तर्पणं श्राद्धे तत्पुन्यं वंशसोधने[4] ॥ ३

॥ कवित्त ॥

४. कहे एम मुचकुंद सुणो षित्री धरपती ।
दुरभिष्ये अन दांन जेठ पो दीयै उकती ।
वीस षंडे सोव्रन दीयै कुरषेत मझारह ।
मकरे तिल प्रयाग सहस मण दीयै उदारह ॥
गऊ सहस गया कोठै दीयत, लाष जती भोजन वली ।
फलो इतो होइ कहि रायरिष, सुणत एक वंशावली ॥ १

५. गउ दांन धर दांन दांन गज वाज समप्पण ।
कनक दांन जल दांन दांन अंन अंवर भूषण ।
गंगा गया प्रयाग गंगासागर गोमती ।
सनांन कीयां फल जितो तिनो द्विजवंसकिरती ।
निज श्रवण सुणत फल उपजै, गुरु वंसावली अरघ करि ।
वोह राजधणी गज वाज हुइ, हरत लहै मचकुंद वर ॥ २

---

1 B श्रीराठोडांरी । [1] प्रारंभके ६ पद्य C प्रतिमें नहीं है । 2 B लिक्ष्मीकांता । 3 B विष्ण वंदे मुकंदे । 4 यह श्लोक B में नहीं है ।

६. ब्रज देशां चंदण वनां मेर पहाडां मोड ।
उदधि सरां वासिग नगां ज्यु राजकुली राठोड ॥ १

॥ कवित्त (BC अथ नीसरणी वंध कवित) ॥

७. अंवर मेर आधार मेर अंवर आधारै ।
धरा सेस आधार सेस कोरंभ आधारै ।
कोरंभ नील आधार नीर अनलां आधारां ।
अनल सगति आधार सगति करतार सधारै ।
करतार एक भीनो रहै, कवि मरचि वीजे वयण ।
गोविंद भणे गोविंद भणि, भणि [1]भणि रे गोविंद भणि ॥ १

८. धरा पवन संचरै पवन उपरि है जलहर ।
जलहर उपरि सूर, सूर उपरि है ससिहर ।
ससि उपरि है तार, तार उपरि ध्रूमंडल ।
ध्रूमंडल [2]उपरि नाखित्र, जहां ब्रहमंड कमंडल ।
ब्रहमंड कमंडल उपरै, तहां छै सिंभ निसंभ भणि ।
भो ब्रजनाथ वंधव वयण, तो कमधजवंस उपरि कवण ॥ २

॥ वार्त्ता (BC अथ वार्ता) ॥

§१. प्रथम अपरंपर [3]पुरस सिष्ट रचणरी मनसा कीधी ।

॥ कवित्त ॥

९. पुरषोतम[4] चितवै श्रृष्टि व्यापार रचीजै ।
इम चितवतां आप सयन निद्रावसि सूजै ।
किता जुग विवसाय परम निद्राभर पोढयो ।
जोगनिद्रा जोगेस आठ क्रंम पवनह उठयो[5] ।
अंगुष्टमात्र वडपांन परि, चवद[6] जुग चतुरंग चर ।
जागीयो जांम जोवै जुगति, अवन रची नहु नर अमर ॥ १

१०. प्रथम सुमति[7] उतपन, सुमति ते [8]सगति उपनि ।
तेज अगनि उतपन[9], अगनिहूं जोति उपनी ।

---

1 BC भणि रे भणि । 2 A में 'उपरि' शब्द छूट गया है । 3 BC श्रीनारायणजी । 4 C पुरिषोत्तम । 5 C पवन उलटयो । 6 C चउद युग । 7 BC बुधि उत्तपन । 8 BC बुधितै । 9 BC उत्तपन्न ।

जोति हूंता हूअ फेण, फेणहूं इंड उपाया ।
इंड थकी हुअ[1] कमल, कमल विकसित[2] त्रिहूं काया ।
ब्रहमा विसन ईसर सुवर, केसव एक त्रय वप्प किय ।
रिदय निलाट[3] अरि[4] नाभिहूं, ब्रहमा विसन महेस थिय[5] ॥ ४

॥ वार्ता (B अथ वार्ता) ॥

§२. नाभि कमलथी [BC तो] ब्रहमाजी उपाया, रिदय कमलथी विष्णजी उपाया । निलाट कमलथी महादेवजी उपाया । ब्रहमाजीनै तो सिष्टरो व्यापार सूप्यो । विष्णुजीनै[6] भरणपोषण [B रो भंडार] सूप्यो । महादेवनै षपति सूपी, तु षपावतो जा । (BC महादेवजी तो रिष्यावंत त्युं षपति पिण सूपी । पाछला जीव वधता देषै तरै आगला जीव षपाय देवै ।) इण तरै सिष्टरी मंड ठहराई ।

॥ कवित्त ॥

११. वसुधा वासण[7] कज आदि सोई ब्रहम उपाया ।
ब्रम्ह कीय[8] सुविचार वसुह किण विध[9] वसाया ।
ब्रंम्ह [10]कमलथी बीज वृक्ष[11] सोई प्रथवी वायो ।
साषि[12] सहित पांगुरै सदल[13] फल फुलै छायो ।
मानव रूप फल मुष कमल, इसा[14] आइ अषै अई ।
मांनुक्ष[15] वृक्ष नवि नीपजै, कहो ब्रंम्ह कीधो कई ॥ १

॥ छंद जाति मोतीदांम ॥

१२. पयंपै पूरण आदि पुरुष, उपन्नै[16] ब्रह्मा ईस अलष ।
थया तिण रूप सरूप सुथट्ट, घटै[17] घटघाट वैराट सुघट्ट ॥ १
१३. उपजै[18] पिंड विना नहि इंड[19], उपना पिंड हूंता ब्रहमंड ।
इसी विधि[20] दषवि आदि अलष, प्रछन थया तदि आदि पुरुष ॥ २
१४. ब्रह्मा रुद्र विसन विचार, प्रथमी कीध प्रगट विहार ।
प्रथीवि जल वायस तेज आकास, प्रगट्टे पांचू तेज प्रकास[21] ॥ ३

---

1 B हुइ । 2 B विकसति । 3 C लिलाट । 4 B अरु । 5 A थीय । 6 A विष्णुनै । 7 A वासणि कज । 8 A कीयो । 9 A विवध वसायो । 10 BC ब्रहमा कायमल वीज । 11 BC वृष । 12 BC साप । 13 BC सुदल । 14 B ईसो । 15 C मांतुष्य । 16 BC उपना । 17 BC घडै । 18 BC उपजे । 19 A ईंड । 20 BC इसी दषवि । 21 A आकास ।

१५. मनछा इंछा[1] कीध सुकंद, इसी विधि ब्रह्मा कीध सुरिंद ।
न वाजै ताली एकण हाथ, निगम दुविधि कहै नरनाथ ॥ ४

१६. दुवै नर नारि उपाय नरिंद, विन्हे[2] सुष भोगै इंद नरिंद ।
निपाये[3] पाप धरम नि दांन, अवगति मति गियांन[4] धियान ॥ ५

१७. विन्हे पष कृषण सुकल विधांन, विन्हे वपु अंग सुदक्षिण वांम ।
ब्रह्मा दक्षण अंग वदीत, निपायो दक्ष प्रजापति मीत ॥ ६

१८. वामांग दक्ष रूपा त्रिय वंस, प्रजापति दीध प्रीया अवतंस ।
चवै चत्र वेद चवद सासत्र, चतुर्मुष वेदा वेद पवित्र ॥ ७

१९. कीया जग[5] जागि नवग्रह क्रंम, सुत्री वर कीध ग्रहस्था ध्रंम ।
करे संसार ग्रहस्थाचार, ब्रह्मा कीध प्रजा विवहार ॥ ८

२०. अठोत्तर पुत्री जाति अनूप, भला सुत दोइ हजार सरूप[6] ।
उपना एकण पिंड अनेक, हूवा संसार-व्यापक हेक ॥ ९

॥ कवित्त ॥

२१. ब्रह्मा आप चीतवै सिष्ट सगली वासिजै[7] ।
मांनव जन उपजै सो विधि साची परि किजै ।
आगि[8] उदक कुस गंग जिग[9] जागवि कुसम जल ।
वेदमंत्र उचरै मंत्र आहूत दे कमल ।
उचरे ब्रह्म इहां पुरस इक, जगन्य[10] पुरष जग्यो जहां ।
कासिब रिष सुरनर कहै, तेजवंत प्रगटयो तहां ॥ १

॥ दूहा ॥

२२. पुत्री प्रजापति तणी तेरै[11] कन्या नांम ।
कासिबसु पांणग्रहण करि वर कीधो विश्रांम ॥ १

२३. वर कीधो विश्राम,[12] वधीयो कुल-विस्तार ।
प्रथवी सारीमै प्रगट, परत न लभै पार ॥ २

---

1 C मनसा इंछा । 2 BC विनै । 3 BC निपावें । 4 A धीयांन, गीयांन । 5 BC जगि जाग । 6 B सभूप; C तनभूप । 7 A वासजे । 8 BC आदि । 9 BC जिगंन जागव । 10 B जगिन; C जिगन । 11 C तेरहै । 12 A तिणहूं प्रथवीमें ।

२४. परत[1] न लभै पार, तिण पसरी वेल अपार।
उत्तम मध्यम अधममैं, नर सुर नागकुमार ॥ ३
२५. नर[1] सुर नागकुमार, जल थल पुहवी घात जगि।
उदधि इला अवतार, वसुधा तो कासिप वधी ॥ ४

॥ अथ वार्त्ता ॥

§३. दक्ष प्रजापति राजा। तिणरै तेरै पुत्री हुई। तिक[2] राजा कासिपनै परणाई। तिणरो विस्तार कहै छै। प्रथम रांणी दैत्या १, तिणरा तेतीस कोडि देवता हुवा। बीजी रांणी आदित्या २, तिणरा वहुत्तर[3] कोडि दांणव हुवा। तीजी रांणी कद्रु नांमा ३, तिणरा नवकुली नाग हुवा। नागांरा नांम[4] – तक्ष नाग १, पदम नाग २, महापदम नाग ३, संषचूड नाग ४, पुलस्त नाग ५, कंकोड नाग ६, परडोत्तर नाग ७, आठमो कंटक भुजपरि नाग ८, नवमो सेष नाग ९, ए नवकुली नाग उपना। चोथी रांणी विनीता ब्रहमाणी ४, तिणरै पुत्र ३– पहिलो नवनाटक[5] १, बीजो चंद्रमा २, तीजो कोरंभ ३। पांचमी रांणी भांनमती ५, तिणरै बारै आदित्य,[6] सतावीस नक्षत्र हुवा। छठी रांणी वरणतारा ६, तिणरै आसण गरुड पंखी पंषेरु[7] उपना। सातमी रांणी सत्यभांमा ७, तिणरै अठ्यासी सहस्र रषेस्वर हुवा। आठमी रांणी सुप्रभा ८, तिणरा १२ मेघ हुवा। नवमी रांणी कनकरेषा ९, तिणरा छतीस जाति पवन उपना[8]। दसमी रांणी कालंजरी १०, तिणरा पुत्र धूम्र १, पाषाण २, वासदेव ३, च्यार षांन[9] ४, चोरासी लष्य जीवाजोनि उपनी। इग्यारमी रांणी मेघनादा ११, तिणरै पुत्र छपन कोडि मेघमाला[10]। बारमी रांणी कालांसि १२, तिणरा[11] अष्टकुली पर्वत, षट् दर्शण, सात[12] समुद्र उपना। तेरमी रांणी षडनेत्रा १३, तिणरी[13] अढारै भार वनासपती हुई। ओ तेरै रांणीयांरो परवार जाणवो[14]।

§४. प्रथम तो सतयुगरी थापना। सतरै लाष अठावीस हजार वर्ष प्रमाण[15]। तिण जुगमांहे श्रीपरमेसरजी च्यार अवतार लीया। प्रथम मच्छा अवतार १,

1 C में ये दोहे उलट-पुलट क्रमसें लिखे हैं। 2 BC तिको। 3 B तिणरै बहोत्तर। 4 C में यह वाक्य नहीं है। 5 BC नारिक। 6 C १२ सूर्य १२ आदित्य हुवा। 7 BC पंषी जाति। 8 C आठमी रांणी कनकरेषा तिणरा छतीस जाति पवन उपना। नवमी रांणी सोमावती तिणरै चंद्रमा नै सूर्य उपना। 9 BC षांणि। 10 C मेघमालानै सोलै शृंगार हुवा। 11 A तिणरै। 12 A तीन समद्र। 13 A तिणरै। 14 C छे। 15 A सतयुग प्रमाण १७२८०००।

द्वितीय कूर्म अवतार २, तृतीय वाराह अवतार ३, चतुर्थ[1] नरसिंघ अवतार ४। (BC ए च्यार अवतार। तिण युगमाहे मनष्यरी काया सो ताड प्रमाण उंचपणै, १ लाप वरसरो आउषो। एकवार प्रसूत जुगलपणे। कल्पवृक्ष मनोकामना पूरै। एकवार वावै इकवीस वार लुणै। पुन्य विस्वा १९, पाप विसवो १।) एकवार प्रसूत जोडो जनमै[2]। सत्य माता, सत्य पिता, सत्यासत्य चालै[3]। प्रलै कालरी आदि श्री अवगतिरूप श्री परमेस्वरजी सिष्ट करता[4]। तिण जल सोषनै प्रथवी उपाई[5]। पवन पांणी आकास तेज उपाया।

(यहां पर BC मैं नीचे लीखे श्लोक मिलते हैं–)

२६. अंडजा पक्षसर्पाद्या पोतजा कुंजरादय।
रसजा मक्षीकीटाद्या नृगजाद्या जरायुजा ॥ १

२७. जूकाद्या स्वेतजा मच्छा कच्छाद्या च जलोद्भवा।
सुर वनस्पति कायस्यु उपपातका देवनारिका ॥ २

*

§५. तत्र प्रथम ॐकार शिव नै सक्ति व्रह्माथी सर्व सिद्धि उपनी। व्रह्मापुत्र सप्तरिप। व्रह्माकै टीकै तो मारीच १ आत्रेय २ भृगु ३ अंगराज ४ पुलहक्रत ५ पुलहस्त ६ वासिष्ट ७ ए सात रषेस्वर हुवा।

(इसके स्थान पर BC मैं निम्न लिखित पंक्तियां हैं–)

(तत्र प्रथम तो ॐकार १ सिव सक्ति २ व्यक्त ३ अनाथ ४ इंद्र ५ इंद्राधिप ६ वुदवुदाकार ७ व्रह्मा ८ ए आठ भ्रात्र[6] श्री परमेस्वरजी उपाया। व्रह्माथी सर्व सिष्ट उपनी। व्रह्मापुत्र सनक १ सनंद २ सनतकुमार ३ कपिल ४ वोट ५ ए तो पांच पुत्र व्रह्मारा। तिके तो जोगेस्वर हुवा। व्रह्मापुत्र आत्रैय १ भृगु २ अंगराज ३ धरम ४ पुलहक्रत ५ पुलहस्त ६ वासिष्ट ७ ए तो सप्त रषेस्वर हुवा।)

§६. व्रह्मारै सात पुत्री हुई– [7]दत्तकला १, अनार्या २, श्रद्धा ३, कीर्ति ४, अनुभवा ५, सांति ६, अरुधनी ७। ए सात पुत्री सातां रषेस्वरांनै परणाई। व्रह्मापुत्र मारीच तस्य भार्या[8] दत्तकला, तस्य पुत्र कासिव, [9]तिणरै ७ पुत्र। प्रथम तो सूर्य १, दुजो इंद्र २, उपेंद्र ३, गरुड ४, अरुण ५, सारथी ६, जटाय

1 BC चोथो। 2 BC में यह वाक्य नहीं है। 3 BC सत्य वाचा। 4 BC कर्ता। 5 BC जल सोषंत करिनै सिष्ट उपाई। 6 C भाई। 7 B कर्दमपुत्री दत्तकला। 8 A मारीच भार्या। 9 A कासिव पुत्र सूर्य १, इंद्र २।

७। जटाय पुत्र संपाति[1] । गरुड पुत्र कद्रुसेन। कद्रुसेन पुत्र नवकुली नाग। सूर्य पुत्र आत्रेय। आत्रेय भार्या अनुसया, पुत्र दत्तात्रेय १, चंद्रमा २, दुर्वासा ३। भृगु भार्या श्रद्धा नांम, श्रद्धा पुत्र कवि अपर नांम शुक्र। अंगराज भार्या कीर्त्ति, तस्य पुत्र वृहस्पति। [2]वृहस्पति पुत्र पुलहकृत [B भार्या मनभवा] तस्य पुत्र भारद्वाज। पुलहस्त भार्या सांति, तस्य पुत्र विश्वश्रवा। विश्वश्रवा[3] पुत्र कुबेर। कुबेर पुत्र नलकुवर। [4]कुबेर भार्या मणिग्रही, तस्य पुत्र नैकस। नैकस भार्या प्रकटा। प्रकटा पुत्र ३–रांवण १, कुभकर्ण २, वभीषण ३ [B पुत्री सुर्पनिषा ४]। वासिष्ठ भार्या अरुंधगा[5]। तस्य पुत्र पारासर। पारासर पुत्र व्यास कृष्ण १, दुजो दीपायन। दीपायन पुत्र सुषदेव तिको जोगेस्वर[6] हुवो।

॥ इति राजा कासिबरी साषा कही ॥

(BC इति ब्रह्मारी अवलादि रिषांरी साषा उतपति कही।)

इसके बाद BC में निम्न लिखित वर्णन लिखा हुआ है –

ब्रह्मा पुत्र दक्षि १, दुजो प्रजापति २। दक्ष भार्या प्रसूति पुत्री ४० जनमी जिणमै १३ कन्या तो कासिवने परणाई। सतावीस कन्या चंद्रमानै परणाई।

*

§७. अथ राजा कासिवरी अवलादि राजकुली राठोड वंसरी वंसावली वषांणीयै छै।

॥ कवित्त ॥

२८. कहै एम मचकुंद सुणो षित्री धरपती।
दुरभिष्ये अन दांन जेठ पो दीयै उकत्ती।
वीस षंडी सोव्रंन दीयै कुरषेत्त मझारह।
मकरे तिल प्रयाग सहस मण दीयै उदारह।
गऊ सहस गया कोठै दीयत, लाष जती भोजन वली।
फल इतो होय कहि राय रिष, सुणत एक वंसावली ॥ १

२९. गउ दांन धर दांन दांन गज वाजि समप्पण।
कनक दांन जल दांन दांन अन अंवर भूषण।

---

1 A जटाय ७ संपात ८। 2 B वृहस्पति पुत्र कच। पुलहकृत। 3 B विस्वश्रमा। 4 B विस्वश्रमा भार्या राक्षसणी तस्य पुत्र नैकस १। 5 अरुंधती। 6 महाजोगेस्वर।

गंगा गया प्रयाग गंगासागर गोमती ।
सनांन कीयां फल जितो तितो निजवंस कीरती ।
निज श्रवण सुणत फल उपजै, गुरुवंसावलि अरघ करि ।
वोह राजधणी गज वाज हुइ, हरत लहै मचकुंद वर ॥ २

३०. अडसठ तीरथ पुनि पुनि चंद्रायण तप तपीयां ।
एकादसी व्रत पुनि पुनि विष्णु नांम जपीयां ।
चांद सूरज परब पुनि पुनि कुरषेत जवायां ।
जिग जाप जप पुनि पुनि सिर तीरथ न्हायां ।
सांभलि वेद पुरांण पुनि, सो पुनि इतरो लहै ।
एक पुनि वंसावली, लाष पुनि सिरषो लहै ॥ ३

॥ दूहा ॥

३१. वंसावली सुणीयां थकां न रहै पाप लिगार ।
जनमैजै राजा सुणी गया कोढ अढार ॥ १
पीढी पीढी जाग फल वंसावली सुवषांण ।
मनमै मैल रहै न कदे ज्युं जल साबू जांण ॥ २

३२. कांनें कुल सुणीयां थकां पातिग दूर पुलाय ।
जिम पारस पाषांण ज्यु लोह कंचन होय जाय ॥ ३

३३. च्यार हित्या सब तै बुरी गोत हित्या ज विसेष ।
वंस सुण्यां पातिग टलै यामै मीन न मेष ॥ ४

३४. व्रज देसां चंदण वनां मेर पहाडां मोड ।
उदधि सरां वासिग नगां ज्युं राजकुली राठोड ॥ ५

॥ कवित्त ॥

३५. प्रथम आदि जुगादि मांन वसुधा वर क्षित्री ।
वलि राजा चकवै मानधाता चक्रव्रती ।
भारथ हुवो कुरषेत करणरो कथन रहावे ।
मछ भांण वाराह कीरत कमधजां भलावे ।
जै चंद हुवो दल पांगलो, असी लाष साहण सधर ।
छतीस वंस राजनकुली, वडो वंस राठवड घर ॥ १

३६. वंस पैतीसे वाच दीधी इसी दांणवे ।
सो जाणे ज्यो साच कीरति राठोडां कही ॥ ६

३७. राठोडांरी कुलत्रीया सीयला ग्रभ न धरंत ।
ज्यांहरा प्रीउ न भाजणा से भजणा न जणंत ॥ ७

३८. करण मरंतै युं कह्यौ आगलि सुर असुरांह ।
तुरकां वांण भलावीया कीरति रांठोडांह ॥ ८

॥ अथ पीढी वार्ता ॥

§८. आदि प्रथ[म] ॐकार, ॐकार पुत्र ब्रंमा, ब्रह्मा पुत्र कासिव, पुत्र सूर्य, सूर्य पुत्र आत्रैय, पुत्र मनुऋष, पुत्र देवभूत, पुत्र आकूति, पुत्र प्रसूति, पुत्र प्रीयवर्त्ति, पुत्र अगनिध्वज, पुत्र नाभिराजा, मोरादे भार्या पुत्र रिषभदेव। रिषभदेव भार्या २–सुनंदा १, सुमंगला २। सुनंदा पुत्र ४९ वडो भरत, सुमंगला पुत्र ४९, वडो वाहुवल। एवं पुत्र ९८। २ पुत्र षोलै लीना–नमि १, विनमि २। एवं रिषभदेव पुत्र १०० हुवा।

भरतरा केडायत हींदु छत्तीस राजकुली, वाहुवलरो केड मसुलमांन हूवा। रिषभदेवसु दोय राह फांटा। अठाताई तो सूर्यवंसी राजा कहीजता। भरत पुत्र सूर्यजिसा हुवो, तिण तो सूर्यनै मांन्यो, तरै सूर्य उपासी राजा हुवा। छत्तीस राजकुली मांनीजै छै। वाहुवल पुत्र सोमजिसा, तिण सोम चंद्रमानै मांन्यो। तिणरो केड सोमवंसी मुसलमांन कहीजै। चंद्रमानै मांनै छै। प्रथम राजथांन सुमेर पर्वत तलहटी, तठै सूर्यवंशनी थापना हुई। विनीता नांम नगर, नाभि राजा, रिष[भ]देव कवरपदे। तठै ईषागवंसनी थापना हुई।

*

[BC में ऊपरवाला प्रकरण निम्न प्रकार लिखा हुआ है–

§८, A. प्रथम तो एक श्री ओंकार अंतरजामी १, अंतररो आदि २, रो[1] अनादि ३, रो[2] फेन ४, रो[3] अरवुद ५, रो[4] वुदवुदाकार ६, रो जल ७, रो कमल ८, रो राजा ब्रह्मा ९, रो कासिव १०, राजारो[5] सूर्य ११, रो राजा[6] विस्वसेन १२, रो उभै विस्वराजा १३, रो फरसरांम नेत्र १४, रो प्रथीनाथ राजा १५, रो अभिसूर राजा १६।

अभिसूर राजा एकण छत्र सगली प्रथवी भोगवी। प्रथम राजथांन सुमेर गिर पर्वतरी तलहटी देवकन्या नांमे नगर वसायो। तठै सूर्यवंशरी थापना हुई।

सूर राजारो मारीच राजा १७, रो आत्रीय राजा १८, रो[7] प्रीयव्रत राजा

1 C आदिरो। 2 C अनादिरो। 3 C फेनरो। 4 C अरवुदरो। 5 C कासिवरो। 6 C सूर्यरो। 7 C आत्रीयरो।

१९, रो उतनपात राजा २०। उतनपात राजारै दोय पुत्र, एक तो धूजी, दूसरो देवभूत राजा २१, रो प्रीयवर्त राजा २२, रो अभिचंद्र राजा २३, रो आकूति राजा २४, रो अगनिध्वज राजा २५, रो नाभिराजा २६।

नाभि राजारी भार्या मरुदेवा। मरुदेवा पुत्र रिषभदेव २७। कुंकणदेस कुंकुमा[1] नामा नगरी। तठै इषागवंसरी थापना हुई। श्रीरिषभदेवजीरे एक सो पुत्र हुवा। तिणमैं ६४ तो ब्रांमण हुवा, ३६ छत्तीस क्षत्री हुवा।]

*

§ ९. अठै रिषभदेवजी[2] षटवंसरी थापना कीधी[3]। सूर्यवंस १, सोमवंस २, कुसवंस ३, हरिवंस ४, शिववंस ५, दैत्यवंस ६। ए छ वंसरी थापना कीधी[4]। तिणमै छतीस राजकुली निकली। तिको छतीस राजकुलीरो माथासिरो कहै छे।

(BC ए छ वंस हुआ। एकण एकण वंसमांहिसुं छे छे वंस नीकल्या। तो अवै छतीस राजकुलीरो माथासिरो कहीनै वतावै छे।)

§ १०. कनवजगढे राठोड १, धारानगरी पमार २, नाडूलगढे चहुवांण ३, आहडगढे गहिलोत ४, साहलगढे दहीया ५, दुरंगगढे सांणेचा[5] ६, पोहरगढे काबा ७, रोहलगढे सोलंकी ८, मांडवगढे पैर ९, चीतोडगढे[6] मोरी १०, मांडलगढे निकुंभ ११, आसेरगढे टाक १२, षेड पाटण गोहल[7] १३, मंडोवरगढे पडिहार[8] १४, पाटणगढे चावडा १५, पावडगढे झाला १६, करणेचगढे बूर १७, कलहटगढे कालवा[9] १८, भूमलगढे जेठवा १९, नारंगगढे रोहड २०, लोहमे गढे[10] बूसा २१, वंभणवाडगढे वाहड २२, जायलवाडै[11] पीची २३, वसीगढे[12] षडवड २४, रोतासगढे डोडा २५, हरमचगढे[13] हरीयड २६, कापडवारणगढे डाभी २७, ढिलीगढे[14] तुअर २८, हथणावरगढे कोरड २९, तारागढे गोंड ३०, [15]मगरूपगढे मकवांणा ३१, जूंनैगढे जादव[16] ३२, पोहरगढे कछवाहा ३३, लोद्रवगढे भाटी ३४, जालोरगढे सोनिगरा ३५, आवुगढे देवडा ३६।

....

(BC ए छत्तीस वंसरी थापना हुई नै माथासिरो कहीनै वतायो। वले रिषभदेवजीसु दोय राह चाल्या। रिषभदेव पुत्र भरथजी हुवा २८, भरथपुत्र सूर्यजिसा २९, तिण तो सूर्यनै मान्यो तिणरो केड सूर्य उपासीक हीदु

1 B कुकणदेस कुकमा नांम। 2 B में नहीं। 3 B कीवी। 4 C हुइ। 5 B सिणवार। 6 C चीत्रोडगढे। 7 B गढे गोहिल। 8 A पिडयार। 9 A काल्वा। 10 C लामहगढे। 11 BC जायलगढे। 12 BC वसहीगढे। 13 BC दरमनगढे। 14 BC दिली। 15 BC मगरोप, मकरोप। 16 BC जुने गढे यादव।

छतीस राजकुली हुई। सुलटै राह चाल्या। रिषभदेवजीरै पुत्र बाहुवली हुवो। तिणरो सोमजिसा राजा हुवो, तिको सोम चंद्रमा कहीजे, तिको सोमजिसा राजा चंद्र उपासीक मुसलमांन हुवो। तिणरो केड मुसलमांन चंद्रमानै मांनै छै। उलटै राह चालै। ए दोय राह रिषभदेवजीसुं फाटा।)

† इण छतीस राजकुली माहे राठोड मुगटमणि, परभोम पंचायण, छतीस राजकुली सिणगार, प्रथवीरा थंभ †।

॥ अथ पीढी ॥

§११. प्रथम राजा आदि, पुत्र भरत, पुत्र सूर्यजिसा, पुत्र ईषवाक। अठै इषागवंस थाप्यो। इषाग पुत्र समुद्र, पुत्र चंद्रसा, पुत्र बुध, पुत्र प्रनदैत्य, पुत्र विद्याधर १८, पुत्र मुचकुंद १९, पुत्र हिरणाकुस २०, पुत्र पहिलाद २१, पुत्र वैरोचन २२, पुत्र बलिराजा २३। तिको चकवे हुवो, तिणरो –

॥ कवित्त ॥

३९. पदम एक अंगरष्य पदम दोय हय पाषरीया।
पदम तीन पायक पदम दुय गैवर गुडीया।
पदम पंच धानुंष सबदवेधी नर निवै।
पदम आठ वाजित्र पदम सात सुचर लवै।
बलवंत सेन अति सबल सितर पदम हुइ संचरै।
बलिराव पयांणो संभली सुर मांनव विसहर डरै ॥ १

॥ दुहो ॥

४०. भली हुई जे न बली वैरोचन रै सथ।
मो देषंतां मंडियो हरि बलि आगलि हथ ॥ १

वलिराजा, पुत्र वाणांसुर २५, पुत्र शृंगदैत्य २६, पुत्र राजा दक्ष २७, दक्ष पुत्र सैसार्जुन २८, पुत्र करूप २९, क० पुत्र उग्रसेन, पुत्र वांणसेन ३०, पुत्र सिज्यासेन ३१, पुत्र श्रीपुज ३२, पुत्र मांन राजा ३३, पुत्र नमुचि राजा ३४, पुत्र भरह राजा ३५, पुत्र अंधक राजा ३६, पुत्र मेघासुर राजा ३७, रो कपिलसेन राजा ३८, रो भद्रसेन राजा ३९, रो भीवसेन राजा ४०, इतरा राजा तो सतजुग मांहे हुवा ॥ इति सतजुग संपूर्णः ॥

†† BC में यह पंक्ति नहीं है।

§१२. अथ त्रेताजुग प्रमांण ८६४००० । तिण माहे तीन अवतार अवगति रूपी हुवा । वांमन अवतार १, परसा अवतार २, श्रीरांम अवतार ३ । तिण जुग मांहे २१ ताड प्रमांण देह हुई । दस हजार वर्षरो आउपो । त्रीया प्रसुत वार २। पुन्य विस्वा १५, पाप विस्वा ५। तिण जुग मांहे १ वार वावे ७ वार लुणै ।

....

[ऊपर दी गई § ११ – § १२. कंडिकाओं के स्थान में BC में केवल निम्न-लिखित पंक्तियां मिलती हैं –

भरथ पुत्र सूर्यजिसा राजा हुवो २९, रो श्रियांस राजा ३०, रो समद्रसेन राजा ३१, रो चंद्रसेन राजा ३२, रो बुधसेन राजा ३३, रो प्रनदैत्य राजा ३४, रो रघु राजा ३५। गढ किलांणै राजथांन तठै रघुवंसरी थापना कीधी। रघु राजा ३५ रो विद्याधर राजा ३६, रो जलमेस्वर राजा ।]

....

त्रेताजुग मांहे राठोडवंस हुवो तिणरी वार्त्ता ।

§१३. राजा भीवसेन पुत्र मेघजल ४१, रो झलमलेस्वर राजा, तिण राजारै २ रांणी पिण पुत्र नही, देवी देवता घणा ही मनाया पिण पुत्र नही। इम चिंता करतां करतां केईक वरस वितीत हुवा तरै राजा श्रीपरमेस्वरजीरो ध्यांन करै, ध्यान करतां घणा वरस वीता तरै आकासवांणी हुई । श्रीपरमेस्वरजी गोतम रषेस्वरनु हुंकम कीधो । इसी उर्द्धवांणी सुणिनै राजा उठ्यो, प्रभाति हुवो तरै राजा वनषंडमै जाय, श्रीगोतम रषेस्वरजीनै तीन प्रक्रंमा देनै डंडोत कीयो, हाथ जोडिनै एकण पगवांणो उभो अस्तुति करै छै। तरै गोतम रषेस्वर आसीस दीनी नै राजानै पूछना कीधी – महाराजा ! चिंतातुर नजर आवो छो। तरै महाराज हाथ जोडि गोतमजीसुं अरज कीधी – महाराज ! पुत्र नही, धन माया हाथी घोडा देस मुलक कोठार भंडार अथिर छै, पुत्र विना राज काचो छै। तरै गोतमजी कह्यो – महाराज चिंता मती करो। जिग आरंभो, रिष तेडो। तरै राजा जिग आरंभ नै रिष तेडाया । तिका अठ्यासी हजार रषेस्वर आया, तेतीस कोडि देवता आया । राजा मनछा भोजन दे रषेस्वरांनै पोख्या, देवतांनै संतुष्ट कीया। तरै सारां ही मिलनै श्रीनारायणजीरो आवांन कीयो, मंत्र भणै छै। गोतमजी बोल्या – महाराज ! ए गंगधारा कुंड छै, इण कुडमांसु आप झारी भरि ल्यावो । राजा घणी चतुराईसुं झारी भरि रषीस्वरांरै हाथ दीनी। तरै श्रीगोत[म]जी श्री परमेस्वरजीरा नांवरी कलवांणी करि दीनी,

जावो राण्यांनै पावज्यो, महाराजरै पुत्र होसी। तरै राजाजी घरे पधारीया। उण राति राजाजी व्रतीक थ्या तिको सुपमै पोढ्या छै। आधी रातिरै समै महाराजनै त्रषा घणी व्यापी, तरै पवास कनासु जल मंगायो। तरै पवास असमझ थकै मंत्री झारी हाजर कीनी। तरै राजा निद्रालु थकै पांणी पीनो, वले पोढ रह्या। प्रभात हुवो तरै मंत्री झारी मंगाइ, रांणीयांनै पावा। पवास झारी हाजरि कीनी। देषै तो झारी पाली। तरै षवासनै पूछ्यो—पाणी कठै? तरै पवास कह्यो—महाराज! जीवरी अमां पावु तो अरज करु। तरै महाराज कह्यो—कहि; महाराज! आप पाणी मंगायो तरै मै अग्यांनी थकै झारी हाजर कीनी, तरै महाराज पांणी पीनो। इसी वात सांभलिनै महाराज दुचिता हुवा, घणै कष्ट पांणी पैदास कीधो थो तिको निरफल गयो। तरै महाराज उभरांणे पगे गोतमजीरा पगां गया। प्रणांम करि अरज कीधी—महाराज अग्यानपणै मंत्रीयौ पांणी पवास मोनै पायो। तरै गोतमजी कह्यो—यंद भाव्यं भविष्यंति, गर्भ निर्फल नही जाय। रिष वचन मिथ्या नही। महाराजनै गर्भ रह्यो। तरै राजा दुचितो होइनै घरे पधारिया। अवै दिन दिन गर्भ वधतो जाय। यु करतां मास ४ तथा वीता। तठै कामेस्वर देशनो धणी महीयासुर नांमा दैत्य जुध करणनै आयो। माहोमांहि घोर जुध हुवों, तठे राजा जलमलेस्वर कांम आयो। तरै मनोरमा रांणी काठ चढण लागी। तरै आपरी कुलदेवता सांमरादेवी आराधी। तरै देवी आई तरै अरज कीधी—महाराज तो रिणसेझ पोढ्या छै, राज मोटा छो, वंसरी सरम राजनै छै, पाछै पुत्र नही, वंसनै राज मिल्यां ही गयो। तरै देवी कह्यो—तु जमां पातर राप, रिपांरा वचन पाली न जाय। तरै सांमरादेवी राजारी देही कनै आइ। राठो फाडि नै टावर काढि नै उरो लीनो। तिणनै दैत्यरूपी कीनो। आकास सीस, पाताल पग, तिण वालकरो नांम राष्टेस्वर दीनो। अति वलवंत अति भयंकर, च्यार कुलदेवी सहाय हुई। समणादेवी सरीर लांबो कीयो १, सांमरादेवी सरीर हलवो कीयो २, रांमादेवी सरीर अभंग कीनो ३, तारादेवी सरीर तेजवंत कीयो ४। राठेसुर दैत्य उठि नै महीयासुर दैत्य लारै दोड्यो, जुध कीधो, समणादेवी साथि झूझी, दैत्यने मारि लीयो, राष्टेस्वर राजारी जैत हुई। तरै गोतम रषेस्वर राष्टेस्वरनै आसीरवचन कहै।

॥ श्लोक ॥

४१. भाले भाग्यकला मुखे ससिकला लिक्ष्मीकला नेत्रयो
दांने देवकला भुजे जयकला युद्धे प्रतिज्ञा कला।

भोगे कोककला गुणे वयकला चिंतामणि समाकला
काव्ये कीर्तिकला तव प्रतिदिनं क्षोणीपती जायते ॥ १

राष्ट्रेस्वर राजानै श्रीगोतम रषेस्वरजी आसीरवचन दीधो। देवी प्रसन होय नै राष्ट्रेस्वरनै राज दीधो। कनवज नांमा नेर वसायो नै कनकमै गढ करायो, नववारी नगरी वसी, चोरासी चोहटा कीधा, धन धांन्य सोनो रूपो कपडो घृत तेल सर्व वस्तरी वर्षा कीनी दिन ७ तांई। गोतम रषेस्वरजी नै सांमरादेवी कुलथापना कीधी। राष्ट्रेस्वर राजारो केड राठोड कहीजसी। राठो फाडिनै काढ्यो तरै राठोड नांम दीधो, तिणथ्यी राठोड कहांणा। राष्ट्रेस्वर राजा महाप्रतापीक हुवो। राष्ट्रेस्वर राजाथ्यी राठोड वंसरी थापना हुई।

राष्ट्रेस्वर राजारो पुत्र संग्रामसेन ४१, रो राजा कनकसेन ४२, रो राजा महाबल ४३, रो मकराक्ष ४४ रो मांनवंत ४५, रो कांमकोटि ४६, रो राजा महीपति ४७ महाप्रतापीक हुवो। कनवज पार्श्वे महोरगढ वसायो। कनवजमांसु नीकले तिके कनवजीया राठोड कहीजे।

*

[नोट– BC में ऊपरवाली जलमलेस्वरकी वार्ताकी शब्दरचना निम्न प्रकार मिलती है –

§ १३,A. अथ वार्ता – जलमेस्वर राजारै दोय रांणी, सुप्रभा १ नै चंद्रकांता २। तिणां देवी - देवता घणा ही आराध्या पिण पुत्र नही, तद राजा श्रीपरमेस्वरजीरी भक्ति आदरी। माया राजभंडार हाथी घोडा राजरिधि अथिर दीठी। इम भक्ति करतां केईक वर्ष वितीत हुवा। तद श्रीपरमेस्वरजी राजानै एकाग्रचितसु भक्ति करतो दीठो, तरै प्रसन होय श्रीगरुडजीनै हुकम कीयो – मांहरो भक्त राजा जलमेसर चितातुर छै, तिणनै जायनै थीरप द्यौ। कहज्यौ, मांहरा तपोवनरै विषै श्रीगोतम रषेस्वरजी आया छै, तिणांरै पगे लागिनै परिक्रमा देनै, वस्त्र पात्र अंन पांणी संतोषिनै चरणामृत लेज्यौ, तरै रिष आसीस देसी, मनोवंछिना पूरण हुसी। इतरै गरुडजी राजा कनै आया। राजा उठिनै घणी प्रणपति कीधी। श्रीपरमेस्वरजी हुकम कीयो तिके समाचार राजानै कह्या। राजाजी घणा रजावंध हुवा, तरै गरुडजी तो अंतरध्यांन हुवा। प्रभाते राजा साथ सांमांन लेनै उभरणै पगे तपोवन जायनै श्रीगोतमजीरां पगां लागा, प्रक्रमा दीधी, डंडव्रत कीयो, हाथ जोडिनै सनमुख एकण पगवांणा उभा छै। तरै श्रीगोतम रषेस्वरजी आसीस दीधी।

॥ श्लोक ॥

४२. हिम ससिर वसंत ग्रीष्म वर्षा सुरेस्तु
स्वस्तन स्तपन वनांभो नेस गोक्षीर पानां ।
सुषम भुभव रायन त्वत् विषो जांति नासं
दिवस कमल लज्या सर्वरा रेण पंके ॥ १

इण भांति आसीस दीधी। राजानै पूछीयो आपनै किसी चिंता छै ? तरै महाराज हाथ जोडिनै अरज कीनी—महाराज ! पुत्र नही आ चिंता छै। तरै गोतमजी कह्यो—चिंता मति करो, पुत्र श्रीपरमेस्वरजी देसी। तरै श्रीगोतमजी अठ्यासी सहस्र रषेश्वर बुलायनै जिग मंडायो; आवांन कीयो, तेतीस कोडि देवता आया, घणा मिष्टांन मेवा पकवांन फल फूल करिनै राजाजी रषेस्वरांनै तेतीसकोडि देवतांनै संतोष्या। तरै गोतमजी राजानै कह्यो—महाराज ! ए गंगधारा कुंड छै, जिणमांसु आप जायनै घणी उजलाइसु झारी भरि ल्यावौ। तरै राजा झारी भरि रषेस्वरांनै आंणि सुंपी। तरै श्रीगोतमजी सर्व रषेस्वरां श्रीपरमेस्वरजीरा नांवरी कलवांणी करि दीनी। सारां रषेस्वरां आसीस दीनी—महाराज ! रांणीयांनै झारी मांहिलो जल पावज्यो, आपरै पुत्र होसी। राजाजी सीष मांगनै डेरै पधार्या। राति पडि गई तरै महराज उण दिन व्रतीक था, तरै झारी लीयां जतनांसु महल जायनै पोढ रह्या। पांणी प्रभाते सूर्यरै उदय रांणीयांनै पावसां, इतरै आधी रातिरै समीयै राजाजी त्रिषावंत हुवा, तरै षवास कनै जल मांग्यो। तरै षवास अजांण थकै मंत्री झारी आंण हाजर कीनी। राजाजी निद्रालु थकां पांणी पीधो। प्रभात हुवो महाराज सिर पाव पहरिनै राय आंगण आया। तरै झारी मंगाई, षवास आंण दीधी, देषै तो झारी षाली। तरै षवासनै पूछीयो झारी मांहिलो पांणी कठै ? तरै षवास अरज कीधी—महाराज ! जीवरी अमां पाऊ। तरै महाराज हुकम कीयो—साच कही, महाराज ! राजनै आधी रातिरी तिरषा लागी, महाराज जल मंगायो, तरै मै अजांण थकै आ झारी आंण हाजर कीवी, जल तो महाराज पीनो। इसी वात सांभलिनै महाराज दुचीता हुवा। घणा कष्टसुं पांणी पैदास कीनो थो। तरै ततकाल वले पाछा गोतमजीरां पगां आया। प्रणपति करिनै अरज कीनी—महाराज ! मंत्रीयो पांणी षवास अग्यांनपणै मोनै पायो। तरै श्रीगोतमजी बोल्या—यदभाव्यं भविष्यंति। राजाजी रिषांरा वचन मिथ्या न हुवै। गर्भ तो राजानै रह्यो। तरै राजा निमस्कार करि सीष मांगिनै घरां

पधारीया। दिन दिन उदर वधतो जाय, थांनक विना मस्ततरो सोच हुवो। इतरामै कांमेस्वर देशनो धणी महीयासुर नांमा दैत्य राजासु जुध करणनै आयो। महा रिणसंग्रांम घोर जुध हुवो। तरै जलमेस्वर राजा पूरां लोहां वाजिनै कांम आया। छ मासरो गर्भ पेट माहे छै। इतरे मनोरमा रांणी काष्ट चडतां कुलदेवता सांमरादेवी आराधी। महाराज रिणसेझ पोढीया छै तठै आया। मनोरम रांणी माताजीसु अरज कीनी—राज मोटा छौ, राज तो गयो पिण कुल ही विछेद जातो दीसै छै। तरै सांमरादेवी दीठो, राजारै पेट छ महीनांरो आधांन छै। तिको राठो फाडिनै टावर उरो लीयो नै मनोरमा रांणीनै कह्यो—थे जमां षातरि राषिनै काष्ट चढो, आपरो कुल उजलो करो। म्हे इण वालकनै दैत्यरूपी करिनै वंस वधारसां। तरै रांणी सुप्रभा १, दूजी चंद्रकांता २ ऐ तो काष्ठ चढी। इतरामै सांमरादेवी वालनै दैत्यरूपी कीयो। महावलवंत अति भयंकर आकास सीस, पाताल पग, महा मथल सरीर कीधो। च्यार देवी सहाय हुई। सांमरादेवी सरीर लांवो कीयो १। रांसादेवी सरीर अभंग कीयो २। समणादेवी सरीर हलवो कीयो ३। तारादेवी सरीर तेजवंत कीयो ४। वालकनै गोतमजीरां पगां लगायो, तरै गोतमजी आसीस दीधी।

॥ काव्य ॥

४३. भाले भाग्यकला मुखे ससिकला लक्ष्मीकला नेत्रयो
दांने देवकला भुजे जयकला बुद्धे प्रतिज्ञा कला।
भोगे कोककला गुणे वयकला चिंतामणि स्माकला
काव्ये कीर्तिकला तव प्रतिदिनं क्षोणीपति जायते ॥ १

इसो आसीर्वचन देनै वालकरो नांम राष्टेस्वर दीधो। गोतमगोत्री थापना करि, राज्यतिलक करि, राष्टेस्वर राजानै विदा कीयो। तिके राष्टेस्वर राजा महीयासुर नांमा दैत्य लारै दोडिनै जाय पुहतौ, महीयासुरनै मारि लीयो। राष्टेस्वर राजारी जैत हुई। राष्टेस्वर राजा हुंती कुल राठोड कहांणा, तठा हुंती राठोड कहीजै छै ३८।

राष्टेस्वर राजा रो कनकसेन राजा ३९, तठा हुंती करणाट देस राजथांन हुवो। कनकसेन राजा महाप्रतापीक हुवो, विधांनीक राजा वडो धरमातमा हुवौ। तिको गयाजीरै कोठै पिड भरांवणनै गया थ्या, पाछा चलतां थकाँ मारगमै भोमीया

उठ्या, भोमीयांसु लडाई कीनी । भोमियांनै मारि धरती सरद करि, आपरै नांमै कनवज सहर वसायो नै राजथांन वांध्यो । तठा हुंती कनवजीया राठोड कहांणा ।]

*

§१४. महीराजारो पुत्र सूरधांम ४८, रो नंदराजा ४९, रो कुंभराजा ५०, रो दिनपति राजा ५१, रो भागनंद राजा ५२, रो सुपानंद राजा ५३, सुपानेर वसायो, महाप्रतापीक हुवो । सुपानंद राजारो पुत्र उग्रनाभि ५४, रो धर्मध्वज ५५, रो मकरध्वज ५६, रो मृगनाभि ५७, रो अमृतकोटि ५८, रो अंबरीष ५९, रो द्रढरथ ६०, रो पुण्यकेत ६१, रो नैनसार ६२, रो रतनप्रभ ६३, रो इंद्रदेव ६४, रो विस्वभूषण ६५, रो सारसेन ६६, रो धरमसेन ६७, रो पदमसेन ६८, रो रुकमांगध ६९, रो जयसेन ७०, रो विश्वसेन ७१, रो पुरसोतम ७२, रो कदंवसेन ७३, रो पुन्यसेन ७४, रो कोसंभ ७५, रो विजैसेन ७६, रो राजा सनकादिक ७७, महादेवजी आराध्या ।

सनकादिकरो राजा अक्रूर हुवो ७८ । तिणथी राठोडांरी अक्रूर सापा नीकली । सापारा धणी श्रीमहादेवजी हूवा ।

अक्रूर राजारो पुत्र बुधसेन राजा, तिण वधनावर वसायो, रो जससेन ८०, रो मांनध्वज ८१, रो अगनिभूति ८२, रो शिवभूत ८३, रो देवभूति ८४, रो भोजराजा ८५, रो मोलि राजा ८६, रो जितसत्रु राजा ८७, रो संभेरी राजा ८८, जिण सांभर सहर वसायो । संभेरी राजा पुत्र जसोधर ८९, रो गुणभद्र ९०, रो मनोरथ १००, रो मंनाकुथ १०१, रो श्रीवछ १०२, रो धरणीधर १०३, रो सिधारथ राजा १०४, रो पुरंदर राजा १०५ । तस्य–

॥ काव्यं ॥

४४. श्रीमत् राष्ट्रवंसे नृपवरयसोराज्ञसिद्धार्थाभिधानो
भूपस्तस्यात्मजो भू नवलष्य तुरगा मेदनीयां बभूव ।
द्वात्रिंसलष्य जोधा सिसलष्यकरणो द्वंद्व देशां द्विराजा
भूमौ राज्यं चकार कनकमयद्युतिः नांम पोरंदरश्च ॥ १

पुरंदर राजा पुत्र भोमपाल १०६, रो राजा गोपाल १०७ ।

[BC में यह § १४ वीं कण्डिका निम्न प्रकार लिखी गई है–

कनकसेन राजारो विक्रमसेन राजा ४०, महाप्रतापीक नांमी राजा

हुवो । विक्रमसेनरो मचकुद[1] राजा ४१, रो हिरणाकुस[2] राजा ४२, रो पहलाद राजा ४३, रो वैरोचन राजा ४४ ।

॥ दूहो ॥

४५. वैरोचन तन वहरीयो विप्र छुडायें वाल ।
तिण पुन्यथी पुत्र पांमीयो बलिराजा विरदाल ॥

† वैरोचनरो वलि राजा ४५ । वलि राजा वडो चक्रवै हुवो † तिणरो –

॥ कवित्त ॥

४६. एक पद्म अंगणै पद्म दोय हैवर पाषरीया,
पांच पद्म पायक पद्म दोय गैवर जुडीया ।
सात पद्म धानंष सवदवेधी नर निवै,
एक पद्म वाजित्र पद्म सित्तरि दल धवै ।
वलवंत सेन अतिघण सवल सब मिल एकठ संचरै ।
वलिराव पयांणो सांभली सुर मांनव विसहर डरै ॥ १

॥ दूहो ॥

४७. भली हुइ जे नही वली, वैरोचनर सथ[3] ।
मो देषंतां मंडीयो, हरि वलि आगलि हथ[4] ॥ १ ॥

वलि राजारो वांणासुर राजा ४६, रो शृंगदैत्य राजा ४७, रो अधोदक्ष[5] राजा ४८, रो सैसार्जन[6] राजा ४९, रो सहस्रावाहु राजा ५०, रो करूपराजा ५१, रो उग्रसेन राजा ५२, रो वांणसेन राजा ५३, रो सिज्यास राजा ५४, रो श्री मुंजराजा ५५, रो नमुचि राजा ५६, रो मांनराजा ५७। मांनराजारो भरह राजा ५८, रो अंध राजा ५९, रो मेघासुर राजा ६०, रो कपिल राजा ६१, रो भद्र राजा ६२ ।

इतरा राजा राठोड वंसी सतयुग[7] माहे हुवा । वडा साकाधर प्रतापीक राजा हुवा ।

॥ इति सतयुग संपूर्ण ॥

1 C मचकुंद । 2 C हिरणांकुश । †–† यह पंक्ति C में नहीं हैं । 3 C सत्थ । 4 C आगल हत्थ । 5 C अपोदक्ष । 6 C सहस्रार्जन । 7 C सतजुग ।

अथ त्रेतायुग प्रमांण वर्ष १२०००० लाष १६ हजार। तिण युग माहे तीन अवतार अवगतिरूपी हुवा। वांमन अवतार १, परसा अवतार २, श्री रामा अवतार ३। तिण युगमाहे २१ ताड प्रमांण देहमांन, दस हजार वर्षरो आउषो, त्रिया पद्मत वार २, पुन्य विस्वा १५, पाप विस्वा ५। एक वार वावै सात वार लुणै। तिण जुगमाहे राठोडवंसी राजा कुण कुण हुवा ?।

भद्रसेन राजारो संग्रांमसेन राजा ६२, रो महाबल राजा ६३, रो मकराष्य[1] राजा ६४, रो मांनवंत राजा ६५, रो कांमकोट राजा ६६, रो महीपति राजा ६७।

महीपति राजा वडो प्रतापीक हुवो। कनवज पार्श्वे महोरगढ वसायो।

महीपति राजा रो सूरधांम राजा ६८, रो नंद नांम राजा ६९, रो कुभ[2] राजा ७०, रो दिनपति राजा ७१, रो भागनंद राजा ७२, रो सुषानंद राजा ७३, रो उग्रनाभि राजा ७४, रो धरमध्वज राजा ७५, रो मृगनाभि राजा ७६, रो अमृतकोट राजा ७७ रो, अंबरीष राजा ७८, रो रिदयसेन राजा ७९, रो द्रढरथ राजा ८०, रो दिष्यकेत राजा ८१, रो नैनसार राजा ८२, रो रतनप्रभ राजा ८३, रो इंद्रदेव राजा ८४, रो विश्वभूषण राजा ८५, रो सारसेन राजा ८६, रो समर्द्धज[3] राजा ८७, रो पदमदेव राजा ८८, रो भूरदेव राजा ८९, रो रुपमांगध राजा ९०, रो जयसेन राजा ९१, रो विश्वसेन राजा ९२, रो पुरसोतम राजा ९३, रो कदंवसेन राजा ९४, रो पुनिवंत राजा ९५, रो कोसंभ[4] राजा ९६, रो विजयसेन राजा ९७, रो सनकादिक राजा ९८, रो अक्रूर राजा ९९।

अक्रूर राजा महाप्रतापीक हुवो। महादेवजी आराध्या तरै [सिवजी प्रसन होयने] छतीस देसरो राज दीधो। तिणथी राठोडांरी अक्रूर साषा कहांणी। साषारा धणी श्री महादेवजी हुवा। अक्रूर राजारो[5] बुद्धिसेन रांजा।† तस्य –

॥ कीर्तिकाव्यं ॥

४८. श्रीमन्मालवमंडलेऽतिरुचिरे श्रीराष्ट्रकूटोद्भव
तत्रा भूधर बुद्धिसेननृपति वर्द्धनपुरो वासितं।
जेनास्मिश्च पुरे कृता बहुनरो राज्ञा समूहा सदा
स्वारीणां वनिताकटाक्षसहिते चिच्छेदयन् नृपमस्तकान्॥ १ ॥†

---

1 C मकर राक्ष। 2 C कुंभ। 3 C समूर्द्धज। 4 C कोसंवसेन राजा। 5 C अक्रूरसेन। † चिह्नाङ्कित पाठ C में नहीं है।

† बुधिसेन राजा वधनावर[1] वसायो। बुधिसेन राजारो जससेन राजा १, रो मांनध्वज राजा २, रो अग्निभूत राजा ३, रो शिवभूत राजा ४, रो संभेरी राजा। जिण सांभर वसायो[2]। संभेरी राजारो जसोधर राजा ५, रो गुणभद्र राजा ६, रो मनोरथ राजा ७ रो सनांकुस राजा ८ रो श्री वछ राजा ९, रो धरणीधर राजा १०, रो सिधार्थ राजा ११ रो पुरंदर राजा १२। तस्य –

॥ कीर्तिकाव्यं* ॥

४९. श्रीमत् राष्ट्रवंसे नृपवरयसो राज्ञ सिद्धार्थ विधानो,
भूपस्तस्यात्मजो नवलषतुरगा मेदनीया बभूव।
द्वात्रिंशतल्लष्यजोधा सिसलषकरणो द्वंद्वदेसाधिराजा
भूसो राज्यं चकार कनकसयदुतिः नाम पोरंदरश्च ॥ १

॥ अथ पीढी वार्ता ॥

§ १५. कनवज पार्श्वे महोरगढ राज करता, तिण आपरो गुरुगोत्राचार वीसारचो, महापुन्यवंत तिण एक ब्रांमण देरासर पूजिवा भणी राष्यो, तिणनै घणां गांव सांसण दीना। ब्रांमणांरो वंस वधारचो। ब्रांसण घणा वध्या तरै राजा राजरो भार ब्रांमणांनै सूंप्यो। तरै राजतेज घटतो गयो नै ब्रांमणांरो तेज वध्यो। तरै राजानै द्रोह करिनै मारचो। ब्रांमणां महोरगढरो राज लीनो। धरतीरा धणी ब्रांमण हुवा। तरै राजारी रांणी कुवर कोकनंदनै ले नीकली, तिको वनषंडमांहि आषेटक करिनै आजी[व]का करै। आषेटक करतां महोरगढ पार्श्वे रणाव्रास गांम षेडै आया, तरै ब्रांमणांनै षबरि हुई। आषेटक रमतां एकाकीनै कुट मारो ज्यु षित्री निरवंस जाय। तरै धावड्या विदा हुवा। एक वड नै पीपल भेलो रूष महामोटो वृक्ष, तिण उपरै पंषणी माता सांवली व्याई छै, इंडा ४ मेलीया छै। चेलरां कनै वैठी महुरगढ सांमो जोवै छै। इतरै धावड्या आवता दीठा नै मनमै विचारचो, राज तो गयो पिण वंस जाय छै। तरै पंषणी देवी पांष समारिनै उडी, तिको कोकनंद कवरनै पांषांसै लेनै वडवृक्ष उपरि आंणि वैठी।

॥ दूहो ॥

५०. प्रोहित हुकम प्रधांण गढ द्रोहा छछोहा दिठ।
पंषणी पंष समारि परि राषे राज गरिठ्ठ ॥ १

---

1 C वधनोर। 2 C सांभर वसाई। * चिह्नाङ्कित पाठ C प्रति में नहीं है।

इण समै गोतम रषेस्वर घणा रिष संघाते वडरै पैलै कांनै आण विश्रांम कीधो। तठै शुक्राचार्य पिण रषेस्वरां कनै आया। रषीस्वरनै शुक्राचार्य वैठा वात करै छै। इतरै चेलरां सांवली मातानै वूज्यो—'माताजी! चून तो ल्यायां नहीं, भूषां मरां छां।' तरै माता वोली—'पुत्र! थे जांणो नहीं, आगै क्षत्रियां राज थो, अवै व्रांमणांरो राज छै, तठै चूनरो सांसो।' तरै पूछ्यो—'माताजी! क्षत्री कठी गया।' तरै माताजी वोल्या—'राजपुत्र इण वडवृक्ष हेठै छै।' 'तो माताजी इणनै राज दीजै। राजा गोपालरो पुत्र कोकनंद छै।' इसी वांणी शुक्राचार्य सांभली, महाचतुरवेदा सर्व जीवांरी भाषामै समझै छै। तरै शुक्राचा[र्य] सर्व रषीस्वरांनै पूछ्यो—'महाराज! ए पंषी जाति देवीरूप कांई कहै छै।' तरै रषीस्वर कहै छै—'अयं पंषणी राज्यं दापयंति।' शुक्राचार्य रषीस्वरांरी आग्या पाय कोकनंद कनै आयनै कहण लागा—'अहो राठोडवंस कुलदीप महावलवंत गोपालपुत्र कोकनंद! तोनै पंषणी माता कांई कहै छै। महाराज! राज महोरगढना धणी होस्यो, धरती पाछी वाहुडसी, पंषणी माता राज दे छै।' तरै राजा कह्यो—'जो मोहरगढ मांहरै हाथ आवसी, तो रावला पग पूजसां, राठोडांरा गुर पूजनीक होसो नै पंषीणी माता मांहरा कुल गोतमैं दीहाडी छै। महोरगढरो राज पंषणी माता दिरावै तो राठोडवंस पंषणी माता पूजसी।' तरै पंषणी माता, शुक्राचार्य, रषीस्वरां वाचा दीधी—'थाहरी जैत होसी।' प्रभात हुवै महोरगढ जाय लागो। तरै कोकनंद राजा पंषणी मातारो हुकम ले शुक्राचार्यरा पग पूजि रिषीस्वरांरी दुवा लेनै महोरगढ जाय लागा। व्रांमणांसु लडाई कीधी, व्रांमण हारि छुटा, राजारी जैत हुई। महोरगढ हाथ आयो। तरै पंषणी माता गोत्र देवी थापी, शुक्राचार्य गुरु थाप्या, गोतम गोत्र थाप्यो। पंषणी माता लष्य हेम वतायो। व्रत २२०९९ फागुण वदि १४ राजा कोकनंद महोरगढ पायो। पंषणीरो दीधो राज छै, तठा पछै राठोडांरै पंषणी माता मांनीजै सांवली।

॥ अथ वार्ता ॥

कनवज पार्श्वे महोरगढ राज करै। तिण आपरा गुरु गोत्राचार विसारीया तिको महापुन्यवंत। तिन एक व्रांमण देरासर पूजिवा भणी राष्यो। पूजा घणी चलाई। ग्रांम देस देतां गांव गांव व्रांमण घणा वध्या [c व्रांमण देसरा धणी हुवा] व्रांमणांनै राजधानी सूपी। राजतेज घटतो गयो। व्रांमणांरो तेज वध्यो।

त्रांमणां गोपाल राजानै मारिनै महोरगढ लीधो। राणी कोकनंद कवरनै लेनै छांनै नीकली। तिको आरण्य अटवीमांहि छांनी रहै, फल फूल खायनै आजीवका करै।

॥ दूहो ॥

५१. पूरण वदन गोपाल नृप, मिले द्विजा भुज भार।
कोकनंद स्वच्छंदसु, मृगया रमत कुमार ॥ १

[BC में उपर्युक्त वर्णन की निम्न प्रकार वाक्य रचना मिलती है –

राजा गोपाल कनवज पार्श्वे महोरगढ राज करै। तिको आपरा गुरु गोत्राचार विसारिया, पिण तिको गोपाल महा पुन्यवंत। तिणै एक त्रांह्मणनें घर देहरासर पूजवा भणी राख्यो नें गांम गांम मांहे पूजा देहरां री वणी चलाई। फिर वांमणांने घणा गांव सूंप्या ओर आपरी राजधानी पिण वामणांनें सूपी। गांम देश देतां ब्राह्मण घणा वध्या।]

॥ वार्ता ॥

गोपालवंसी कोकनंद कवर आषेटक रमतां मोहरगढरी पापती रणवास गांम षेडै आया। तद त्रांमणां मचकूर कीयो–गोपालरो बेटो कोकनंद आषेटक रमतो मोहरगढरी पापती कोस १२ तथा १३ रणवास गांम षेडो छै तठै रहै छै। तिणनै घावडीया मेलिनै परो मरावो। इसो विचार करिनै घावड्या विदा कीया। इतरै सांवली चील माता, उण वनपंडमै वड नै पीपल भेलो रूप छै तिण उपरि सांवली माता ईडा मेलीया छै। पिण चूनरो तो कसालो घणो काढै छै। रूप बैठी चेलरांसु वात करै छै। इतरै[1] चेलरां माता सांवलीनै पूछीयो–'माजी भूपरो तो कसालो घणो, आजीवका तो निभै नही, भूपां मरां छां, चूण ल्यावो।' तरै पंखणी माता बोली–'बेटां! चून कठां हुंती ल्यावुं? धरती मै[2] पित्रीयां रो तो राज गयो, त्रांमण राज करै छै।' तरै चेलरां बूज्यो[3] –'माजी साहिब! पित्री कठै गया? तरै पंपणी माता कहै छै–'बेटां! इण महोरगढ गोपाल राजा राठोडवंसी राज करतो तिणनै त्रांमणां जहेर देनै परो मार्यो। महोरगढ त्रांमणां लीधो। धरती मै सारै ही त्रांमण राज करै छै। चून कठां हुंती मिलै?' तरै चेलरां फेर पंपणी मातानै पूछीयो–'माताजी! गोपाल राजारै पुत्र छै क नही?' तरै माता पंपणी कहै–'बेटां!

1 C इतरा में। 2 C धरती मांहे। 3 4 वले पूछ्यो।

एक नांनो कोकनंद कवर छै। तिको रांणी छांनै ले नीकली थी। तिको महोर-गढरी पापती रणवास गांव षेडै रहै छै। तिको आषेट करण[1] आहेडै रनमै फिरै छै। तिणनै मारणनै वासतै घावड्या विदा कीया छै। कोस १२ उपरि मांहरी निजरै आवै छै। कोकनंद कवरनै मारसी।' तरै चेलरां कह्यो—'माजी! कोकनंद कवरनै वचावो नै राज दिरावो, तो, धरती मै चूणरो सलूक हुवै।' तरै पंषणी माता पंष समारिनै उडी। तिको कोकनंद कवरनै पगांसुं उचाय पांपां विचै लेनै आपरै थांन ले आया। घावड्या वनपंड जोयनै परा गया[2]।

॥ दूहो ॥

५२. प्रोहित हुकम प्रयाण गढ, द्रोह जछोहा दीठ।
पंषणी पंष समारि करि,[3] राषे राज गरिठ ॥ १

॥ वार्ता ॥

मरणंत कष्ट हुती उवारिनै रूष परि[4] वैठा छै।

॥ श्लोक ॥

५३. उदयंति दिस पूर्वां, भूपतीः षोडसां कला।
अस्ताचल गत सद्य, मेखला भानुमंडले ॥ १[5]

॥ दूहो ॥

५४. तव तटि एक आरण्य विचि, रथ सथनां गजराज।
इत थे आए राज नृप, उत हुंते रिषराज ॥ १

इतरै मै वडरी पापती श्रीगोतम रषेस्वर घणां रिष संघाते आंणि डेरा कीना छै। इतरै शुक्राचार्य पिण गोतमजीसु आंणि मिल्या। रषेस्वर वैठा ग्यांन चरचा करै छै। इतरै चेलरां माता पंषणीनै कह्यो—'माताजी! रषेस्वर पिण अठै आया छै, तिको गोपाल राजारा पुत्र कोकनंदनै[6] लगन जवाडिनै[7] राज दिरावो।' सर्व रिष पिण आंणि भेला हुवा छै। शुक्राचार्य महा चतुर सर्व जीवांरी भाषामै समझै छै। तरै शुक्राचार्य श्रीगोतम रषेस्वरनै पूछीयो—'महाराज! ए पंषी जीव किसी भाषा बोलै छै?' तरै गोतमजी कह्यो—'ए पंषी युं कहै छै, नृप गोपाल पुत्र कोकनंदनै राज दिरावो।' सांवली मातारी भाषा सांभलि रषेस्वरांरी आग्या

1 C आषेटक रमतो। 2 C पाछा परा गया। 3 C समारिकै। 4 C ऊपरा। 5 C यह श्लोक नहीं है। 6 C भले लगन 7 C। जोवाडीने।

पाय शुक्राचार्य कहण लागा—'अहो राठोडवंस गोपालसुतन! रूपसु हेठा उतरो, थांनै माता पंपणी राज दिरावै छै। कोकनंद हेठो ऊतरिनै शुक्राचार्यरां पगां लागा, नै प्रक्रंमा देनै अरज कीवी—'महाराज! पंपणी माता राज दिरावै छै, नै आप पिण महरवांनी करिनै दिरावो छो, तो मोनै मोटो कीयो नै हुं आपरो नै माता पंखणी रो दास हुस्यु। आज पछै मांहरा राठोडवंसमै माता पंपणी पूजसी, राज मांहरा वंसमै पूजनीक गुरु होस्यो। इतरो धरतीमै राठोड वधसी, तिको माता पंषणी कुलदेवी करि मांनसी।' तरै शुक्राचार्य सपरो लगन महोरत जोय, श्रीगोतमजी सर्व रिपां समष्ये राजतिलक कीयो। आसिका देनै विदा कीया—'जावो महोरगढ ल्यो। महाराजरी फते हुसी।' तरै कोकनंद माता पंपणीरां पगां लागिनै, रिषेस्वरांरै पगे लागिनै, महोरगढ जाय लागो। व्रांमणांसु लडाई हुई। व्रांमण नाठा। राजा कोकनंदरी फते हुई, महोरगढ लीधो। तथा पछै पंछणी माता, गुरु शुक्राचार्य राठोडवंसमै पूजनीक छै। फागण वदि १४ शुक्रवार राजा कोकनंद महोरगढ पायो।

*

§ १६. कोकनंद राजारो पुत्र चिंतामणि १०७, रो प्रथीनाथ १०८, रो तेजभृंगाक्ष १०९, रो सिषरधूम ११०, रो विसवंध १११, रो क्षितनाथ ११२, रो तेजपाल ११३, रो रंगधांम ११४, रो वलभीम ११५, रो सुरपति ११६, रो रतनसेपर ११७, रो गुणसेषर ११८, रो महादैत्य ११९, रो चंद्रादैत्य १२०, रो कुवेर १२१, रो कुंथराजा १२२, रो मथुराजा १२३, रो हिरणाक्ष राजा १२४, रो पलवाक्ष राजा १२५, रो भावदेव राजा १२६, रो इंद्रादैत्य राजा १२७, रो मेरधृति राजा १२८, रो मेघध्वज राजा १२९, रो मांनादैत्य राजा १३०, जिण चहुंवांणवंसी राजा गोविंद, तिणनै मारिनै दिली लीधी। मांनादैत्यरो राजा जोवनास १३१, रो राजा मांनधाता १३२। मांनधाता मेडतो वसायो। षट षंड भोक्ता चक्रवै हुवो।

॥ कवित्त ॥

५५. चीस नील गय गुडीय पदम दस गयवर सझे,
पांच नील वाजित्र गुहिर सुर अंवर गजे।
तीन कोडि चलचलंत सूर फरके धानंषह,
पयदल अडव ज च्यार तास नह लाभै अंतह।

च्यार राज मिल संचरै सुर नर नाग मनि संकवै ।
चलचलंत प्रथी है कंप हुय चढै मांनधाता चकवै ॥ १

५६. नगरी जोजन वीस पिण वसै अनंतस,
द्वादश तस वाजार वसै चकवै दिक्षण दिस ।
सरवर दस सपत अठसै कूप वषांणू,
विमल वाव पंचसै नीर निरमल करि जांणू ।
दिन प्रति गुडी ऊछलै सदाणंद आणंद वै,
कुकमै नर नित भोगवै मांनधाता तिहां चकवै ॥ २

॥ वार्त्ता ॥

§ १७. ॐकारेश्वर महादेवरी थापना कीधी । तिहांथी मांनधाता तीर्थ कहांणो । मांनधाता पुत्र मुचकंद १३३, रो अजयाणंद राजा १३४, रो सूर राजा । जिणसूं धारनगरीरै धणी सिघलपति राजा पमार धरतीरै वेध सूर राजासू जुध कीधो । राजा सूर काम आयो । तरे कनवज भागी नै सूनी हुई । महोरगढनै कनवज पमांरा लीधी ।

सूर राजारो पुत्र कनकसेन राजानै अगस्त रिषेस्वर तिष्यनांमा षडग दीधो—थारी जैत होसी, महोरगढ नै कनवज हाथ आवसी इसी वाचा दीनी । तरै अगस्तजीरो हुकम ले नै कनवज जाय लागो, मांहोमाही जुध हूवो । सिघलपति राजानै मारि लीयो । तरै पमार भागा तिको लार कीनी थेठ धारनगर तांई मारांणा । धारनगरी राजा कनकसेन लीनी । पमार मारया, अमल वैसांण नै पाछो कनवज आय नै कनवज वसाई ।

कनकसेन राजारो १३५, रो धजराजा १३६, रो कमधज राजा १३७ महाप्रतापीक हुवो ।

अथर्ववेदरै अभ्यासै शुक्राचार्य नवग्रहानकूल करणापित मंत्रसाधना करी, श्रीमहादेवजी आराध्या । राजा कमधजनै राज दीनो । थिर लगनमाहे कमधजवंसरी थापना कीधी । गोतम गोत्ररी थापना । मरहटदेस, सूरपालदेस, कुकमानगरी मांहि थापना कीधी । फटिकमै मंदिर, स्वर्णमै गढ करायो । छत्र, चामर, नीसांण, कुकमानगररो राज दीधो । कांगरु देसनो राजा मारयो । लक्ष हाथी, नवलक्ष अश्व

पायगा हुई । अनेक विरुद विराजमान राठोड कमधजवंसरी थापना कीधी । तठा हुंती राठोड कमधज कहांणा नै पंषणीमाता कुल देवता ।

कमधज राजारो परधांस राजा १३८, रो रंगध्वज राजा १३९ । रंगध्वज राजा दिली लीधी । जसराज तुअरनै मारयो, दिली राठोडां लीधी । कनवजपुर पासि डाभिलपुर वसायो, राजा महाप्रतापीक हुवो ।

रंगध्वज राजारो पुत्र रतनध्वज राजा १४०, रो केसव राजा १४१, रो करणाट राजा १४२, रो दंतघाट राजा १४३, रो मावदेव राजा १४४, रो सांमसूर राजा १४५, रो आणंददेव राजा १४६, रो सहस्राभ्रम राजा १४७, रो सुदर्शन राजा १४८, रो त्रिकंस राजा १४९, रो हरचंद राजा १५०, रो रोहितास राजा १५१, रो धुसंधराजा १५२, रो भरथराजा १५३, रो सगरराजा १५४, रो असमंजित राजा १५५, रो असमांन राजा १५६, रो दिलीपराजा १५७, रो भागीरथ राजा १५८, रो काकुस्त राजा १५९, रो रघु राजा १६०, रो किलमपात राजा १६१, रो स्वांघल राजा १६२, रो मयंगन राजा १६३, रो वरण राजा १६४, रो सिद्धार्थ राजा १६५, रो मनमछक राजा १६६, रो अंवरीष राजा १६७, रो पुर्फेद्र राजा १६८, रो दुदभि राजा १६९, रो जजात राजा १७०, रो नभग राजा १७१, रो अज राजा १७२ जिण अयोध्यानगर वसायो । अज राजारो पुत्र राजा दसरथ १७३ । दसरथ पुत्र ४, राजा रांमचंद्र १, लछमण २, भरत ३, सत्रुघन ४. इतरा राजा राठोड-वंसी त्रेतायुग माहे हुवा । वडा साकाधर राजा हुवा ।

॥ इति त्रेताजुग संपूर्णः ॥

§ १८. अथ द्वापुरजुग प्रवेश ८६४००० वर्ष प्रमांण । तिण जुगमाहे कृष्णा अवतार १, बुधा अवतार २, ए दोय अवतार अवगतिरूपी हुवा । मनक्ष देह सात ताड प्रमांण । आयुर्वल वर्ष १ हजार, त्रीया प्रसूति वार ३, पुन्य विस्वा १०, पाप विस्वा १०, एक वार वावे, तीन वार लुणै । तिण जुगमाहे राठोड राजा श्री रांमचंद्रजी पुत्र २, लिव, कुस २. लिवरा राठोड नै सीसोदीया, कुसरा कछवाहा । लिवपुत्र राजा कमल १७५ । कमल राजारो अष्टवल राजा १७६, रो सनतकुमार राजा १७७, रो विक्रम राजा १७८, रो रुषमागद राजा १७९, रो श्रीवछ राजा १८०, रो नंद राजा १८१, रो नलघोप राजा १८२, रो अश्वद्धज राजा १८३ ।

अश्वद्धज महाप्रतापीक हुवो । जिण चीतोडरो धणी राजा कमलसूर गहिलोत

तिण सु जुध कीयो। कमलसूर गहिलोत पेत पड्यो। चीतोडगढ राठोडां लीधी।

अश्वद्धज पुत्र भूरदेव राजा १८४, रो गंभीर राजा १८५, रो संवर राजा १८६, रो नलजोति राजा १८७, रो सूरपाल राजा १८८, रो जगदीपक राजा १८९ रो कुभ राजा १९०, रो अनंगसेन राजा १९१, रो लपेस राजा १९१, रो लघु राजा १९२, रो भारथसेन राजा १९३, रो नंदभार राजा १९४, रो धीरसीह राजा १९५, रो देवकमल राजा १९६, रो अंतत्रिश राजा १९७, रो नराद्धिप १९८, रो कर्णसेन राजा १९९, रो रांमसेन राजा २००, रो जयदत राजा २०१, रो शिवदत राजा २०२, रो मयूरसेन राजा २०३। तस्य –

॥ कीर्तिकाव्य ॥

८७. श्रीमद्वैराष्ट्रदेसे तिलकपुरवरे पत्तने भूनरेसो
द्वात्रिंसद्भूमिपाला मणिमुगटधरा यस्य सेवामकार्षीः।
यत्रास्वाज्ञा नृपाणां ममनत सदा चान्यदेसाधिपानां
सर्वेषां भूपतीनां सुरमुगटसमो मयूरसेनाविधानो ॥ १ ॥

मयूरसेन पुत्र राजा ध्रुवसेन २०४, रो श्रीकंठ राजा २०५, रो धनजय राजा २०६, रो नरदेव राजा २०७, रो, प्रजापति राजा २०८, रो हरषेण राजा २०९, रो जयसेन राजा २१०, रो त्रंमसेन राजा २११, रो धृतराष्ट्र राजा २१२, रो सूरदेव राजा २१३। तस्य–

॥ कीर्तिश्लोकः ॥

८८. श्रीराष्ट्रवंसे तु करीटतुल्या भूपाधिपा कंकर्णस्य नाथो।
राज्ञ परोज्ञ श्रीसूरदेवो भूम्यां भवतु सूरसमांनतेजो ॥ १ ॥

सूरदेव राजारो पुत्र परतन राजा २१४, रो कादंब राजा २१५, रो उनमथ राजा २१६, रो जनकीर्ति राजा २१७, रो जगदीस्वर राजा २१८, रो प्रथीपाल राजा २१९, रो महीपाल राजा २२०, गोवर्द्धन राजा २२१, रो माथुर राजा २२२, रो हिरणकस्प राजा २२३, रो जालंधर राजा, २२४, रो धनजय राजा २२५, रो कमनीय राजा २२६, रो मालवेस राजा २२७, रो भीमसेन राजा २२८। तस्य –

॥ कीर्तिश्लोकः ॥

५९. उजेन्यां मालवदेसे भीमसेनं भवे नृप ।
सुनासीरसमां भोजा राष्ट्रवंसे प्रदीपक ॥ १ ॥

भीमसेन राजारो श्री हंस राजा २२९, रो मुकंददेव राजा २३०, रो मदभ्रंम राजा २३१, रो करवीर राजा २३२, रो विदुप राजा २३३, रो पवनंजय राजा २३४, रो महावल राजा २३५, रो चंडप्रद्योतन राजा २३६ मोटो साकाधर राजा हुवो उजेणी राजथांन । चंडप्रद्योतनरो चंद्रगुप्त राजा २३७, रो विस्वसेन राजा २३८, रो धरमरथ राजा २३९, रो धूम्रदैत्य राजा २४०, रो पसेनध्वज राजा २४१, रो मांनराजा २४२, रो मुकंदसेन राजा २४३, रो मदनसेन राजा २४४, रो गोवर्द्धन राजा २४५, रो विशालापति राजा २४६, रो सुमंगल राजा २४७, रो कंदर्प्पसेन राजा २४८, रो लोहिताक्ष २४९, रो नील राजा २५०, रो नलकूवर राजा २५१, रो मृगांक राजा २५२, रो काशीनाथ राजा २५३, रो कपिलसेन राजा २५४, रो कर्ण राजा । तस्य —

॥ कीर्तिश्लोकः ॥

६०. श्रीराष्ट्रवंसे नृपे जातो पार्थिवे पार्थिवो नर ।
हेमकांत महादांनी न भूतो न भविष्यति ॥ १ ॥

वडो दांनीस्वरी हुवो, सवाभार सोनो दान देतो । राजा कर्णरो पोहर वाजै । कर्णपुत्र सोमेस्वर राजा २५६, रो दुरजोधन राजा २५७ । दुरजोधनरो जव राजा २५७, रो चित्रांगद राजा २५८, रो चित्रवाहु राजा २५९, रो जनमेजय राजा २६०, रो सहस्रानीक राजा २६१, रो सहस्रावाहु राजा २६२, रो हरिचंद्र राजा २६३, रो वेणीवछ राजा २६४, रो तरीवाह राजा २६५, रो चक्रधारी राजा २६६, रो धांनष राजा २६७, रो सिधार्थ राजा २६८, रो नंदवर्द्धन राजा २६९, रो सनतकुमार राजा २७०, रो कमोद राजा २७१ । इतरा राजा राठोड वंसी द्वापुरजुगमाहे हुवा । पंपणीमाता सरणागती । इति द्वापुरजुग संपूर्ण ॥

[BC में ऊपरवाला वर्णन निम्न रूप में लिखा गया है —

§ १९. राजा कोकनंदरो राजा चितामणि १६, रो व्रजनाथ राजा १७, रो तेजभृंग राजा १८, रो कृत व्रंह्म राजा १९, रो सिपरध्वज राजा २०, रो विसवंध राजा २१, रो क्षितनाथ राजा २२, रो तेजपाल राजा २३, रो रंगधांम राजा २४, रो

वालसोभ राजा २५, रो सुरपति राजा २६, रो रतनसेप राजा २७, रो गुणसेपर राजा २८, रो महादैत्य राजा २९, रो चंद्रादैत्य राजा ३०, रो भावदेव राजा ३१, रो इंद्रादैत्य राजा ३२, रो कुबेर राजा ३३, रो कुंथ राजा ३४, रो हिरणाक्ष राजा ३५, रो पलत्राक्ष राजा ३६, रो मेरध्रुति राजा ३७, रो मेरध्वज राजा ३८।

चहुवांणवंसी राजा गोविंद दिलीरो धणी धरतीरै आंटै मेरध्वज राजासु लडाई कीधी। मेरध्वज राजा कांम आयो।

मेरध्वज राजारो मांनादैत्य राजा ३९, जिण वापरो वैर लीधो। गोविंद राजानै मारि दिली राठोड मांनादैत्य राजा लीधी। महा सुदि १० पाट वैठो।

मांनादैत्यरो राजा जोवनास ४०, रो राजा मांनधाता ४१। मांनधाता मेडतो वसायौ। चक्रवै हुवो।

॥ कवित्त ॥

६१. चकवै मांन नरिंद भोगवै लोक तिडोत्तरि,
बार वरसे वरनारि पद्म द्वादश मिल पषर।
हसती पद्म सपत ओटगिण पद्म चिडोत्तर,
वीस अरब वाजित्र धनुंष धरि अरब बहोत्तरि।
नरनरिंद नरपती महाजोध जोधार नर।
फेरवै आंण चिहु चकमै इसो मांनधाता कुंतधर ॥ १ ॥

६२. वीस नील गय गुडीय पद्म दस गैवर सझे,
पांच नील वाजित्र शुहिर सुर अंबर गजे।
तीन कोडि चल चलंत सूर फरके धानंषह,
लूटंबर वरवांन तास नह लाभै अंतह।
च्यार राज मिल संचरै सुर नर नाग मन संकवै।
चलचलात पृथ्वी हे कंप हुइ चढै मांनधाता चकवै ॥ २ ॥

६३. नगरी जोजन वीस वास पिण वसै अनंतस,
द्वादस सत बाजार वसै चकवै दिक्षण दिस।
सरवर दस सपत अष्टसै कूप वषांणु,
विमल वाव पांचसै निरमल नीर करि जांणुं।

दिन प्रत गुडीय उछलै सदानंद आणंद वै ।
कुंकमै नैर[1] नित भोगवै मांनधाता तिहां चकवै ॥ ३ ॥

§ २०. वार्त्ता–उँकारेस्वर महादेवरी थापना कीधी । तठाथी मांनधाता तीर्थ कहांणो । २३५ वर्ष राज्य पाल्यो । मांनधाता राजारो मचकुद राजा ४२, रो चत्रवाह राजा ४३, रो अजयाणंद राजा ४४, रो धरधज राजा ४५, रो कमधज राजा ४६ ।

§ २१. वार्ता–कमधज राजा महाप्रतापीक राजा हुवो। अथर्वणवेदरै अभ्यासै शुक्राचार्य नवग्रह सानकूल करणापित अगनिसुं होम करि मंत्र साधना कीवी । श्रीमहादेवजी आराध्या । राजा कमधजनै राज दीयो । थिर लगनमाहे कमधज-वंसरी थापना कीधी । गोतम गोत्ररी थापना कीवी । मरहठ देस सूरपाल नांम नगरीमांहि थापना कीवी । फटिकरतनमै स्वर्णमै गढ करायो । छत्र, चांमर, नीसांण, कुकमानगररो राज दीधो । पंषणी मातारा प्रतापथी कांगरु देसरो राजा मार्यो । लक्ष हाथी मदोनमत्त, नव लष्य अस्त्र पायगा हुई । अनेक विरद विराजमांन राठोड कमधजवंसरी थापना कीधी । तठा पछै राठोड कमधज कहांणा । राजा कमधजरो पर धांम राजा ४७ रो रंगध्वज राजा ४८ ।

रंगध्वज राजा जसराज तुअर दिलीरो धणी, तिणनै मारि दिली राठोडां लीधी । कनवज पासि डाभिलपुर वसायो । रंगध्वज राजा महाप्रतापीक हुवो ।

रंगध्वज राजारो राजा रतनध्वज ४९, रो राजा केसव ५०, रो भावदेव राजा ५१, रो सांमसूर राजा ५२, रो आणंददेव राजा ४९, रो सहस्राभ्रंम राजा ५०, रो मदभ्रंम राजा ५१, रो धर्म राजा ५२, रो धुधमार राजा ५३, रो अंगराज राजा ५४, रो पुफक राजा ५५, रो अतिविक्रम राजा, ५६, रो त्रिसंक राजा ५७, रो हरचंद राजा ५८, रो रोहितास राजा ५९, रो असमजित राजा ६०, रो असमांन राजा ६१, रो धरमागद राजा ६२, रो रुपमागद राजा ६३, रो संतांन राजा ६४, रो सगर राजा ६५, रो दिलीप राजा ६६, रो भागीरथ राजा ६७, रो पुफेद्र राजा ६८, रो दुदभि राजा ६९, रो जजात राजा ७०, रो नभग राजा ७१, रो अज राजा ७२, रो दसरथ राजा ७३, रो श्रीठाकुर श्रीरामचंद्रजी, लछमणजी, भरतजी, सत्रुघन । इतरा राजा श्रीराठोडवंसी त्रेतायुगमाहे हुवा । वडा साकाधर राजा हुवा । इति त्रेतायुग संपूर्ण ।

1 C कुंकमनयर ।

§ २२. अथ द्वापरयुग प्रवेस वर्षः ८ लाप ६४ हजार द्वापरयुग प्रमांण । तिण युगमाहे अवगतिरूपी दोय अवतार हुवा । कृष्णावतार १, बुधावतार २ । मनुष्य देहमांन सात ताड प्रमांण, आयुर्वल वरष एक हजार, त्रीया प्रस्नुत वार ३, पुन्य विस्वा १०, पाप विस्वा १० । एक वार वावै च्यार वार लुणै ।

तिण युगमाहे राठोडवंसी राजा कितरा हुआ तिके कहै छै ।

दसरथपुत्र श्रीरांमचंद्रजी पुत्र राजा लिव[1] ७५, नै कुस २, दोय पुत्र श्रीरांमचंद्रजीरै हुवा । लिवरा केडायत तो राठोड नै सीसोदीया । कुसरा पगरा[2] कछवाहा [हुवा] । लिवजी पुत्र राजा जल ७६ । जल राजारो कमल राजा ७८, रो अष्टवल राजा ७९, रो सनतकुमार राजा ८०, वरनंद राजा ८१, रो अश्वध्वज राजा ८२ महाप्रतापीक हुवो ।

चीतोडगढरो धणी कमलसूर राजा । तिणसुं अस्वध्वज राजा जुध कीयो । कमलसूर षेत पड्यो । चीतोडगढ राठोडां लीधी ।

अस्वध्वज राजारो सनक राजा ८३, रो सुपानंद राजा ८४, रो गंभीर राजा ८५, रो संवरसेन राजा ८६, रो नलजोति राजा ८७, रो नलघोष राजा ८८ महाप्रतापीक हुवो ।

धारानगरीरो धणी सीमपाल राजा धरतीरा विरोधथी जुध कीधो । पमार राजा कांम आयो । नलघोष राजारी जैत हुई । धारनगरी राठोडां लीधी ।

राजा नलघोषरो षेमपाल राजा ८९, रो सूरपाल राजा ९०, रो जगदीपक राजा ९१, रो अनंगसेन राजा ९२, रो जलषेम राजा ९३, रो लघु राजा ९४, रो भारथसेन राजा ९५ । जिण सिवलपति पमार राजासुं जुध कीयो । भारथसेन राजा षेत पड्यो । श्रीरांम समयात संवत ११५५ फागण सुदि ११ । कनवज भागी । भारथसेनरो भारनंद राजा ९६, रो देवकमल राजा ९७, रो अतित्रिष राजा ९८, रो नंद राजा ९९, रो करणसेन राजा २००, रो रांमसेन राजा १, रो जयदत्त राजा २, रो शिवदत्त राजा ३, रो मयुरसेन राजा ४ । तस्य –

॥ कीर्तिकाव्यम् ॥

६४. श्रीमद्वैराष्ट्रदेसे तिलकपुरवरे पत्तने भूनरेसो,
द्वात्रिंशद्भूमिपाला मणिमुकुटधरा यस्य सेवामकार्षीत् ।

[1] C लव । [2] C केडायत ।

यन्नास्वाज्ञा नृपाणं मम तन सदा चान्यदेसाधिपानां
सर्वेषां भूपतीर्नां सुरमुगटसमो मयुंरसेनाविधानो ॥ १ ॥†

मयुंरसेन राजा पुत्र भ्रावड राजा ५, रो श्रीकंठ राजा ६, रो धनजय राजा ७, रो नरदेव राजा ८, रो कमनीय राजा ९, रो प्रजापति राजा १०, रो हरषेण[1] राजा ११, रो वारषेण[2] राजा १२, रो त्रंमसेन राजा १३, रो ध्रितराष्टर राजा १४, रो सूरदेव राजा १५ । तस्य –

॥ कीर्तिश्लोक ॥

६५. श्रीराष्ट्रे वंसेत् करीट तुल्या भूपाधिपा कंकर्ण सनाथो ।
राज्ञ परोज्ञ श्रीसूरदेवो भूम्यां भवस्तु सूरसमांनतेजो ॥

*सूरदेव राजारो परतन राजा १६, रो कादंव राजा १७, रो उनमथ राजा १८, रो जनकीर्ति राजा १९, रो जंगलेस्वर राजा २०, रो प्रथीपाल राजा २१, रो गोवर्धन राजा २२, रो माथुर राजा २३, रो हिरणकेस राजा २४, रो जालंधर राजा २५, रो धनजय राजा २६, रो मालवेस राजा २७, रो भीमसेन राजा २८ । तस्य –

॥ कीर्तिश्लोक ॥

६६. उजेन्यां मालवे देसे भीमसेन भवे नृप ।
सुनासीरसमो भोज राष्ट्रवंसे प्रदीपक ॥ १ ॥*

भीमसेन राजारो श्री हंस राजा २९, रो मुकुंददेव राजा ३०, रो कुभ राजा ३१, रो करवीर राजा ३२, रो विदुष राजा ३३, रो पवनंजय राजा ३४, रो चंडप्रद्योतन राजा ३६, रो चंद्रगुप्त राजा ३७, रो विस्वसेन राजा ३८, रो धरमणिरथ राजा ३९, रो सरदैत्य राजा ४०, रो प्रसेनध्वज राजा ४१, रो मांन राजा ४२, रो विस्वभूति राजा ४३, रो सुमंगल राजा ४४, रो कंदर्प्पसेन राजा ४५, रो लोहिताक्ष राजा ४६, रो नील राजा ४७, रो मृगांक राजा ४८, रो कासीनाथ राजा ४९, रो कपिलसेन राजा ५०, रो करण राजा ५१ । तस्य –

---

†–† चिह्नाङ्कित पाठ C में नहीं है । 1 C हरिषेण । 2 C वारिषेण ।
– चिह्नाङ्कित पाठ C प्रति में नहीं है ।

॥ कीर्तिश्लोक ॥

६७. श्रीराष्ट्रवंसान्वये जातो पार्थिवो पार्थिवेस्वर ।
हेमकांत महादांनी कर्णो भूत कर्णसदृस ॥ १

कर्ण राजा रो सोम राजा ५२, रो जव राजा ५३, रो मांन राजा ५४, रो संतांनीक राजा ५५, रो चित्रांगद राजा ५६, रो चित्रवाहु राजा ५७, रो पांडव राजा ५८, रो अर्जन राजा ५६, रो अहिवन राजा ६०, रो परीक्षित राजा ६१, रो जनमैजय राजा ६२, रो संतांनिक राजा ६३, रो सहस्त्रनोक राजा ६४, रो सहस्रावाहु राजा ६५, रो हरीचंद्र राजा ६६, रो वेणीवछ राजा ६७, रो तारीवाह राजा ६८, रो चक्रधारी राजा ६६, रो धानंष राजा ७०, रो सनत-कुमार राजा ७१, रो ककुंद राजा ७२, रो मुकंदमणि राजा ७३ ।

इतरा राजा तो राठोडवंसी द्वापर युग माहे हुवा । वडा साकाधर राजा हुवा ।

॥ इति द्वापर युग संपूर्ण ॥

२२ A) अथ कलिजुग प्रवेस ४३२००० वर्ष प्रमांण । ताड १ प्रमांण काया ऊंची । आयुर्बल ११० वरसरी । त्रीया प्रसूत वार २१ । धरम विस्वा १॥, पाप विस्वा १८, सत विस्वो ०॥, एकवार वावें करमा-धरमी नीपजै । सर्वजन धूरत । षटदरसण लोपी । त्रीया-लंपट । चोर प्रबल । मलेछ राजा । राजा निरबल । पिता पुत्र न मांन्यते । राजा पापी, नीच-संगी । लाषां माहे १ दातार । तुरतदांन कुपात्रे । पात्रे तो कण दांन, कुपात्रे मण दान । षटदरसण दुषी । तर पापे पाप समोसमा । इम अनेक कलजुगरा चरत्र छै । समै समै अनंती हांण । धरती रस सोषंत । दिल माफक बरकत । इसो कलिजुग धूरताधूरत प्रवर्त्तत्ते ।

२२ B) अथ कलियुग प्रवेस वर्षप्रमांण ४ लाष ३२००० हजार [illegible] । अवगतिरूपी धर्मथकी उपजै । ताड १ प्रमाण देहमांन । वीस वरसरी । त्रीया प्रसूत वार २१ । धरम तो दोढ

विस्वो, पाप १८ वा । सत अर्ध विस्वो । एक वार वावै करमा-धरमी निपजै । सर्वजन धूर्त्त, त्रीया-लंपट, चौर-बुधि, मलेछ राजा, पुत्र पितानै न मन्यते, भाईसु हेत नहीं, कूड घणो, साच निरतो, पापी पातिसाही, विप्र वेस्यारक्त, षटदर्सण लोभी, लाषां माहे १ दातार, कोडि माहे १ जोगी । तुरतदांन कुपात्रे । पात्रे तो सेवादानं, कुपात्रे मण दांन, पात्रे कण दांन । जन षटदरसण-लोपी, पाषंडरक्ता, कलियुगरा अनेक चरत्र छै ।

२३ A) अथ कलजुग माहे राठोडवंस राजा । कमोदसेन राजा पुत्र अमरकेत राजा २७१, रो हयवाहन राजा २७२, री विश्वांभर राजा २७३, रो वज्रजंघराजा २७४, रो वैरसीह राजा २७५, रो जसदेव राजा २७६, रो दुरजनसाल राजा २७७, रो भावदेव राजा २७८, रो चाचिगदेव राजा २७९, तिण हुती चाचिगीया राठोड हुआ, तिण रो तुलदेव राजा २८०, रो सांतलदेव राजा २८१, रो महीपाल राजा २८२, रो जसपाल राजा २८३ ।

२३ B) कलियुग माहे राठोडवंसी राजा कुण हुवा तिके कहै छै–मुकंदमणि राजारो अमरकेत राजा ७२, रो सिधार्थ राजा ७३, रो नंदवर्द्धन राजा ७४, रो हयवाहन राजा ७५, रो दधिवाहन राजा ७६, रो जीमुतवाहन राजा ७७, रो विश्रंभ राजा ७८ । तस्य कीर्तिश्लोक–

॥ श्लोक ॥

६८. रविप्रभ रविक्रांता भूम्यं नैरव सुसम ।
वज्रसंघ सुतो जस्य अवन्यंस्या नरधिप ॥ १

विश्रंभ राजा रो वज्रसंघ राजा ७९, रो जसदेव राजा ८०, रो दुर्ज्जनसाल राजा ८१, रो भावदेव राजा ८२, रो चाचिग राजा ८३ । तिणसुं **चाचगीया राठोड़** कहांणा ।

चाचग राजा रो मूलदेव राजा ८४, रो सातलदेव राजा ८५, रो सांमलदेव राजा ८६, रो रिमपाल राजा ८७, रो जसपाल राजा ८८ ।

जसपाल राजा उपरि वीर विक्रमादित्यरी फौज आई तरै धरती रै वास्तै उजेण गया। धरती पमार विक्रमादीत भोगवै, तिणरो कवित्त–

॥ कवित्त ॥

६९. तीस लष्य सांमंत सुभट इक कोडि धनुर्द्धर,
मंडलीक चोवींस नित सेवै वार निरंतर।
पंच लष्य गजराज सत्तरि लष्य घोटक छजै,
छपन सहस नीसांण नाद घरि अंबर गजै।
उजेण नयर दीसै अधिक पुरसां अधिक पमार हुअ।
पर-दुष-हरण वछल-करण श्रीविक्रम जयवंत तुअ॥ १

इसो विक्रमादीत राजा हुवो, तिणरो संबत चालै छै।

जसपाल राजा रो वीरमदेव राजा ८९, रो प्रागदेव राजा ९०, रो अणहल राजा ९१, रो महीपराव राजा ९२, रो सदत्त राजा ९३, रो मनमथराय राजा ९४, रो प्रहास राजा ९५, रो मदभ्रंम राजा ९६, रो महाभ्रंम राजा ९७, रो धुधमार राजा ९८।

२४) धुधमार राजा महाप्रतापीक हुआ, तिणथी राठोडांरी तेरै साषा हुई।

प्रथम पुत्र अभैराज, तिण अभैपुर वसायो। तिणथी **अभैपुरा** साष **राठोड** कहांणा १।

बीजो पुत्र जैवंत, तिण जैवंतपुर वसायो। तिणथी **जयवंता** साष **राठोड** कहांणा २।

तीजो पुत्र वागुल, तिण बगलांणो सहर वसायो। तिणथी **वागु-लीया** साष **राठोड** कहांणा ३।

चोथो पुत्र अहरराय, तिण आहोरगढ वसायो। तिणथी **अहरराव** साष **राठोड** कहांणा ४।

पांचमो पुत्र करह, तिण करहेडो वसायो। तिणथी **करहा** साष **राठोड** कहांणा ५।

छठो पुत्र जलषेड, तिण जलषेडगढ वसायो। तिणथी **जलषेडीया** साष **राठोड** कहांणा ६।

सातमो पुत्र कमधज, तिणथी **कमधजीया** साष **राठोड** कहांणा। कमधज राव तेरै साषारो राव कहांणो ७।

आठमो पुत्र चंदेल, तिण चंदी-चंद्रावर सहर वसायो। तिणथी **चंदेला** साष राठोड कहांणा ८।

नवमो पुत्र अजबराव, तिण पूरबमैं अजैपुर वसायो। तिणथी अजबेडीया साष **राठोड** कहांणा ९।

दसमो पुत्र सूरदेव, तिण सोरोपुर वसायो। तिणथी **सूरा** साष **राठोड** कहांणा १०।

इग्यारमो पुत्र धीर, तिण धीरपुर नगर वसायो। तिणथी **धीरा** साष **राठोड** कहांणा ११।

बारमो पुत्र कपिल, तिण कंपिलपुर वसायो। तिणथी **कपालीया** साष **राठोड** कहांणा १२।

तेरमो पुत्र षेमराज, तिण षैरावाद वसायो। तिणथी **षीरोदा** साष **राठोड** कहीजैं १३।

ए तेरै साष धुधमार राजाथी हुई। सकल राजा हुआ। पंषणी माता कुलदेवता, शुक्राचार्य गुरू हुवा। गोतम गोत्रीया राठोड कहीजै। धुधमार राजा पूरबमें कांप धणारो वसायो।

अथ तेरा साष रोठोडो, तिणरो कवित्त-

॥ कवित्त ॥

७०. अभैपुरा जयवंत सूर वागुला नरेसुर,
अहरराव राठोड क्रीत करहा दांनेसुर।
जलषेडीया कमधज सवल चदेल दहु दल,
वरीया वैर सुगाल उतर गुरु सूरर निरंतर।
धीर गुरु धीर कपालीया षीरोदा जयवंत घर।
धुधमार अंम उचरें तेरै साष राठोड हर ॥१॥

॥ वार्ता ॥

२५) धुवमार राजारै पाट कमधज राजा हुवो, जिण फेर पाछी कनवज वसाई। संवत ६०१५(६१५)छसै नै पनडोतरै छतीस देसनो धणी राजा कमधज हुम्रो। रांणोरांणा समक्षो श्रीगुरू भावदेवनै हाथी दीनो नै ७ गांव दीया। सांसण भावदेवरा कनवज देस माहे छै। छतीस सिवजीरा प्रसाद कराया। छतीस गढ अनड पहाडां उपरि कराया। छतोस पैडीबंध वावडी कराई। छतीस सिषरबंध ठाकुर-द्वारा कराया। छतीस पाजबंध तलाव बंधाया। छतीस हजार गावांरो धणी राजा कमधज हुवो।

कमधज राजारै पाट केतराजा ६८, रो वछराजा ६६, तिको वेणीवछ राज कहांणो। तिण राजा वासिगरी पुत्री परणी।

तिणरो पुत्र सुकलवछ राजा हुवो ३००। सुकलवछरो सदयवछ राजा हुम्रो। तिणरै सावलिगा राणी हुई। तिणरो पुत्र महीपाल राजा हुवो ३०१। महीपालरो विजैचंद राजा ३०२, रो राजा जैचंद राजा हुवो ३०३।

२६) जैचंद राजा दलां पांगलो कहांणो। तिणरो कटक चालतां आगले दलें पांणी, पाछले दलें कादो, कादारी जायगां षेह उडै। तिण वासतै दले पांगलो कहांणो। वडो सेनाधिपति राजा हुवो तिणरा कवित्त—

॥ कवित्त ॥

७१. छतीस सहस मंडलीक कोडि इक सुभट वषांणु,
पायक पनरै लष्य तीस लष्य तेजी जांणु।
चवदै सहस गयंद सवा लष्य नीसांण सुणिजै,
गंगा जिमना बेह जास सेना जल छीजै।
कासी देस वांणारसी जैचंद नरपति पांगुलो,
कुमरेस राय प्रीतै करी जीव जनम करिवो भलो॥ १

७२. तीस लष्य तुहषार सुजड पषर सायर दल
पनर लष्य मयमंत दंत गाजंत महाबल।

पंच अरव पायक सफर फारक धनुषधर,
लेई सवल वरवीर लष हे अंत सूहंवर।
छतीस लाष नरनाय वै तास सेव एता फरै,
जीवंत महावल राजवी कवण ता समवडि करै॥ २[1]

७३. सतर सहस गुजरात वहिन कांचली समपे,
कीयै सांमंत पसाव घरा सगली जस थपे।
वांणु लष मालवो देवकु पूज चढाए,
सांभर लष सवाय निवल राजान वढाए।
छतीस लाष कनवजपति चंद भणै इम विवह पर,
पूजै न को महीमंडली धर्म कर्म राठोड हर॥ ३[2]

॥ वार्त्ता ॥

२७) संवत ११५१ चैतमास, आठम तिथ, राजा जैचंदरी पुत्री संयोगिता परणी। चहुवांण प्रथवीराजसु लड़ाई हुई। तठै प्रथीराज रा सांमंत काम आया। तठै राजा जैचंदरो सगो भाई वीरमदे महिलां मै पौढयो थो। तठै वीरारस वाजित्र सांभलिनै जाग्यो। तरै सात षवास उभा सेवा करता था, तिणांनै पूछीयो, 'वीरारस कठै वाजै छै?" तरै षवासां अरज कीधी, 'महाराज! महाराजरी पुत्री संयोगिता प्रथीराज चहुवांण लेनै जाय छै, सो लडाई हुवै छै।' तरै वीरमदेनै रीस आई, 'हरांमषोरां, म्हांनै क्युं न जगाया?' तरै सात षवास मारिया, पटिकनै मार्या। जुध करणनै रीस मांहि चढयो। तिण समीयारो कवित्त–

---

[1] यह पद्य A प्रति में नहीं है।

[2] यह पद्य A प्रति में इस प्रकार है—

७२. सित्तरि सहस गुजरात वहिन कांचल समपी,
सांभर लष सवाइ निवल करि सांसण थपी।
पंचवारो सो पांच दीध सामत पसाए,
वांणु लष मालवो देवकु पूजि चढाए।
छतीस लक्ष कनवजपति, चंद भणै इह विवह परि,
पूजै न को महिमंडली, धर्म कर्म राठोड हर॥ २

॥ कवित्त ॥

७४. बंधव एक जैचंद नांम वीरम रावत्तह
अतुल तेज बल अतुल पिता विजैपाल सुपुत्तह ।
अप्पवपन वदूण सुकर काया उचपण
सत बकरा इक महिष भषै अंन बहु अतिभषण ।
टोडर रस चरण पलसठिको भार तिनको मंड भणि ।
जुग सहस तिन भोथांण भरि भजै इक इक लष रिण ॥ १

॥ वार्ता ॥

वीरमदे प्रथीराजनै जाय पुहतो तठै रिण संग्रांम हुवो । प्रथीराज रा सोरंभरै घाट सात सांमंत काम आया । धरमडाव प्रथीराज लेनै छूटो । तरै बीरमदे पाछो वल्यो । पछै कितरेक दिने राजा जैचंद गोरी पातिसाहसु लडिनै कांम आयौ । तिण समीयारा कवित्त

॥ कवित्त ॥

७५. कहन इंद कह चंद कहन ब्रह्मा सावत्री
गणि गंधर्व अपछरा वात कहि नारद निरती ।
कहन मेर महमहण मनुष मनुषैको मिलीयो
कह उडीयो आकास जलण को तेजे जलीयो ।
संग्राम मिल्या सुर नर सवै अनल पंष दीठो अरुण ।
जैचंद राय किण परि मूओ कहै निसंक सचो धरणि ॥ १

७६. हैपति हैवर मिल्या, मिल्या हैवर गुढि गैवर
साहिबदो सुरतांण भिडे भांजै जस नांतर ।
कटक कितक कमधज कटक केतो जुध राजा
भासै ईस संग्रह्यो तूल गयो तन तिल ताजा ।
पतिसाह सरस नल पंषीयै इसो न को माझी मरण,
उपाडि अंग अपछर गई पडत न लाधो राव रिण ॥ २

७७. सीस पचडो रिण भवन अंग गिरझण उचायो,
गिरझण अपछर लैण राव चाहत न पायो ।

गिरझण कर विछुट्यो पड्यो गंगाजल भीतर .
गंग लीयो उछंग लील लोलै सिवसंकर ।
गंगास पास सो त्रीयनयण हरि उछाहै अपको ,
गलि रुंडमाल ल सठ्यो सीस ईस जैचंदको ॥ ३

॥ वार्त्ता ॥

२८) जैचंद राजा पुत्र जसचंद राजा ४, रो सिवचंद राजा ५, रो चंद्रपाल राजा ६, रो लघु सहस्रार्जुन राजा ७, रो सितभ्रम राजा ८, रो परिहंस राजा ६, रो मांमट राजा १०, रो देवराय राजा ११, रो दुलहराय राजा १२, रो बलपसाव राजा १३, रो सलूणराय राजा १४,रो जोगडराय राजा १५, रो सेतरांम राजा १६, सेतरांमजीरा सीहोजी ।

२६ A) १३ साष राठोड़ांरी तिणांरै पंषणी माता कुलदेवता छै । सीहोजो मारवाडिमैं आया तिणरो अधिकार कहै छै । अथ कीर्त्ति कवित्त–

॥ कवित्त ॥

७८. आदि भूप रूप अनूप जगत सहु जुगतै मंडै ,
प्रथवी कीध प्रगट दुषमये दालद षडै ।
रुघवंसी गोपाल गढ महोर पहली ,
विक्रमसेन कनोज वंस वधीयो जय वली ।
पषणी 'देव गुरु'शुक्र,जसमारिध साषा मंडणो ,
७६. कमधज कोडि केकांण दियडो वीर षल षंडणो ॥१॥

॥ दूहो सोरठो ॥

वंस पैलीसै वाच, दीधी देवे दाणवे ।
सो जांणों ज्यो साच, कीरति राठोडां कही ॥१॥
८०. करण मरंतै हस कह्यो आगलि सुर असुरांह ।
तुरके बांण भलावीया कीरति राठोडांह ॥२॥
८१. राठोडांरी कुलत्रीया, सीला ग्रभ न धरंत ।
ज्यांरा प्रिउ न भंजणा से भजणा न जणंत ॥३॥